आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 4 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अप्रेल, 2010 ★ चैत्र, 2067

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी
अध्यात्म-चेतना वर्ष

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

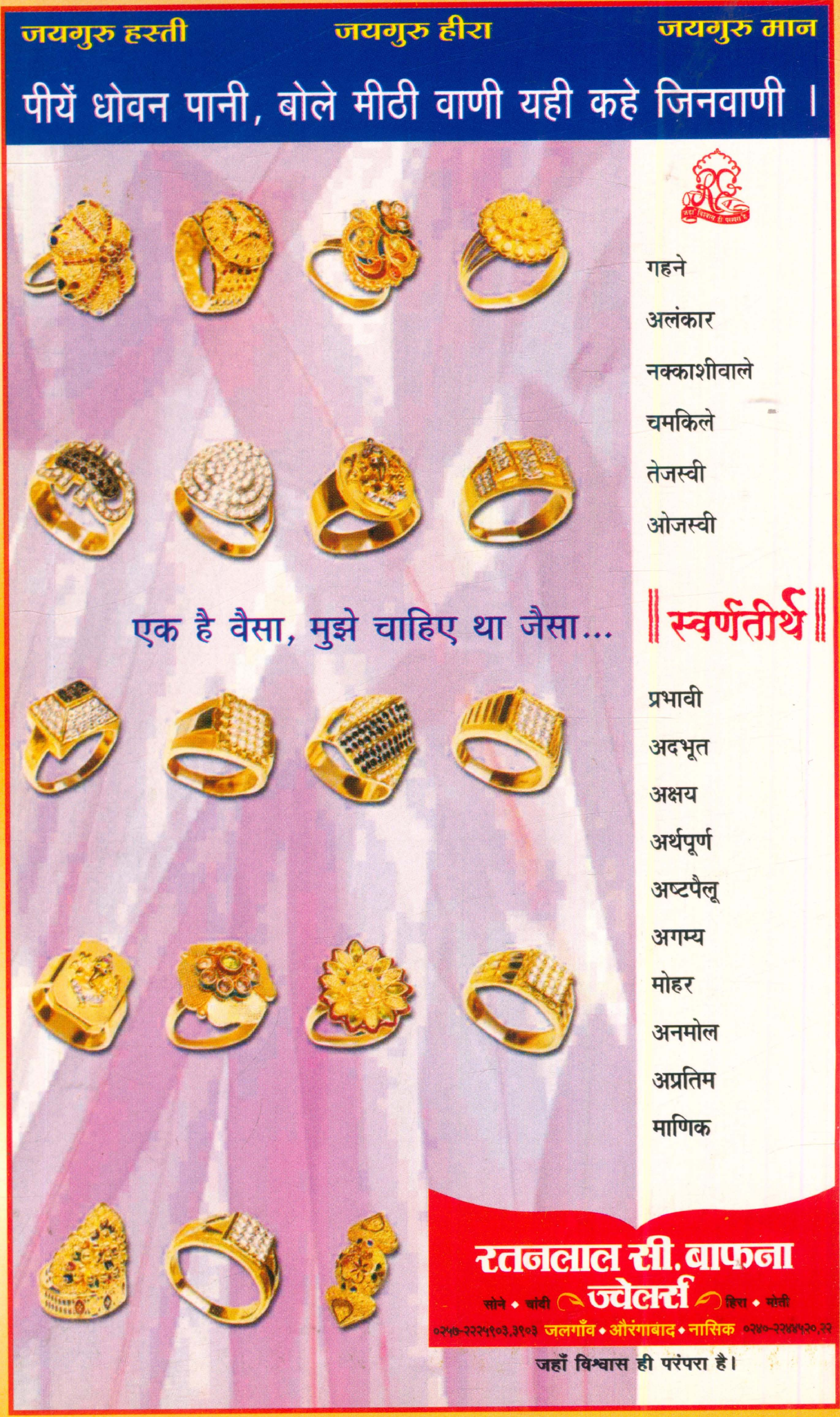
जयगुरु हस्ती
जयगुरु हीरा
जयगुरु मान
पीयें धोवन पानी, बोले मीठी वाणी यही कहे जिनवाणी ।
गहने
अलंकार
नक्काशीवाले
चमकिले
तेजस्वी
ओजस्वी
एक है वैसा, मुझे चाहिए था जैसा...
॥स्वर्णतीर्थ॥
प्रभावी
अदभूत
अक्षय
अर्थपूर्ण
अष्टपैलू
अगम्य
मोहर
अनमोल
अप्रतिम
माणिक
रतनलाल सी. बाफना
ज्वेलर्स
सोने • चांदी
हिरा • मोती
०२५७-२२२५१०३,३१०३ जलगाँव • औरंगाबाद • नासिक ०२४०-२२४४५२०,२२
जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

जिनवाणी *हिन्दी-मासिक*

卐 **संरक्षक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,

जयपुर-302003 (राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **सम्पादक**

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड

जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**

नौरतन मेहता, जोधपुर

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2010-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिंसे बाले मुसावाई,
माइल्ले पिसुणे सढे।
भुञ्जमाणे सुरं मंसं,
सेयमेयं त्ति मन्नई।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.9

है हिंसक बाल मृषावादी,
मायावी पिशु व शठ मानो।
मद्य-मांस सेवन कर,
इसको श्रेय मानता वह जानो।।

अप्रेल, 2010

वीर निर्वाण संवत्, 2536

चैत्र, 2067

वर्ष 67 **अंक** 4

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 5000 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 11000/-
संरक्षक सदस्यता : 5000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail: jinvani@yahoo.co.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	युवा पीढ़ी की धर्म विमुखता -डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी -संकलित	9
	विचार-वारिधि -आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	सन्त-जीवन : तनावमुक्ति का जीवन -तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	11
	सेना को प्रेम का संदेश -आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	20
	गुरु चरणों में अन्तर्मन की अभिव्यक्ति -मधुर व्याख्यानी जी गौतम मुनि जी म.सा.	24
	विचार-आचार से पावन संघ -साध्वीप्रमुखा मैनासुन्दरी जी म.सा.	28
अंग्रेजी-स्तम्भ-	The Historical Development of Jaina-Yoga-System -*Prof. Sagarmal Jain*	30
प्रासङ्गिक-	आधुनिक विश्व के परिदृश्य में जैन धर्म-दर्शन (2) -डॉ. धर्मचन्द जैन	38
	विहार में सुरक्षा -श्री अभय जैन	89
हस्ती-शताब्दी-	अमरत्व का वह उपासक (4) -श्री सम्पतराज चौधरी	47
	श्री हस्तिमल्ल शतक (4) -श्री सुमन्त भद्र	52
संस्मरण-	श्रद्धापुंज के संस्मरणों का वातायन -श्री के.एस. गलुण्डिया	55
तत्त्व ज्ञान-	दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (7) -संकलित	57
	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (57) -श्री धर्मचन्द जैन	63
युवा-स्तम्भ-	अहिंसामय जीवन - श्री चतरसिंह मेहता	77
उपन्यास-	सुबह की धूप (14) -श्री गणेशमुनि शास्त्री	82
नारी-स्तम्भ-	धर्म की धुरी है नारी -डॉ. दिलीप धींग	85
बाल-स्तम्भ -	मयूरी के अण्डे -श्री दीपचन्द संचेती	90
युवक-परिषद् -	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (25)	93
श्राविका-मण्डल -	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (4)	96
कविता/गीत-	गुरुवर आपके दर्शन से -श्री अजित एच. जैन रांका	27
	भ्रूण हत्या -श्री कस्तूरचन्द सी. बाफणा	62
	आत्मार्थी की भावना -श्री मनमोहनचन्द बाफना	76
	सत्य -श्रीमती माया कुम्भट	98
विचार-	**Luck & Opportunity** -*Ms. Minakshi Jain*	23
संवाद -	नया प्रश्न -श्री एम.सी. नवलखा	81
साहित्य समीक्षा -	नूतन-साहित्य -डॉ. धर्मचन्द जैन	99
संघ-कार्यक्रम -	अध्यात्म चेतना जागृति सप्ताह -श्री ज्ञानेन्द्र बाफना	100
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	102
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	128

सम्पादकीय

युवापीढ़ी की धर्म-विमुखता

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

युवापीढ़ी पर प्रायः यह आरोप लगाया जाता है कि वह धर्म से विमुख हो रही है, किन्तु इस आरोप में कितनी सत्यता है इस पर विचार आवश्यक है। इसके साथ ही यह भी समझना आवश्यक है कि हम धर्म का स्वरूप क्या मानते हैं एवं युवकों को किस प्रकार के धर्म से जोड़ना चाहते हैं तथा धर्म के नाम पर उनसे हम क्या अपेक्षा करते हैं।

यह हमें स्वीकार करना होगा कि हमारी युवापीढ़ी हमसे अधिक बुद्धिमान एवं तार्किक हैं। वह परम्परा से धर्म को स्वीकार करने की अपेक्षा उसे अपने अनुभव और तर्क की कसौटी पर कसना अधिक उपयुक्त मानती है। उसे यदि धर्माचरण से प्रत्यक्ष लाभ की अनुभूति होती है तो इसमें संदेह नहीं कि वह धर्म से न जुड़े। पढ़े-लिखे युवा को मात्र आदेश देकर धार्मिक प्रवृत्तियों से नहीं जोड़ा जा सकता, इसके लिए उसके मन को तैयार करने की आवश्यकता है। उसकी मनोभूमि में धर्म के बीज तभी अंकुरित हो सकते हैं जब उसे धर्माचरण के साथ शांति, मैत्री और सौहार्द का अनुभव हो।

आज संसार में भौतिक सुख-सुविधाओं एवं साधनों का अत्यन्त तीव्र गति से विकास हो रहा है। युवापीढ़ी को यह बलात् आकर्षित कर रहा है। उसके चिन्तन और उसकी इन्द्रियों को इस विकास ने अपने में बाँध लिया है। तात्कालिक स्तर पर एक युवा को भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति एवं उसके लिए अर्जन जीवन का प्रमुख उद्देश्य प्रतीत होता है। किन्तु जब व्यक्ति इन सुख-सुविधाओं का निरन्तर भोग करने के पश्चात् भी शांति का अनुभव नहीं कर पाता, परस्पर मनमुटाव, ईर्ष्या-द्वेष, तनाव-खिंचाव की स्थितियाँ बनी रहती हैं, तब वह धर्म के अभिमुख होने का मन बनाता है। मनुष्य को सुख के साथ शान्ति की भी आवश्यकता होती है। शान्ति का सम्बन्ध बाह्य साधनों की प्राप्ति से नहीं, अपितु अन्तर्मन के दुर्भावों के शमन से है। जो धर्म के साथ जुड़कर सत्संग के माध्यम से, प्रवचनों के माध्यम से अथवा स्वाध्याय के माध्यम से अपने जीवन में एक नई दिशा का अनुभव करता है वह फिर एकतरफा जीवन नहीं जीता। वह जीवन का प्रबंधन कर शान्ति के लिए भी प्रयत्नशील होता है।

उत्थान का मार्ग सदैव कठिन होता है एवं पतन का मार्ग अत्यन्त सरल होता है। कुसंगति में पड़कर अपनी आदतें बिगाड़ने का कार्य अत्यन्त सरल होता है जबकि सत्संगति के माध्यम से अथवा सद्विचारों के माध्यम से अपने जीवन का नवनिर्माण करना अत्यन्त कठिन होता है। जीवन का नव-निर्माण अथवा सच्चा उत्थान बुराई के त्याग के संकल्प, विवेक के प्रकाश और पुरुषार्थ के बल पर सम्भव होता है। धर्म इसमें सहायक बनता है।

जब कोई युवा भौतिकता के आकर्षण में बंधकर जीवन की सम्पूर्ण शक्ति का व्यय सुख-सुविधाओं की उपलब्धि एवं धन के अर्जन में करता है तो उसके अपने तर्क होते हैं। तर्कों की यह विशेषता है कि वे अच्छाई एवं बुराई दोनों के समर्थन में उत्पन्न हो जाते हैं। बुराई की ओर अभिमुख युवा के अपने तर्क होते हैं तथा अच्छाई की ओर सन्नद्ध युवा के अपने तर्क होते हैं। तर्क के साथ यदि विवेक का प्रकाश एवं गुरुजनों का विश्लेषण जुड़ जाए तो फिर तर्क बुराई से अच्छाई की ओर ही गति करता है।

युवा धर्म के अभिमुख नहीं है, यह कथन एकपक्षीय है। अनेक युवा आज भी धर्म के सम्मुख हैं, तथापि ऐसे युवकों की संख्या अधिक है जो धर्म के अभिमुख नहीं हैं। इसके अनेक कारण हैं। एक तो युवा पीढ़ी का यह तर्क कि जीवन मिला है तो उसे आराम से जीओ, व्यर्थ में दुःखी रहने से क्या लाभ ? अधिक से अधिक धन कमाओ और खर्च करो, अधिक से अधिक सुविधाएँ जुटाओ और ऐश करो। ऐसी धारणा वाले युवक धर्म के स्वाद से रहित होते हैं अतः उन्हें धर्माचरण के लाभ का ज्ञान नहीं होता। उनके तर्कों का उत्तर देने वालों को भी प्रायः फुर्सत नहीं होती अथवा वे स्वयं इनका उत्तर प्राप्त करने के लिए उत्सुक नहीं होते और इस तरह अपनी धारणा को प्रगाढ़ बनाकर धर्म से विमुख ही बने रहते हैं। उन्हें अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए पैसा सर्वोत्कृष्ट साधन प्रतीत होता है, इसलिए वे अधिकांश समय एवं शक्ति इसके अर्जन में ही व्यय करते हैं। दूसरी बात यह भी है कि युवापीढ़ी को धर्म की बाह्य प्रवृत्तियों में कोई आकर्षण दृष्टिगोचर नहीं होता। यद्यपि युवा को ऐन्द्रियक सुखों के साथ शान्ति की भी आवश्यकता होती है, किन्तु अधिकांश युवा धर्मस्थलों में आकर भी शान्ति का अनुभव नहीं कर पाते। तीसरी बात यह है कि उसे बुद्धि के स्तर पर यह बात समझ में आ जाती है कि धन का अर्जन किए बिना अथवा आजीविका के बिना जीवन नहीं चल सकता, किन्तु धार्मिक प्रवृत्तियों का आचरण किए बिना उसका जीवन चल सकता है। धर्म उसे अनिवार्य अथवा अत्यावश्यक प्रतीत नहीं होता। चौथी बात यह है कि जिन धार्मिकों के

सम्पर्क में वह आता है वे अपने सद्गुणों के माध्यम से उसे प्रभावित नहीं कर पाते हैं। उन धार्मिकजनों में बेईमानी, अप्रामाणिकता एवं क्रोधादि दोषों को देखकर उसे ग्लानि का अनुभव होता है। पाँचवीं बात यह है कि जब कोई युवा साधु-संतों के दर्शनार्थ आता है तो उसे अनपेक्षित टोका-टोकी अथवा प्रश्नों का सामना करना पड़ता है। साधु-संत युवा-बन्धुओं के साथ मनोवैज्ञानिक ढंग से बात नहीं करते, अपितु उसे टोकते हैं- हाथ में सेल की घड़ी तो नहीं है?, जेब में मोबाइल तो नहीं है? वह मुश्किल से धर्मसभा में आता है और जब टोका-टाकी देखता है तो दुबारा नहीं आने का संकल्प मन में ले लेता है। साधु-संतों को अपनी मर्यादाओं का पालन करना आवश्यक होता है, उसके लिए उन्हें सावधान भी रहना चाहिए, तथापि युवकों का मनोविज्ञान समझकर उनके साथ प्रेम से व्यवहार करना चाहिए। आचार्य हस्ती का मन्तव्य था- ''मनुष्य की वाणी में ऐसा बल है कि वह तलवार से भी अधिक गहरा प्रहार कर सकती है और चाहे तो पापी से पापी मनुष्य का हृदय भी बदल सकती है।'' कुछ साधु-साध्वी युवक-युवतियों के विचारों, उनकी योग्यता, रुचि एवं प्रश्नों का अनुमान किए बिना उनसे सीधे ही नियमों की बात करते हैं। कभी-कभी उनकी बिना इच्छा के नियम करा दिया जाता है। इससे धर्म के प्रति हरेक की रुचि उत्पन्न नहीं होती। पहले रुचि उत्पन्न हो और साथ में फिर नियमपूर्वक जीवन में शान्ति, सौहार्द, मैत्री, प्रेम आदि की प्राप्ति के लिए सामायिक-स्वाध्याय एवं तप-त्याग को अपनाने की प्रेरणा होनी चाहिए। धर्म के प्रति रुचि नहीं होने का एक कारण परिवार में माता-पिता की प्रेरणा नहीं होना भी है। माता-पिता धनार्जन को तो महत्त्व देते हैं, बाह्य शिक्षा की महत्ता भी ज्ञापित करते रहते हैं, उसके लिए पैसा भी खर्च करते हैं, किन्तु संस्कारों के लिए न तो प्रेरणा करते हैं न कोई व्यवस्था करते हैं और न ही संत-सतियों के यहाँ उनको साथ ले जाते हैं। माता-पिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। सम्भवतया वे स्वयं भी धर्म को जीवन में उतना स्थान नहीं देते, जितना धन को देते हैं।

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. युवाओं का मनोविज्ञान समझते थे तथा उसके अनुरूप उन्हें धर्म से जोड़ने का प्रयत्न करते थे। उनकी प्रेरणा कभी खाली नहीं जाती थी। वे किस क्षण उनके मन को कैसे बदल देते, यह युवा को भी ज्ञात नहीं होता था। युवकों के मनोविज्ञान के सम्बन्ध में उनका कथन है- ''अधिकांश नवयुवक अपने आपको विशिष्ट स्थिति का अथवा बड़े घर का सदस्य सिद्ध करने की भावना से भोगोपभोग, प्रसाधन, फैशन आदि की सामग्री पर फिजूलखर्ची करते हैं। उनकी देखादेखी से अथवा इस भावना से कहीं कोई उन्हें साधारण घर का, गरीब घर का नहीं समझ लें, साधारण घरों के युवक भी फैशन पर

अपनी हैसियत से अधिक व्यय करने लगते हैं, जो किसी भी प्रकार ठीक नहीं है।" कुछ युवा कहते हैं कि हमारा मन स्थिर नहीं रहता, इसलिए हम सामायिक नहीं करते। इस सम्बन्ध में आचार्य हस्ती का चिन्तन था- "कोई व्यक्ति ऐसा सोचता है कि मन स्थिर नहीं रहता अतएव माला फेरना छोड़ देना चाहिए तो यह सही दिशा नहीं है। मन स्थिर नहीं रहता तो स्थिर रखने का प्रयत्न करना चाहिए न कि माला को खूंटी पर टांग देना चाहिए।" आचार्य श्री का चिन्तन था कि मन को शनैः शनैः वश में करने का प्रयत्न करना चाहिए तथा काया और वचन जो सामायिक में वश में रहते हैं उन्हें वश में रखते हुए मन को काबू में करने का प्रयत्न करना चाहिए। आचार्य श्री फरमाते थे- "जब तक आप बाहर के वैभव को सारवान और महत्त्व की चीज समझते रहेंगे, आपका मन उसकी ओर आकर्षित होता रहेगा एवं चंचलता भी बनी रहेगी। इसके विपरीत जब साधक संसारी वैभव को निःस्सार समझ लेता है और भगवान् के चरणों में ही महत्ता का अनुभव करता है तब उसके मन की चंचलता दूर हो जाती है, उसकी चित्तवृत्ति स्थिर हो जाती है।" व्यक्ति को दिल और दिमाग से शुद्ध रहने का प्रयत्न करना चाहिए, जो दिल और दिमाग से शुद्ध है उसके जीवन में नैतिकता एवं प्रामाणिकता का स्वतः सन्निवेश हो जाता है।

आचार्य श्री स्वीकार करते थे कि समाज का निर्माण तरुणों एवं किशोरों पर निर्भर है। वे समाज का निर्माण करने में अधिक सक्षम हैं तथा वृद्धों की बजाय अधिक दायित्व नौजवानों का है, क्योंकि वृद्धों की संख्या नौजवानों की अपेक्षा चौथाई भी नहीं है। उन्होंने युवकों को प्रेरणा करते हुए कहा था- "युवक संघ की सामूहिक आवाज होनी चाहिए कि हम धर्म-ध्वज को कभी भी नीचा नहीं होने देंगे तथा नित्य स्वाध्याय करके ज्ञान की ज्योति जगाएंगे।"

जिस यौवन पर हम इठलाते हैं वह भी स्थिर नहीं है। आगम के अनुसार- 'वयो अच्चेति जोव्वणं च' वय बीत रही है और यौवन भी बीत रहा है। इस सच्चाई को सामने रखेंगे तो युवा बन्धु बेहोशी एवं भावुकता का त्याग कर धर्म को धारण किए बिना नहीं रह सकेंगे। जिस सुख, शान्ति एवं आनन्द का अनुभव धन से नहीं होता उसका अनुभव धर्म के सदाचरण से होता है। भगवान् महावीर, गौतम स्वामी, श्रेणिक के पौत्र, गजसुकुमाल सब युवावय में धर्मवीर बने थे। आज का युवा भी धर्म से विमुख नहीं है, मात्र उसे अनुकूल सत्संग की आवश्यकता है। जीवन को सही ढंग से जीने के लिए उसे धर्म के सच्चे स्वरूप से परिचित कराने की आवश्यकता है, जिसका सम्बन्ध भीतर के विचारों की शुद्धि एवं तदनुरूप आचरण से है। बाह्य धर्मक्रियाएँ उसमें सहायक बनती हैं। युवकों की शक्ति एवं उत्साह का धर्म के क्षेत्र में सदुपयोग होगा तो वे स्वतः धर्म के अभिमुख चले आयेंगे। ✸

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

जहा अंतो तहा बाहिं, जहा बाहिं तहा अंतो।
अंतो अंतो पूतिदेहंतराणि पासति पुढो वि सवंताइं। पंडिते पडिलेहाए।
से मतिमं परिण्णाय मा य हु लालं पच्चासी। मा तेसु तिरिच्छमप्पाणमावातए।
कासंकसे खलु अयं पुरिसे, बहुमायी, कडेण मूढे,
पुणो तं करेति लोभं, वेरं वडेढति अप्पणो।
जमिणं परिकहिज्जइ इमस्स चेव पडिबूहणताए।
अमरायइ महासड्ढी। अट्टमेतं तु पेहाए। अपरिण्णाए कंदति।

अर्थः-

(यह देह) जैसा भीतर है, वैसा बाहर है, जैसा बाहर है वैसा भीतर है। इस शरीर के भीतर अशुद्धि भरी हुई है, साधक इसे देखे। देह से झरते हुए अनेक अशुचि-स्रोतों को भी देखे। इस प्रकार पंडित शरीर की अशुचित्ता (तथा काम-विपाक) को भली-भाँति देखे।

वह मतिमान् साधक (उक्त विषय को) जानकर तथा त्याग कर लार को न चाटे अर्थात् वमन किये हुए भोगों का पुनः सेवन न करे। अपने को तिर्यक्मार्ग में- (काम-भोग के बीच में अथवा ज्ञान-दर्शन-चारित्र से विपरीत मार्ग में) ने फँसाए।

(काम-भोग में आसक्त) यह पुरुष सोचता है- मैंने यह कार्य किया, यह कार्य करूँगा (इस प्रकार की आकुलता के कारण) वह दूसरों को ठगता है, माया-कपट रचता है, और फिर अपने रचे मायाजाल में स्वयं फँस कर मूढ बन जाता है।

वह मूढभाव से ग्रस्त फिर लोभ करता है (काम-भोग प्राप्त करने को ललचाता है) और (माया एवं लोभयुक्त आचरण के द्वारा) प्राणियों के साथ अपना वैर बढ़ाता है।

जो मैं यह कहता हूँ (कि वह कामी पुरुष माया तथा लोभ का आचरण कर अपना वैर बढ़ाता है) वह इस शरीर को पुष्ट बनाने के लिए ही ऐसा करता है।

वह काम-भोग में महती श्रद्धा (आसक्ति) रखता हुआ अपने को अमर की भाँति समझता है। तू देख, वह आर्त-पीड़ित तथा दुःखी है। परिग्रह का त्याग नहीं करने वाला क्रन्दन करता है (रोता है)।

-आचारांग सूत्र, द्वितीय अध्ययन, पंचम उद्देशक, सूत्र 92-93

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- मैं समाज के भीतर की कमजोरियों को, बुराइयों को (अखाद्य-भक्षण, अपेय-पान, अगम्य-गमन आदि दुष्प्रवृत्तियों के द्वारा, जो विकार समाज में प्रविष्ट हुए हैं उनको) नंगे रूप में बाहर प्रस्तुत करना, समाज की शक्ति में, समाज के मानस में दुर्बलता लाने का कारण समझता हूँ। इसके विपरीत मैं यह सोचता हूँ कि इन दुर्बलताओं को बाहर करने के बजाय उनके उपचार प्रस्तुत किए जायें, जिससे कि समाज में ऐसे विकार प्रविष्ट ही न हों तथा जो विकार प्रविष्ट हो गये हैं वे बढ़े नहीं और पुराने विकारों को, पुरानी बुराइयों को जो समाज में व्याप्त हैं, उन्हें धीरे-धीरे प्रभावी और कारगर ढंग से निकाला जाए।
- आपको तोड़-फोड़ की ओर नहीं, निर्माण की ओर बढ़ना है। हमारे समाज का, एक आदर्श समाज के रूप में निर्माण कैसे हो, इस ओर विशेष ध्यान देकर आपको बड़ी निष्ठा, तत्परता और लगन के साथ अनवरत अथक परिश्रम करना है।
- किसी को बड़ा काम मिल गया तो समझता है कि छोटा काम कैसे किया जाए। आस-पास की जमीन पर कचरा पड़ा है, और उसे यदि ओघे से पूंजता है तो लोग समझेंगे छोटा-मोटा महाराज है। यहाँ पर जाजम पर बैठने से पूर्व यदि आपसे कहा जाए कि झाड़ू लगाने वाला नहीं आया है, इस हॉल को साफ करना है, तो आपमें से कितने भाई इसके लिए तैयार होंगे?
- कोई लखपति-करोड़पति सेठ आ गया तो आप उसकी इज्जत करते हैं। यह आपने पैसे की इज्जत की। इसी तरह कोई शास्त्रों का ज्ञाता या विद्वान् आवे और आप उसका हाथ थामकर आगे करते हैं तो यह ज्ञान का सम्मान होगा। इसी प्रकार कोई बारह व्रतधारी श्रावक आये और आप उसका आदर करेंगे तो वह व्रत का आदर होगा।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

सन्त-जीवन : तनावमुक्ति का जीवन

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

3 मार्च, 2010 को आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ठाणा 6 से बी.एस.एफ. के नियन्त्रक अधिकारी (Control Officer) श्री चुन्नीलाल जी बेलवा की साग्रह विनति एवं युवाबन्धु श्री कैलाश जी कोटड़िया की प्रार्थना से सीमा सुरक्षा बल (B.S.F.) की 81 वीं बटालियन के केम्पस में पधारे। 4 मार्च को तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने जैन सन्तों की जीवनचर्या, तनावमुक्ति और सुखी जीवन के सम्बन्ध में जिज्ञासा का शमन करते हुए जो प्रवचन फरमाया, उसे श्री जगदीश जी जैन ने लिपिबद्ध कर प्रेषित किया है। मुनि श्री के प्रवचन के पश्चात् आचार्यप्रवर का उद्‌बोधन एवं प्रश्नोत्तर भी हुए, जिन्हें इस प्रवचन के पश्चात् आगे दिया जा रहा है। **-सम्पादक**

स्वयं की आत्मा का रक्षण कर मुमुक्षुओं को आत्मरक्षा का उपाय प्रदर्शित करने वाले वीतराग भगवन्तों, आत्मरक्षा में अग्रगामी संघ-रक्षक आचार्य भगवन्तों के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्......सामाजिक और धार्मिक थाती को सुरक्षित रखने के लिये सीमा रक्षा में सन्नद्ध बन्धुओं!

सरलमना भावुक भक्त सी.ओ. साहब (श्री चुन्नीलाल जी बेलवा) हिमाचल के हैं, जहाँ की राजधानी है-शिमला। जब मैं विद्यालय में पढ़ता था, तब 1 दिसम्बर, 1976 को वहाँ जाने का संयोग बना था। नेहरु बाल संघ के शिविर में वहाँ रहते समय सैलानियों का, विशेषकर नव-विवाहितों का सैलाब उमड़ते देखा। ये जोड़े सुख की खोज में शादी के बाद घूमने पहुँच जाते हैं। मनोविज्ञान के आंकड़े कहते हैं कि 80% से 90 % तक 20 से 30 वर्ष के नवविवाहित युगल दाम्पत्य जीवन से असन्तुष्ट हैं। सुना है पूना में प्रतिमाह ऐसे ही नवविवाहितों के 300 से अधिक तलाक हो जाते हैं। कारण क्या? सुख पूर्ति की इच्छा में, साथी से जो अपेक्षा की थी, उस पर उसे खरा नहीं पाया। तनाव पैदा हुआ और नतीजा बिखराव। दूसरे से सुख की अपेक्षा- यही है तनाव का मूल। भगवान् महावीर ने इसे मिथ्यात्व कहा है। अपने सुख-दुःख का कारण किसी अन्य को मानना।

भगवान् ने कहा- '**अप्पा कत्ता विकत्ता य सुहाण य दुहाण य।**' किसी ने इसे वासना कहा, किसी ने माया, अविद्या, **Sin, Devil** या शैतान के नाम से पुकारा। हमें किसी नाम से आपत्ति नहीं, परन्तु कभी गलत धारणा भी हो जाती है। ओ! हो! जानते हैं आप 'गधा' का पूर्ण रूप। जैसे यहाँ **B.S..F.** का अभिप्राय है **Border Security Force** वैसे ही अनुभवियों ने कहा- गलत है धारणा जिसकी, वह है- गधा। क्या गलत है उसकी धारणा? संस्कृत साहित्य में उसे वैशाख नन्दन कहा गया। बैसाख का महीना आया, धूप तेज हुई, धरती सूखी-सूखी और गधा सूखी घास को देखकर खुशी से फूलकर हृष्ट-पुष्ट हो जाता है। क्यों? सोचता है मैंने सारी घास खा ली। और वह खुश; सावण आया बारिश से धरती हरी-भरी हुई, और चारों तरफ घास को देख, वह मुरझा जाता है। अरे, मैं कुछ नहीं खा सका। मैं भूखा ही भूखा और वह कृशकाय हो जाता है। बाहर से अपना मूल्यांकन करना ही तो गलत धारणा को पुष्ट करता है। इसी गलत धारणा को ज्ञानियों ने मिथ्यात्व कहा है; जिससे सुख मिला उससे होगा राग, जिससे अपेक्षा टूटी उससे होगा द्वेष। अन्तरंग कारण हैं तनाव के-मिथ्यात्व तथा राग-द्वेष।

'तन्' धातु से तनाव शब्द बनता है। जाल, जंजाल, तान, ताना कई प्रकार से देखा जा सकता है। अभी तो संक्षेप में जीवन की समस्या तक ही बात करें। मेरे दुःख का कारण कोई और नहीं, यहीं से प्रारम्भ होगा शांति का जीवन। यहीं से प्रारम्भ होगा आध्यात्मिक जीवन। यहाँ देश के विविध प्रान्तों के विविध मान्यता के जवान उपस्थित हैं। इस देश के मुख्य-मुख्य दर्शनों को देखें। कृष्णावतार में धोखे से तीर से कृष्ण को क्यों मरना पड़ा? अवतारवादी कहते हैं- रामावतार में पेड़ की ओट से धोखे से बाली को मारा, जिसका फल कृष्णावतार में चुकाना पड़ा। 'इत एकनवतिकल्पौ...बुद्ध की वाणी कह रही है। शक्ति से पुरुष को मारा। उसे अनेक भव बाद काँटा चुभने रूप से भुगत रहा हूँ। तो भगवान् महावीर के कानों में कीले क्यों ठोके गए? क्योंकि राजा था तब सेवक पर क्रोध कर कान में गरम-गरम शीशा डलवाया। पहला सूत्र- मेरे सुख दुःख का कारण कोई दूसरा नहीं, हसे समझें। इन कथा प्रसंगों से इस सूत्र की पुष्टि हो रही है।

दुनिया को भारत से तनाव मुक्ति का मार्ग मिला है। सन् 1893 के सितम्बर में विश्व धर्म सम्मेलन शिकागो में स्वामी विवेकानन्द का प्रारम्भिक सम्बोधन था- ''अमेरिका वासी बहनों और भाइयों! आपने जिस सौहार्द और स्नेह के साथ हम

लोगों का स्वागत किया, उसके प्रति आभार प्रकट करने के निमित्त खड़े होते समय मेरा हृदय अवर्णनीय हर्ष से परिपूर्ण हो रहा है। संसार में संन्यासियों की सबसे प्राचीन परम्परा की ओर से मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, धर्मों की माता की ओर से धन्यवाद देता हूँ।'' क्या गौरव है आपके देश का, जिसकी सीमाओं को आप सुरक्षित कर रहे हैं। वहीं से तनाव मुक्ति का सूत्र मिल रहा है। आज भी आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड आदि पश्चिमी देश में अथवा अमेरिका में कोई धर्म गुरु जाए तो वहाँ के लोग मुग्ध हो जाते हैं। तनाव मुक्ति के लिये अमेरिका में पुस्तक लिखने वाले दीपक चौपड़ा आदि सभी तो भारत के ही हैं। 10 करोड़ लोग वहाँ स्वाभाविक नींद नहीं सो सकते। नींद की गोली, इंजेक्शन एवं ड्रग्स के प्रयोग से ही आती है उनको नींद।

हाँ वह भी 11 सितम्बर ही तो थी 2001 की, जब आर्थिक समृद्धि के प्रतीक ट्विन टावर एवं सैनिक मुख्यालय पेंटागन पर हमला हुआ। अमेरिका ने प्रतिक्रिया में अफगानिस्तान पर हमला किया, इराक को ध्वस्त कर दिया, क्या इससे शांति हो गई? शत्रुता बढ़ती गई, तनाव बढ़ता गया। आज लोग भयभीत हैं, ईर्ष्याग्रस्त हैं, द्वेष से त्रस्त हैं, इसीलिये तनाव से अनेक रोग पैदा होते हैं। ब्लड प्रेशर इसकी देन है, हार्ट अटैक भी कराता है, तो शूगर और ब्रेन ट्यूमर में भी कम भूमिका नहीं निभाता। आँतों को सीधा प्रभावित करता है, पाचन क्रिया बिगाड़ता है। प्रभु तो फरमाते ही हैं, सभी रोगों का मूल अजीर्ण है। सुना है आप लोग भी तनाव ग्रस्त होते जा रहे हैं, आप में धीरे-धीरे रोग जड़ जमाते जा रहे हैं, इसीलिये आपके अधिकारियों ने, आपके हितचिन्तकों ने आज बाड़मेर में एक नया कदम उठाया। शस्त्रधारी सैनिकों के मध्य शास्त्रधारी सैनिकों के सेनापति आचार्यप्रवर को अनुनय विनय कर उपस्थित किया। जिस रोग से आप त्रस्त हैं, ये महापुरुष उससे विमुक्त हैं क्यों? कैसे? इसे समझें।

तनाव के पाँच कारण हैं- हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह। अभी यहाँ शास्त्रीय शब्द का प्रयोग अधिक नहीं कर, बोलचाल की भाषा का प्रयोग कर रहा हूँ। ये आचार्यप्रवर हिंसा, झूठ आदि पांच दोषों से बहुत दूर रहकर जीते हैं। आपकी समस्या का समाधान इनका जीवन है। जब सिकन्दर विश्व विजय पर निकला तो उसके गुरु अरस्तू ने भारत के सबसे अजीबोगरीब, सबसे बड़े आश्चर्य दो जैन संतों को भी साथ लाने को कहा, बताते हैं- लौटते समय उसे याद आ गया,

दौड़ाया सैनिकों को....खोजो-खोजो....और मिल भी गये.....सैनिकों ने कहा-"चलो! तुम्हे सिकन्दर बुला रहा है, पूछा उन्होंने-'सिकन्दर? अरे कौन सिकन्दर?' 'क्या जानते नहीं, तुम सिकन्दर के नाम को, नाम नहीं सुना तुमने सिकन्दर का? विश्व विजेता सिकन्दर का।' सन्तों ने कहा-"हम तो आत्म विजेता परमात्मा को जानते हैं, हमें तो उन्हीं की आज्ञा की पालना करनी है। हम किसी सिकन्दर की आज्ञा से बंधे नहीं हैं।" सैनिक चकरा गये, क्यों नहीं हैं वे भयभीत? देखिये! इनका सूत्र है-भय से तनाव पैदा होता है और भय होता है वैर से, अक्षमा से। इसीलिये तो इनका पहला नियम है **अहिंसा**।

जैन साधु मुख पर कपड़ा क्यों बांधते हैं, मुख से निकलने वाली गर्म हवा से बाहर के छोटे से छोटे जीव नहीं मर जाएं। यह हाथ में क्या है? पूंजणी ओगा दिखाकर। कोमल सूत से, कोमल ऊन से बना कोई चींटी आ जाए उसे बचा दें। ये नंगे पैर चलते हैं। अहा हा! क्या सुन्दर है इनका जीवन। घर में रहने वाले इतनी अहिंसा नहीं पाल सकते। आपकी विवशता जानता हूँ। कभी हिमालय के बर्फीले इलाके में, तो कभी थार के रेगिस्तान में सीमा की रक्षा, पर भैया-मद्य, माँस तो मैत्री भाव का नाश करेगा ही, भयभीत बनायेगा ही, तनाव पैदा करेगा ही। इगतपुरी से विहार कर एक शराब की फेक्ट्री के बाहर दुर्गा के मंदिर में हमारा ठहरना हुआ। तीन-तीन तरह की **Security** थी वहाँ। सारी शराब सेना को जाती थी। भारतीय थल सेना के सैनिक भी तैनात थे। उन्होंने जो अपना रोना सुनाया, उनके तनावग्रस्त जीवन में शांति के लिये पूछ लिया- शराब पीते हैं? बोले- पहले तो पीते थे, अब नहीं। पूछ लिया, क्यों? बोले-साहब! यहाँ अंगूर, गन्ने और जौ आदि की तीन-चार प्रकार की शराब बनते देखा, किस तरह सड़ाया जाता है? कितने जीव बिलबिलाते हैं। अब तो जिंदगी भर नहीं पी सकते। तो यह मदिरा तनाव मुक्त नहीं करेगी; तनाव बढ़ायेगी ही। शस्त्र से, आविष्कार से भय नहीं मिट सकता, तनाव नहीं भाग सकता- **Hatred can never be conquered by hatred, hatred can only be conquered by love.**

घृणा को घृणा से नहीं, प्यार से ही जीता जा सकता है। ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से अणुबम परीक्षण के पश्चात् पूछा गया था, आपका अगला आविष्कार क्या होगा? वो बोले- अब भारत अहिंसा अणुबम प्रस्तुत करेगा, जो विश्व को शांति से रहना सिखायेगा। प्रसंगवश नाम आ गया तो सुना ही दूँ। देहरादून में

भारतीय वायुसेना की सर्वप्रथम परीक्षा में असफलता से हताश-निराश कलाम जब इसी संस्कृति के किसी एक संन्यासी के आश्रम में पहुँचा। वहाँ अत्यन्त आत्मयीता का सम्बोधन मिला, निराशा छोड़ आत्मविश्वास जगाने वाला चिंतन प्राप्त हुआ और जीवन के नवीन उत्साह की प्रेरणा मिली। बस वहीं से वह जीवन आगे बढ़ता गया। कलकत्ता विश्वविद्यालय में महामहिम राष्ट्रपति ने कहा था- 'हम सितारों (आकाश के तारों) तक नहीं पहुँच पाएँ तो कोई शर्म की बात नहीं, पर हमारे जीवन में कोई सितारा (आदर्श) नहीं हो तो इससे बड़ी शर्म की बात नहीं। तनाव-मुक्ति के लिये अहिंसापालक उन महापुरुषों का आदर्श भी उपयोगी होगा। आत्मविश्वास जगाने वाले विनोबा भावे के शब्दों में-'हे प्रभो! मैं आपका अतीतकाल हूँ, आप मेरे भविष्य काल हैं, वर्तमान में आपकी अनुभूति करूँ, इसी का नाम है 'भक्ति'। भगवद् दशा की अनुभूति करनी होगी। 'मैं अच्छा हूँ, मुझे और अच्छा बनना है, मुझे सबसे अच्छा बनना है। आत्मा अच्छी होती है, महात्मा और अच्छा होता है, परमात्मा सबसे अच्छा होता है। परमात्मा की भक्ति, महात्मा की संगति, तभी होगी तनाव से मुक्ति। सद्भाग्य है आज आपका, आपके प्रांगण में पहली बार इन सूत्रों का जीता जागता चित्रपट आया है। अहिंसा का पूर्ण पालक महात्मा आया है, जिनके जीवन का आदर्श है परमात्मा। ये किसी से वैर नहीं रखते, क्योंकि इनकी धारणा बिल्कुल सही है। ये प्रभु के वचन में अटल विश्वास रखते हैं। ये अपने सुख-दुःख का कारण किसी अन्य को नहीं मानते हैं। ये प्रत्येक जीव का कल्याण चाहते हैं, भला चाहते हैं। इनसे हम भी एक सूत्र ले लें- यदि लगे कि कोई व्यक्ति हमारे अनुकूल कार्य नहीं कर रहा, हमारे भीतर वैर जग रहा है, तुरन्त भावना दें- 'उसका भला, मेरा भला, सबका भला।' हमारे भीतर वैर की ग्रन्थि नहीं बंध पायेगी। यहाँ सरदार जी भी बैठे हैं। इनका मूल मंत्र, सिक्खों का मूल मंत्र-सिद्ध भगवान का स्वरूप कहने वाला है। उसमें आया- निर्वैर-निरभओ-भगवान् को किसी से वैर नहीं है, उन्हें किसी से भय नहीं है। जिसे वैर नहीं, उसे भय नहीं, उसे कोई तनाव नहीं। सीमा पर शत्रु का भी हित चाहना।

1999 मई के अन्तिम सप्ताह एवं जून के प्रथम सप्ताह की बात है। आचार्यप्रवर सुराना एन्क्लेव बीकानेर में विराज रहे थे। कारगिल की लड़ाई प्रारम्भ हुई। प्रयोग किया गया भक्तों द्वारा निरन्तर आयंबिल और मंगल मैत्री का। "अहिंसा के रास्ते से भटककर ये आतंकवादी निर्दोष, निरपराध लोगों के प्राणों

का हरण करते हैं, आगे के लिए दुर्गति में दुःख की तैयारी करते हैं, वर्तमान में भयग्रस्त, तनावग्रस्त होते हैं और अकाल में मौत के मुख में जाते हैं, उन्हें सद्बुद्धि मिले। ये हिंसा के मार्ग को छोड़ें।'' इसके पीछे भावना यही कि किसी आतंकवादी के मरने पर खुशी एवं सैनिक के मरने पर विषाद से मुक्त बन स्वयं को राग-द्वेष से बचा सकें, तनाव मुक्त रह सकें। समझ नहीं हो तो टी.वी. पर क्रिकेट मैच देखकर भी भयंकर कर्मबंध हो जाता है, तनाव आ जाता है, किसी-किसी के तो ब्रेन ट्यूमर या हार्ट फेल भी हो जाते हैं। भगवान् ने अकाल मौत के 7 कारणों में पहला कारण अध्यवसाय ही कहा है। चिंता, शोक, भय, उत्तेजना, वैर, द्वेष ये सभी मानसिक आवेग तनाव के कारण बनते हैं। तत्काल में साँस देखकर नाक के अग्रभाग को देखकर दोनों होंठ बंदकर दाँत नहीं मिलने देने पर भी तनाव कम हो जाता है। **Home-Sickness** परिवार से दूर, परिवार की याद भी सैनिकों में तनाव का कारण बन सकती है। उस समय ये शाश्वत सूत्र हमारी स्मृति में रहें। मेरे अतीत के कार्य ही तनाव की परिस्थिति को पैदा करने वाले हैं। अब मुझे अपने दुःख का कारण किसी अन्य को नहीं मानना है। तुरन्त भावना दें। उसका भला, मेरा भला, सबका भला।

एक बार की घटना है- ब्रिटेन के प्रधानमंत्री चर्चिल ने भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से पूछ लिया-'मिस्टर नेहरू! आप कितने वर्षों तक जेल में रहे।' नेहरू जी ने उत्तर दिया-'यही कोई दस वर्ष, आपकी जेल का मेहमान रहा।' 'तब तो आपके मन में हमारे प्रति बड़ी घृणा होगी।' चर्चिल के इस प्रश्न के उत्तर में नेहरू बोले-' घृणा का प्रश्न ही पैदा नहीं होता', क्योंकि हमारे नेता ने हमें सिखाया है कि-''किसी से डरना नहीं और किसी से नफरत करना नहीं।'' कितना सुन्दर था इस देश के राष्ट्रपिता का चिन्तन! तनाव मुक्ति के लिये भय और नफरत मुक्त ये महामानव(आचार्य श्री)-अहिंसा व्रत का पालन करते हैं। मोटे-मोटे रूप से चर्चा की जा रही है, वरना जैन ग्रन्थों में अहिंसा भगवती का सूक्ष्मतम विवेचन है। हिंसा छोड़ने वाला ही तनाव मुक्त हो सकता है।

सेना में रहते हैं, अर्द्धसैनिक हैं, देश की सुरक्षा के लिये शस्त्र उठाना पड़ता है, उसमें भी वैर की भावना नहीं; शांति की बहाली के लिये कर्त्तव्यनिष्ठ बन जीव की मैत्री के साथ आप सीमा पर जागरूक रहते हैं, ईमानदारी से अपने दायित्व को निभाते हैं, अहिंसा का पालन कर सकते हैं, मौज-शौक के लिये शराब एवं माँस

नहीं खाकर आप मोटी अहिंसा पाल सकते हैं, तनाव मुक्त हो सकते हैं। बुद्ध के पञ्चशील, पतञ्जलि के पाँच यम, इन सभी में पहली है- अहिंसा।

इनका (जैन संतों का) दूसरा नियम है सत्य। ये कभी झूठ नहीं बोलते। झूठ बोलने वाला भयभीत रहता है, पोल खुल गई तो, मेरा असत्य प्रकट हो गया तो, इसी भव से तनावग्रस्त हो जाता है, रोगी बन जाता है। ईमानदारी से ये अपना कार्य करते हैं। लक्ष्य पर दृष्टि रहे। क्या है लक्ष्य आपका? इसके लिये किसी ग्रन्थ की आवश्यकता नहीं, किसी पंथ की, किसी संत की जरूरत नहीं। केवल एक प्रश्न- **Only one Question, What do you not want?** हाँ आपको क्या नहीं चाहिये? पूछिये अपने आप से पूछिये...। श्रोताओं में से उत्तर आया- दुःख, अशांति। नहीं चाहिये भय, नहीं चाहिये तनाव, नहीं चाहिये चिंता और नहीं चाहिये मौत, पराधीनता, अशान्ति, बंधन,अभाव, अपूर्णता एवं विषाद। तो लक्ष्य क्या? शान्ति, प्रीति, मुक्ति, स्वाधीनता, पूर्णता, अमरत्व, निजानन्द, परमानन्द, निर्भयता, निश्चिन्तता। इसी लक्ष्य पर दृष्टि, पवित्र भावना, योग्य रीति एवं पूरी शक्ति लगाकर जो कार्य करे वह है ईमानदार। जो संसार की किसी भी वस्तु को अपनी नहीं माने वह है ईमानदार। आपके भाग्य कितने अच्छे हैं? आज ऐसे सत्य महाव्रती आचार्य के दर्शन कर रहे हैं। तनाव मुक्त होना है तो ईमानदार बनिये। कर्त्तव्य बुद्धि से कार्य करने के बाद व्यर्थ चिन्तन पैदा ही नहीं होता। तनाव की संभावना ही नहीं रहती। सुना था बचपन में- **Work While you work and play while you play, this is the way to be happy and gay.** ये सन्त ऐसे ही हैं, चलते है तब केवल दिन के उजाले में, चार हाथ आगे की भूमि देखकर आत्मीयता भरे कदम उठाते हैं। किसी जीव को नहीं सताते हैं। बोलते हैं तब हित मित अमृत-वचन बोलते हैं और खाते हैं तो भी ईमानदारी से, आवश्यकता से अधिक नहीं, इसलिये तनावमुक्त हैं।

तीसरा नियम है- ये चोरी नहीं करते। यहाँ सी.ओ. साहब की आज्ञा लेकर बैठे हैं। जायेंगे, तब वापिस सँभला देंगे। किसी भी प्रकार की चोरी करने वाला भयभीत रहेगा, तनाव आयेगा ही। विदेशी जासूस को दस्तावेज देने हेतु, चोरी करने वाला तनाव मुक्त कैसे रह सकता है? देखा है, जो चोरी करते हैं, उनका पैसा बीमारी खा जाती है। स्वास्थ्य भी गया, पैसा भी। चोरी नहीं करते इसलिये ये निर्भीक हैं। वे दोनों संत भी निर्भीक थे। सिकन्दर खुद उनके पास पहुँच गया।

बोला-चलो मेरे साथ। पर वे ईमानदार संत संसार की किसी भी वस्तु को अपना नहीं मानते वाले हैं। संत निश्चिन्त थे, सिकन्दर के साथ क्यों जाते? तलवार निकालकर सिकन्दर बोला-खतम कर दूँगा। निर्भीक स्वर गूँजा। 'तू किसे खतम करेगा, जिसे तू खतम करेगा, उसे तो हम पहले ही छोड़ चुके हैं, उसे तो हम पहले ही खतम कर चुके हैं। संसार की किसी भी चीज को यहाँ तक कि जो शरीर को भी अपना नहीं मानता वो ही निर्मम, निरहंकार, निस्संग, जैन संत है। तब ये संत किसी की वस्तु क्यों हड़पेंगे। ये जानते हैं-यहाँ किसी की भी चीज छीनकर, लूटकर, चोरीकर अपनी नहीं बनाई जा सकती। इसीलिये ये शान्त हैं, तनाव मुक्त हैं। हिंसा नहीं, झूठ नहीं, चोरी नहीं, फिर कहाँ से आयेगा तनाव।

इनका चौथा नियम है- पूर्ण ब्रह्मचर्य। शायद ओसामा बिन लादेन को खड़ा करने वाला अरब में अमेरिकी सैनिकों का व्यभिचार है। शायद काश्मीर समस्या को पैदा करने वाला सैनिकों का व्यभिचार कहा जा सकता है। अन्तरराष्ट्रीय तनाव पैदा करने वाला है- व्यभिचार अथवा कुशील। रावण को प्रतिवर्ष क्यों जलाया जाता है? जब से वह सीता को हरण कर ले गया, कितना तनाव पैदा हो गया। क्या महाभारत की भूमिका में द्रौपदी का चीरहरण कारण नहीं? तनाव-मुक्ति के लिये गृहस्थ की भूमिका में स्व-पत्नी संतोष की बात कही है। सैनिक बन्धुओं को नशे के दोनों साधनों से बचना भी अनवार्य है। राजाओं के राज चले गये, ठाकुरों की ठकुराई चली गई, दारू और मांस से। अतः इन दोनों को छोड़ने में भलाई है।

समय अपनी गति से चल रहा है, इसलिये संक्षेप में ही संकेत मात्र किया जा रहा है। इनका (जैन सन्तों का) मकान नहीं, परिवार नहीं, पैसा नहीं। ये बाहरी-भीतरी परिग्रह से मुक्त हैं। इसीलिये इनके चरणों में राजा-महाराजा शीश नवाते हैं। मात्र शरीर का भाड़ा चुकाते हैं और प्रभु के गीत गुनगुनाते हैं। किस देश के हैं आप? जहाँ का गौरव अतीत से आज तक इन्हीं त्यागी, वैरागियों से सुरक्षित है। याद आता है- किसी देश के सेनापति ने कहा था, मुझे भारत के सैनिक दे दो, मैं विश्व विजय करके दिखा सकता हूँ। **NASA** अमेरिका के 1/3 वैज्ञानिक भारतीय हैं, बड़े-बड़े डॉक्टर, बड़े-बड़े इंजीनियर तथा प्रतिभा के क्षेत्र में आज भी भारत का नाम है। इसके गौरव को सुरक्षित रखने का जिम्मा है आप पर। संतों की बात सुनकर सिकन्दर हतप्रभ रह गया। अरे यहाँ के भिखारी भी शरीर से ऊपर

उठकर पड़ौसी का ध्यान रखने वाले हैं।

पढ़ी थी **Times of India** में एक घटना आशीष गुप्ता की। लेखक लिख रहा है भारत के अनेक स्थलों पर घूमते हुए पुष्कर पहुँचे। ब्रह्मा जी के मंदिर के दरवाजे खुलने में देर थी। मैं (आशीष गुप्ता) और मेरा मित्र सिगरेट पी रहे थे। एक प्रौढ़ वय वाली भिखारिन आई-'बाबूजी एक रुपया दे दो', क्यों? 'रोटी खा लूँगी।' 'एक रुपये में रोटी?' हाँ! बाबूजी पारमार्थिक संस्था रोटी त्रे फ्री में खिलाती है, बस पहले एक रुपया जमाकर कूपन लेना पड़ता है। पर हमारा दिल नहीं पसीजा। डाँट-डपटकर फटकार दिया। इतने में ही मंदिर के दरवाजे खुलने की खबर मिली, अधजली सिगरेट को जूते से कुचलकर हम जाने लगे । भिखारिन बोली-'देखो आज के युवकों को, ये पैरों से कुचलकर पैसा बरबाद कर सकते हैं, एक भूखे का पेट नहीं भर सकते।' चुभ गये वचन, घूमते रहे दिमाग में, मंदिर से लौटकर बेटे के हाथ से दो रुपये दिलवाये। एक रुपये में सुबह का, एक रुपये में शाम का भोजन। उसने बच्चे को चूमा, अन्तर आत्मा से पुचकारा, आशीर्वाद दिया। शायद वैसा तो आज तक मैंने भी नहीं किया। घण्टा, दो घण्टा घूमकर हम जाने लगे। वहीं भिखारिन रोटी खाती मिली। साथ में मासूम सी बच्ची भी रोटी खा रही थी। पूछ लिया- यह कौन है? 'बाबूजी ये नई आई है, अभी इसे भीख मांगना आता नहीं, आज इसे रुपया मिला नहीं। आपने जो दो रुपये दिये, उनमें से एक से मेरा और एक से इसका कूपन खरीद लिया, आपके रुपये से ही इसका पेट भर रहा है। मेरे भाग्य में होगा, शाम के लिये दूसरा रुपया मिल जायेगा। लेखक ने लिखा दो रुपये के इस चमत्कार ने मेरे अन्तर को हिला दिया, जीवन भर के लिये मैंने सिगरेट का त्याग कर दिया। यह है तनावमुक्ति का रास्ता। यह भूखी रहे और मैं शाम के लिये रुपया रखूँ, यह कैसे हो सकता है? क्या है इस देश की संस्कृति-शाम के लिये भी संग्रह नहीं, कहाँ रहेगा तनाव वहाँ? कितनी शांति, कितना आनन्द.... ।

तो इनका पाँचवा नियम है-मिल्कियत नहीं करते। तभी तो वे दो संत सिकन्दर को कह रहे हम तो उस शरीर की ममता कब की ही छोड़ चुके हैं... तू क्या मारेगा हमें, आत्मा मरती नहीं, हम अमर हैं। शरीर तो मात्र किराये का मकान है। सिकन्दर नतमस्तक हुआ था तब और आप सब नतमस्तक हैं अब, तो सुनिये इन्हीं महापुरुषों से अनुभूति की बातें....सारभूत बातें..... ।

प्रवचन

सेना को प्रेम का संदेश

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के प्रवचन (जो इसी अंक में प्रकाशित है) के अनन्तर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा दिनांक 4 मार्च, 2010 को उसी 81 वीं बटालियन को सम्बोधित किया गया तथा प्रश्नोत्तर भी हुए, जिनका संक्षेप में संकलन श्री जगदीश जी जैन ने किया है। **-सम्पादक**

संसार के प्रत्येक जीव में प्रेम का सागर भरा हुआ है। भक्ति में, करुणा में, श्रद्धा में जब यह सागर उमड़ता है तब संसार के सारे तनाव, कठिनाइयाँ, चुनौतियाँ समाप्त हो जाती हैं। जिस सर्दी में व्यक्ति शरीर को कपड़े से ढ़क कर रखता है, कमरे में बन्द रहकर गर्मी लाने का प्रयास करता है, वहाँ किसान भरी सर्दी में कपड़े हटा खेत में पाणत करता है। उसका शरीर वज्र का नहीं है, पर भविष्य में मिलने वाले लाभ के प्रति प्रेम है। माँ के मन में बच्चे के प्रति दुलार है, स्नेह है, प्यार है, अतः ममत्व भाव जगता है कि सर्दी पड़ने पर आवश्यकता हुई तो खुद के वस्त्र बच्चे पर डालती है। खुद भूखी रहती है एवं गीले में सोती है, किन्तु शिशु को सूखे में सुखाती है एवं दूध पिलाती है। प्रेम जगता है, भीतर का स्नेह उमड़ता है तो माँ अपना दुःख तक भूल जाती है।

जब देश के प्रति प्रेम उमड़ता है तब सैनिक अपनी भूख-प्यास-सर्दी-गर्मी सब भूलकर देश की सुरक्षा में सतत जागरूक रहता है। क्योंकि देश के प्रति प्रेम का भाव जो उमड़ा। प्राचीन कथा प्रसंग है कि राजा रन्तिदेव 21 दिन से भूखे हैं, फिर भी जब सामने दूसरों को भूखा देखते हैं तो वो अपना भोजन उन्हें दे देते हैं। ज़हर पिलाने के लिये मीरा (जो राजघराने की राजकुमारी थी) के सामने प्याला आगे बढ़ाया तो उसने यह सोचकर ज़हर पी लिया कि यह ज़हर ही मुझे भगवान के पास पहुँचायेगा। भक्ति की कैसी पराकाष्ठा.... न जाने कितने बड़े-बड़े देशभक्त हो गए हैं। एक बहिन के पास मुख्यमंत्री पहुँचे। पूछा- बहिन दुःख किस बात का है? बहिन ने कहना प्रारम्भ किया। मेरे तीन लड़के थे, तीनों को देश भक्त बनाया, सेना में भर्ती कराया और देश के लिये तीनों ही शहीद हो गये। मुझे दुःख इस बात का है कि यदि मेरे एक लड़का और होता तो मैं उसे भी देश की सुरक्षा के लिये बलिदान कर देती। यह है देश के प्रति प्रेम। भक्ति का जब वेग

उमड़ता है तब तनाव काफूर हो जाता है। तनाव मूलतः रागद्वेष के कारण पैदा होते हैं, परायेपन की भावना भी एक कारण है। आप इनसे जितना बच सकते हैं, बचने की सोच बनाइये। देश की जिस सेवा से करोड़ों लोग शान्ति का जीवन जी रहे हैं, वह सेवा भी लाभकारी है। अपनी शक्ति देश की भक्ति में लगाने के साथ स्वयं के जीवन में शान्ति को स्थापित एवं वर्धापित करेंगे, इन्हीं शुभ भावों के साथ.... ।

पूज्य आचार्य प्रवर श्री के प्रवचन के पश्चात् प्रश्नोत्तर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें दो प्रश्नों के उत्तर यहां दिए जा रहे हैं–

Deputy C.O. यादव जी– आपने कहा किसी का बुरा मत सोचना, हम तो सीमा पर खड़े रहते हैं, शत्रु का बुरा नहीं सोचेंगे तो रक्षण कैसे सम्भव है?

समाधान– अन्याय, अनीति, आतंक आदि से समाज को सुरक्षित रखने के लिये आरक्षक वर्ग का गठन होता है। शान्ति समरसता को सुरक्षित रखने के लिये गृहस्थ भक्तों की मर्यादा बताते भगवान ने 'स्व शरीर एवं स्वदायित्व में आए आश्रित परिजनों एवं राष्ट्रजनों के पीड़ाकारी, सापराधी का आगार ध्वनित किया ही है; पर उस रक्षण में भी व्यक्तिगत द्वेष से बचा जा सकता है। उदाहरण के लिए किसी जघन्य अपराध में लिप्त अपराधी को कानून के अनुरूप फाँसी की सजा लिखने को विवश न्यायाधीश को बहुत खेद भी होता है, फाँसी पर लटकाते समय जल्लाद भी अपनी विवशता से खेदित होता है, किन्तु मार्ग में चलते एक व्यक्ति को अपार हर्ष हो सकता है। 'मुझसे अकड़ा था साल भर पहले, बच्चू आज मजा चख।' जज और जल्लाद ने वैर की गाँठ नहीं बाँधी, वे तनाव से मुक्त रह सकते हैं, किन्तु साल भर से बँधी गाँठ से आज हर्षानुभूति करने वाला, गाढे कर्म-बंध के साथ तनाव से नहीं बच सकता।

राजा की आज्ञा से युद्ध में शत्रु का वध करने वाला भी कदाचित् कर्तव्य पालन करता है। उस जीव के प्रति उसका द्वेष नहीं होता। मैत्री रखकर कर्त्तव्य-पालन में ईमानदार रहने से भी पूर्वापेक्षया से जीव की गति सुधर जाती है। पर अभी हम तनाव-मुक्ति की चर्चा कर रहे हैं। युद्ध तो कभी-कभी होते हैं। रोज सीमा पर बैठे रहकर क्यों अपना बिगाड़ा करें। अन्दर से भावना दें- उनका भला हमारा भला, सबका भला। शायद चमत्कार हो जाए, दुश्मनी मित्रता में बदल जाए।

सेबी के भूतपूर्व अध्यक्ष, प्राणीमित्र, समाजसेवी देवेन्द्रराज जी मेहता-

भगवान् महावीर विकलांग सहायता समिति के माध्यम से विकलांगों के पैर लगाते हैं। पाक अधिकृत काश्मीर में अनेकों लोगों के पैर कट जाने पर दया-अनुकम्पा से प्रेरित मेहता सा. ने उनकी सेवा करने की भावना से पाक जाने हेतु आवेदन किया, अस्वीकृत हो गया। कभी किसी प्रबुद्ध मुस्लिम राजवंशीय से चर्चा में उन्होंने जिक्र किया। वे मुस्लिम बंधु बोले- ''पाकमंत्री तो मेरा रिश्तेदार ही है। सात दिनों बाद दिल्ली आने वाला है। मैं आपकी बात करवा दूँगा।''

दोनों की बात प्रारम्भ हुई। पाकिस्तान के मंत्री ने कहा-''हमारे यहाँ जर्मनी और अमेरिका के पैर लगते हैं, आपकी आवश्यकता नहीं।'' पाक मंत्री के कथन पर विनम्रता से समाजसेवी ने कहा- ''जर्मनी के पैर लगाने पर जूता पहनना अनिवार्य है। अर्थात् आपने उसे मस्जिद में प्रवेश से रोक दिया। अमेरिका के पैर हमसे चार पाँच गुना मँहगें होते हैं। पंजे से मुड़ नहीं सकते, यानी आपने उसे नमाज से वंचित कर दिया। हमारे पैर जूते की अपेक्षा नहीं रखते, नीचे से मुड़ते हैं और सेवा भावना से निःशुल्क भी प्रदान किये जा सकते हैं- दानवीरों के सहयोग से।'' मंत्री हतप्रभ रह गया- ''मैं पाकिस्तान जाते ही आपको निमंत्रण भिजवाता हूँ।''

लाल मस्जिद विवाद का समय था। जीवन का संकट था। साथियों की मनाही के बावजूद मानवता का मसीहा अपने साथियों सहित इस्लामाबाद में सेवा हेतु पहुँच गया। टी.वी., अखबार आदि के मीडिया ने बहुत प्रधानता दी- इस सेवा कार्य को। टीम के एक सदस्य के जूते टूट गये। नए जूते लेने एक जूते की दुकान पर गये तो कीमत अधिक थी, जेब में पैसे कम। जूता अलग रखवा, पैसे लेने लौटे। पीछे से टी.वी. पर भारत के इन सेवाभावियों द्वारा पैर लगाने के दृश्य को देख रहे दुकानदार ने पैसा लेकर लौटे सदस्य से पूछा- आप इन्हें जानते हैं? जूता लेने वाले उस सदस्य ने कहा- मैं भी इस टीम का सदस्य हूँ। दुकानदार भाव विभोर हो गया- एक भी पैसा लिये बिना जूता देकर हर्षित हो बोला। आप मेरे देश में गरीबों को निःशुल्क पैर लगाएँ, और मैं आपसे जूते के दाम लूँ, मैं इतना नालायक नहीं हूँ। मैं भी ईमान रखता हूँ, ले जाइए, आपको जूते बिना पैसे ही लेकर जाने होंगे। यह है शत्रुता मिटाने का रास्ता। अभी वे मेहता साहब इराक जाकर भी आये, वहाँ भी ऐसी ही तैयारी है। इस्लामाबाद में 'जयपुर फुट' तो कराची में महावीर के नाम सहित स्थायी सेंटर खुल गए। दक्षिण अमेरिका के एक देश में संयुक्त उपक्रम बनाने हेतु नाम के लिए सुझाव देते हुए जब मेहता साहब ने

कहा- पहले उस देश की संस्था और बाद में भगवान् महावीर का नाम जोड़ दें। तब वहाँ के अधिकारी ने कहा-"ऐसा कैसे हो सकता है? मुख्य काम आप करें। नाम पहले हमारा नहीं, पहले महावीर का नाम होगा, पीछे हमारा।

अतः बन्धु देश की रक्षा के अपने कर्त्तव्य पालन में तत्पर रहते हुए भी शत्रुता नहीं रखें। मंगल मैत्री के साथ सामने वाले की हिंसक परिणति को ही समाप्त कर दें।

सीमा सुरक्षा बल क्षेत्रीय मुख्यालय के D.I.G. नरेन्द्र जी गूर्जरः-

प्रश्नः- हमें तो समय ही नहीं मिलता, भक्ति कैसे करें?

समाधानः- आचार्य हस्ती ने कहा था-'आचरण ही भक्ति का सक्रिय रूप है।' विवेचन किये गये-हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और आसक्ति को जितना छोड़ते जाएंगे, उतनी ही भक्ति होती जाएगी। ईमानदारी से कर्त्तव्य पालन करता हुआ साधक ही सच्चा भक्त है।

एक अनुभवी साधक ने कहा-'सेवा, त्याग और प्रेम का नाम है भक्ति। कर्म से सेवा करो, अचाह होकर त्याग करो, और प्रभु से प्रेम करो। अर्थात् आस्था, श्रद्धा, विश्वास और आत्मीयता-प्रभु है। प्रभु सर्वश्रेष्ठ हैं। प्रभु अनन्त सुख और सौन्दर्य के भण्डार हैं। प्रभु मेरे हैं, जिससे प्रीति होती है, उसकी स्मृति होती है। प्रभु की सहज स्मृति ही भक्ति है- इसका दिनचर्या में पहला स्थान होना चाहिये।

LUCK & OPPORTUNITY

Ms. Minakshi Jain

1. Luck is not in your hand but work is in your hand. Your work can make luck, but your luck can't make work. So always try yourself than your luck.
2. Hard work is like a cup of milk; luck is just like a spoon of sugar. Nature always gives sugar to these who have cup of milk.
3. A door knocks twice. Insider- who is there? Ans. "OPPORTUNITY". Insider- you are wrong, because opportunity never knocks twice.
4. Great mind discuss ideas and opportunities. Average mind discuss events, small mind discuss people.

-Surana Ki Badi Pole, Nagaur-341001 (Raj.)

अभिव्यक्ति

गुरु चरणों में अन्तर्मन की अभिव्यक्ति

मधुर व्याख्यानी श्री गौतम मुनि जी म.सा.

गढ़ सिवाना में जब 24 मार्च को आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्रद्धेय श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं समस्त सन्तप्रवरों का सुमिलन हुआ तब अपनी भावभिव्यक्ति मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने जिन शब्दों में की, उसे जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन मेहता ने संकलित किया है।-**सम्पादक**

आज की यह पावन घड़ी आपके चरण-रज पाकर धन्यता की कड़ी बन गई। आज का यह पल आपके पावन दर्शन से प्रगति का परिचायक बन गया। आज का यह शुभ दिवस आपका दीदार पाकर अन्धेरे मन का दिवाकर बन गया। आज का यह मंगल मुहूर्त आपके मुख-दर्शन से मोक्ष का आधार बन गया। आज का यह स्वर्णिम समय समवसरण की स्मृति को साकार कर रहा है। किन शब्दों में अपनी अन्तर्मन की खुशी को अभिव्यक्त करूँ, आज हीरा विशेष प्रकाशित है, क्योंकि इन्हें मान मिला। मान आज विशेष प्रसन्नचित्त है, क्योंकि इन्हें आज हीरा मिला। हम आज विशेष रोमांचित हैं, क्योंकि आज हमें महापुरुषों की छत्रछाया में प्रकाश व प्रसन्नता दोनों की अनुभूति हो रही है। आज ज्ञान-क्रिया का प्रत्यक्ष दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है, जो निश्चित ही हमें हमारी मोक्ष-मार्ग की साधना को सफल बनायेगी। आज चन्द्र और सूर्य का सान्निध्य प्राप्त हो रहा है जो मुक्ति की राह को रोशन करेगा। भगवन्! लम्बे समय के बाद आपके मांगलिक दर्शन से रोम-रोम पुलकित है, कण-कण प्रमुदित है। किन शब्दों में उसकी अभिव्यक्ति दूँ, मेरी हालत तो आज श्रद्धाशील भावुक भक्त पूनमचन्द जी बड़ेर की तरह हो रही है। जब कभी भी बड़ेर साहब गुरु हस्ती के श्री चरणों में दर्शनार्थ उपस्थित होते, वस्त्र परिवर्तन कर बैठ जाते और अपलक गुरुदेव के दर्शन में इतने गहरे उतर जाते कि प्रायः सामायिक लेना ही भूल जाते। ठीक इसी तरह मैं भी बहुत कुछ बोलने की कई दिनों से कल्पनाएँ कर रहा था, मगर आज आपके वैराग्यभरे जीवन एवं संयम

की आभा से मंडित श्रीमुख के दर्शन मन से इतना गहरा एकाग्र बन गया कि क्या बोलूँ- क्या नहीं बोलूँ ऐसी स्थिति बन गई। पर भगवन् ऐसे पावन समय में मुझे तुलसीदास जी की उक्ति याद आ रही है- 'तब दर्शन फल परम अनूपा, जीव पाय निज सहज स्वरूपा।' शायद यही उक्ति आप जैसे संयमी साधकों के लिए ही कही होगी। सचमुच संयम युक्त आपकी चर्या एवं चर्या जीवन के हर पल को सार्थक करने वाली वैराग्य भरी जीवन कथा आज ही नहीं, हर पल हर साधक को सत्य का बोध करायेगी और अमूल्य मार्गदर्शन करेगी। पिछले कुछ दिनों से कि गुरुदेव के पावन दर्शन होंगे, उनकी चरण रज मिलेगी, प्रत्यक्ष आशीष एवं आशीर्वाद मिलेगा और सत्य का बोध कराने वाली अमृत तुल्य वाणी श्रवण करने का अवसर प्राप्त होगा, इस कल्पना मात्र से मन रोमांचित था और उस रोमांच भरे क्षणों में एक काव्य-रचना हुई है वह इस प्रकार है-

(तर्ज :- थाली भर कर लाई रे..........)

पाकर दर्शन आज गुरु के, कण-कण में मुस्कान जी,
रोम-रोम है हर्षित मेरा, पुलकित तन मन प्राण जी,
पाकर दर्शन आज गुरु के, कण-कण में मुस्कान जी।

तरस रहे थे दोनों नैना, तरस रही थी आत्मा,
कब होंगे गुरुवर के दर्शन, कब पाऊँ परमात्मा,
आज का सूरज आज हवाएँ, ले आई सौगात जी,
रोम-रोम है हर्षित मेरा, पुलकित तन मन प्राण जी।

दिन बीते महीने भी बीते, बीते ग्यारह साल जी,
इस अबोध बालक की गुरुवर, कुछ तो करते खयाल जी,
लगा सताने डर भीतर में, क्या भूल गये गुरुराज जी,
रोम-रोम है हर्षित मेरा, पुलकित तन मन प्राण जी।

कब लौटेंगे गुरुवर मेरे, पूछा मैंने हर इक से,
जाने वालों से मैं कहता, दर्शन को अंखिया तरसे,
झोली भर-भर बांटू बधाई, पाए दर्शन आज जी,
रोम-रोम है हर्षित मेरा, पुलकित तन मन प्राण जी।

एक तुम्हारी ही चर्चा का, हमने बस सम्बल पाया,
याद किया करते थे तुमको, पल भर भी नहीं बिसराया,
कभी तो हिचकी आई होगी, कुछ तो बोलो नाथ जी,
रोम-रोम है हर्षित मेरा, पुलकित तन मन प्राण जी।

मोह की बात नहीं है भगवन्, गुरुभक्ति की प्रीत है,
समझो मेरी मनोभावना, श्रद्धा के ये गीत हैं,
गुरु आज्ञा में रहूँ समर्पित, पाऊँ मोक्ष निधान जी,
रोम-रोम है हर्षित मेरा, पुलकित तन मन प्राण जी।

गुरु हस्ती ने इस बालक की, तुमको दी जिम्मेदारी,
आराधक ना बने वहाँ तक, करना इसकी रखवारी,
जन्म दुबारा ना लूं भगवन्, देना ऐसा ज्ञान जी,
रोम-रोम है हर्षित मेरा, पुलकित तन मन प्राण जी।

क्या यश गाऊँ मान गुरु का, मुझे सदा आशीष दिया,
बिन बोले ही मौन भाव से, जीवन का निर्माण किया,
जो कुछ भी हूँ जैसा भी हूँ, चरणों का हूँ दास जी,
रोम-रोम है हर्षित मेरा, पुलकित तन मन प्राण जी।

चौदह रत्नों के तुम स्वामी, नवनिधि के दर्शन पाए,
धर्म चक्रवर्ती हो गुरुवर, महेन्द्र-प्रमोद संग भाए,
संघ नायक हीरा गुरुवर को, बारम्बार प्रणाम जी,
रोम-रोम है हर्षित मेरा, पुलकित तन मन प्राण जी।

भ्रमण किया दक्षिण भारत का, जगी चेतना हरदिल में,
तुमने वो इतिहास बनाया, छाया सुयश नभ तल में,
वाह रे हस्ती पट्टधर, खूब दिपाया नाम जी,
रोम-रोम है हर्षित मेरा, पुलकित तन मन प्राण जी।

मेरी श्रद्धा के तुम स्वर हो, मेरी श्रद्धा के हो प्राण,
आज चमन है संघ तुम्हीं से, तुम हो संघ के एक वरदान,
वर्ष हजारों जीओ गुरुवर, अन्तर के अरमान जी,
रोम-रोम है हर्षित मेरा, पुलकित तन मन प्राण जी।

कभी अवज्ञा हुआ अविनय, अज्ञ समझ कर माफ करें,
सुख साता की करूँ पृच्छना, कितने लम्बे तुम विचरे,
समता से सब परीषह झेले संयम दृढ़ चट्टान जी,
रोम-रोम है हर्षित मेरा, पुलकित तन मन प्राण जी।

कितना ऊँचा संघ का गौरव, पाए दो-दो पूज्य महान्,
इक दूजे के दोनों पूरक, दोनों हस्ती की पहचान,
चरण वंदना करता गौतम, स्वीकारो भगवान जी
रोम-रोम है हर्षित मेरा, पुलकित तन मन प्राण जी।

आचार्य हस्ती जन्म-शती

गुरुवर आपके दर्शन से

श्री अजित एच. जैन रांका

कर्मों की जंजीर को तोड़ा, पापों से मुँह मोड लिया।
गुरुवर आपके दर्शन से, भक्तों का जीवन सफल हुआ ।।1 ।।

जीवन में 'विश्वास' जगा और 'मुक्तिपथ' प्रशस्त हुआ।
स्वाध्याय की महिमा फैली, 'सामायिक' का 'संघ' बना ।।2 ।।

'रत्नवंश' की परम्परा का, उज्ज्वल दीप प्रदीप्त हुआ।
आसमान में चमका सूरज, जग में ज्ञान प्रकाश हुआ ।।3 ।।

पीपाड़ शहर में जन्म हुआ था, 'माँ' 'रूपा' के लाल का।
ली दीक्षा अजमेर शहर में, शोभा गुरुवर पाया था ।।4 ।।

'जनसमूह' के बीच में जाकर, विषधर को प्रतिबोध दिया।
'जीवदया' का ऐसा अनूठा, गुरुवर ने आदर्श दिया ।।5 ।।

खाली हाथ ना जाऊँ यहाँ से, संघ से यह अनुरोध किया।
'संथारा' लेकर गुरुवर ने, अंतिम ध्येय को साध लिया ।।6 ।।

कैसी 'सजगता' जीवन में थी, संयम के उस प्रहरी की।
कितनी विमलता थी चित्त में, 'गुणिषु प्रमोदं' भाव था ।।7 ।।

'अजय' भक्तियुत करे प्रार्थना, कृपा सिंधु दीजे 'वरदान'।
हम 'भक्तों' पर कर अनुकम्पा, दीजे दर्शन बारंबार ।।8 ।।

हम सबकी है यही 'कामना', गुरुवर देना आप ही साथ।
'जनम', जनम में बनकर 'गुरुवर', करना सबका 'खेवापार' ।।9 ।।

-भडगांव, जिला-जलगांव (महा.)

प्रवचन

विचार-आचार से पावन संघ

साध्वी प्रमुखा मैनासुन्दरी जी म.सा.

21 फरवरी 2010 को श्रावक संघ, श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् के प्रमुख पदाधिकारियों के जोधपुर पधारने पर शासनप्रभाविका जी द्वारा प्रदत्त उद्बोधन का संकलित रूप।-सम्पादक

संघ सदस्यों का परम कर्त्तव्य है कि वे संघ व संघनायक के प्रति सदा समर्पित रहें। जहाँ समर्पण भाव होता है वहाँ संगठन सुरक्षित रहता है। शासन सेवा का व्रत ढ़ंककुमार की तरह होना चाहिए। संघ सेवा का कार्य महानिर्जरा का कारण है। शिक्षार्थी-संघ में कौनसे साधु-साध्वी किस रुचि के अनुरूप आगमों, थोकड़ों अथवा संस्कृत-प्राकृत का अध्ययन करना चाहते हैं, उनकी समुचित व्यवस्था करनी चाहिए। स्वयं जानकार है तो समय का भोग देकर पढ़ावें। यह भी निर्जरा का हेतु है।

जो व्यक्ति संसार से उदासीन है, संसार को कांटों की झाड़ी मानता है, "यह संसार दुःखों की झाड़ी, उलझ-उलझ मरि जाना रे" कथन पर चिन्तन करता है, दुःखों से मुक्त होना चाहता है, संयम का इच्छुक है। किन्तु कौटुम्बिक जनों की विघ्न बाधा के कारण जिसे दीक्षा हेतु छुट्टी नहीं मिल रही है, आप प्रेमपूर्वक बिना प्रलोभन के उन्हें समझाकर दीक्षा दिलाने में सहयोगी बनें, क्योंकि यह कर्म-निर्जरा का कार्य है। धन अर्जन की दलाली करने वालों की कमी नहीं है, पर धर्म की दलाली श्रेणिक एवं कृष्ण की तरह करना सीखें।

साधु-साध्वी के आरोग्य की वृद्धि में भी पूरा-पूरा सहयोग करना भी कर्म-निर्जरा का हेतु है। उत्तराध्ययन के 29 वें अध्ययन में प्रश्न है -गुरु एवं स्वधर्मी की सेवा का क्या फल होगा? उत्तर में कहा गया-विनय की प्राप्ति होगी, आशातना का त्याग होगा, चार गति का अन्त होगा तथा प्रशंसा प्राप्त होगी। हमें अपने संघ की शोभा एवं गौरव बढ़ाना चाहिए,अपनी अच्छाइयों को प्रकट करने का हमें अधिकार है, पर दूसरों को बुरा बताने का अधिकार नहीं है। एक-एक व्यक्ति मिलकर परिवार बनता है। अनेक परिवारों का मिलन समाज है। ईंट व चूना

मिलने से अच्छी दीवार, अनेक धागों के मिलने से सुन्दर वस्त्र, बहुत से तिनकों के मिलने से अच्छा झाडू या मजबूत रस्सा बन जाता है। एक-एक बून्द मिलने से कासार, एक-एक फूल मिलने से गुलदस्ता तथा एक-एक अक्षर मिलने से मंत्र बन जाता है। इसी प्रकार अच्छे धर्मनिष्ठ मनुष्य मिलने से अच्छे समाज का निर्माण हो जाता है।

जिस मकान की नींव गहरी एवं मजबूत होगी, उसको बड़े-बड़े तूफान भी गिरा नहीं सकते। इसी प्रकार संघ की नींव में आचार-विचार की प्रधानता होगी तो संघ सुरक्षित रहेगा। कुंभकार के पास चाक न होगा तो बर्तन कैसे बनायेगा, लेखक के पास पेन न होगा तो वह कैसे लिखेगा, दर्जी के पास कैंची न होगी तो वस्त्रों को सुन्दर रूप कैसे देगा ? वैसे ही अच्छे संस्कार का निर्माण ही जीवन को अच्छा बना सकता है। अतः प्रारम्भ से ही अच्छे संस्कारों का निर्माण करने की चेष्टा करें। प्राचीनकाल में तो माताएँ गर्भ में ही संस्कार घड़ देती, अथवा जन्म के साथ ही घड़ देती, परन्तु आज जन्म हॉस्पिटल में, शिक्षण होस्टलों में, शादी होटलों में तथा मृत्यु अस्पतालों में होती है। ऐसी परिस्थिति में अच्छे संस्कारों का जन्म होना कठिन है। प्राचीन काल में गुरुकुलों के माध्यम से संस्कारों का निर्माण होता था। आज जैन छात्रावासों की आवश्यकता है। अन्यथा अच्छे संस्कारों का दीवाला निकल जायेगा। क्योंकि "मम्मी रह गई फैशन में, पापा रह गये व्यसन में। बच्चे रह गये टयूशन में, अब कौन आवे जिनशासन में।" अन्त में माता-पिता की नींव मजबूत होगी तो भयंकर तूफान भी मकान का कुछ बिगाड़ नहीं कर सकेंगे। रत्नसंघ महान् गौरवशाली है, जिसकी खूबियों से आप-हम खूब परिचित हैं। उसकी एक-एक अच्छाइयों से हम गौरवान्वित हैं। उस संघ में आपको हमको जन्म मिला और आचार्य हस्ती के शासन में आसन मिला। आचार्य हस्ती शताब्दी आध्यात्मिक चेतना वर्ष में संघ की उन्नति, तरक्की और विकास के लिए अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष सुमेरसिंह जी बोथरा से लेकर सभी पदाधिकारीगण, संघ, संघनायक व सम्प्रदाय की जाहोजलाली में प्रयत्नशील हैं। स्थान-स्थान पर मीटिंग पर मीटिंग करके सुप्त संघ को जागृत करने हेतु आज जोधपुर इस सभा में उपस्थित हैं। ■

Research Paper

The Historical Development of Jaina-Yoga-System and Impacts of Other Yoga-Systems on it; A Comparative and Critical Study

Prof. Sagarmal Jain

Jainism, like the other religions of Indian-origin attaches supreme importance to yoga and dhyāna (meditation) as a means to spiritual advancment and emancipation. According to Uttarādhyayansūtra, one can know the real nature of self through right knowledge; can have faith on it through right-vision or right attitude. Similarly one can have control over it through right conduct, but the purification of self can only be achieved through right tapas.[1] As per jainism the tapas (penance) have two supreme wings, which are known as dhyāna (meditation or concentration) and kāyotsarga i.e. non-attachment towards one's own body as well as all wordly belongings. Jaina believes that emancipation, which is the ultimate goal of our life, can only be achieved by only śukla-dhyana, which is the state of pure self-awareness of knower ship. Thus according to Jainism the emancipation can only be achieved by dhyāna, which is also the seventh step of Yoga-system of Patañjali. Thus we can say that the dhyāna and yoga are the essential factors of Jaina religious practices.

If we want to know the brief historical account of the development of Jaina yoga, its meditational methods, and the impacts of other Indian yoga systems on it, first of all we should divide the development of Jaina-Yoga system into following five stages:-

1. Pre canonical age (before 6th century B.C.)
2. Canonical age (5th century B.C. to 5th century A.D.)
3. Post canonical age (6th century A.D. to 12th century A.D.)

4. Age of Tantra and Rituals (13^{th} to 19^{th} century A.D.)
5. Modern age (20^{th} century)

1. Pre canonical age:-

The concepts of Yoga and meditation are as early as Indian culture it self. From the earliest period, we find two types of evidences regarding yoga and meditation-(1) sculptural evidences and (2) literary evidences. For the first phase of Yoga and meditation, sculptural and literary both types of evidences are available. But it is very difficult to say that these evidences support the Jaina method of Yoga and meditation. We can only say that this earliest phase of Yoga and meditation belongs to śramanic culture of which Jainism, Buddhism, Ājīvakas, Sāmkhya-Yoga as well as some other minor śramanic trends are the offspring. For this reason every Indian system of dhyāna and yoga has right to claim it, as its own. Due to this, some Jaina scholars also made the claims that these evidences belong to their own tradition. The earliest sculptural traces tegarding Yoga and meditation are found from the Mohanjodaro and Harrappā. In the excavation of Mohanjodaro and Harrappā some seals are found, in them Yogis have been shown as sitting or standing in the meditational posture.[2]

It proves that in that period meditative and Yogic practices had been prevailed. The culture of Mohanjadaro and Harrappā may be called as the earliest state of the Sramanic culture of India. It is clear that while the Vedic tradition was engaged in performing the yajñas or sacrifices the śramanic tradition was taking interest in yogic and meditative practices. I am of the opinion that this early śramanic tradition, in due course of time had been divided into various branches such as Jainism. Buddhism, Sāṁkhya Yoga and Ājīvaka along with some other sects. Though the Upanisadic trend of that period had tried to make a synthesis between the Śramanic and Vedic traditations, yet it was mostly dominated by Śramanic tradition. The Sāṁkhya and

Yoga systems may also be the result of this synthesis. But we must be aware of the fact that in them śramanic features are dominating.

Impact of other systems on Jaina yoga in this period:-

In the first phase i.e. in the pre-canonical age it is very difficult to trace the impact of other systems of yoga on jaina yoga, because in this period we do not find any information about any of the organized schools of yogic and meditational practices, except that of the Ramaputta, from whom Lord Budha had learned some methods of meditation. It is interesting to know that he was also mentioned in some Jaina canonical texts, such as Sutrakrtanga, Antakrtadaśanga and Rsibhāsita.[3] I believe that vipassanā and preksā meditation of that period may basically belong to Ramaputta in their original forms.

2. Canonical age:-

Though traditionally it is believed that Jaina Yoga and meditative practices are originated by. Rsabhadeva, the first tirthankara. But so far as the historical evidences are concerned, the earliest mention of yogic practices and meditaion was found in early jaina cononical works such as Ācārāṅga, Sutrakṛtāga and Rsibhāsita. In Upadhānaśruta, the ninth chapter of Ācārānga, we have the records of those yogic and the meditative practices, which were followed by Lord Mahavira himself, in which we find the trāṭaka-method of meditation,[4] In Sūtrakṛtānga's sixth chapter Preksā meditation was also mentioned. In it, the Lord Mahavira was presented as the best meditator or Seer, who knows the real nature of religious practices, steadiness of mind and the preksā (Self-awareness).[5] In eighth chapter of Śutrakṛtānga it is also mentioned that for the emancipation the ultimate means are the dhyans, yoga and titiksā (tolerance).[6]

The yogic and meditational practicess at their end can be completed by giving up the attachment towards one's own body-(8/26), which is known in Jainism as kāyotsarga.

In the second phase, which is known as canonical age, some common features can be seen between Patañjali's eight-fold yoga system and Jaina yoga system. Patañjali's eight-fold yoga system has the following steps of Yogic practices-

1. Yama (vows)
2. Niyama (supporting vows)
3. Asana (bodily postures)
4. Prāṇāyāma (controlling of respiration)
5. Pratyāhāra (controlling of sense organs)
6. Dhāraṇā (controlling of mental activities)
7. Dhyāna (concentration of mind) and
8. Samādhi (equanimity of mind or ceasation of mind).

In Jaina canonical works we also find these eight limbs of Yogic Sādhanā, but in some different names. Ācārya Atmārāmaji of Sthānakavāsi Jaina sect has made a comparative study of these eitht limbs of Patañjali's Yoga system with Jaina system of sādhanā in his book namely "Jaina agamom mem aṣṭānga yoga." According to his comparative statements five yamas of Patañjali are also acceptable to Jainas in the name of five Mahāvratas. The names of five mahāvratas are also the same in Patañjali's Yoga-sutra. In Jaina canon these five mahavratas are:- 1. Ahimsā (Non-violence), 2. Satya (Truthfulness), 3. Asteya (Non-stealing), 4. Brahmacarya (Celebacy) and 5. Aparigraha (Non-possession). Patañjali in his yoga-sutra also mentioned these five yamas in the name of five mahāvratas.

2. Niyam:- The Second step of yogic-sādhanā is Niyama. In Patañjali's Yogasutra these five niyamas are prescribed as following-1. Sauca (piousness), 2. Santoṣa (satisfaction), 3. Tapas (penance), 4. Svādhyāya (Study of the scriptures), and 5 Iśvara Praṇidhāna (meditation of the nature of god or pure self)

In Jain Scriptures these five niyamas are also accepted in some different names. In Bhagawatisutra Lord

Mahāvira explains to Somila that my life style is of six types i.e. 1. Tapas, 2. Niyama, 3. Samyama, 4. Swādhyāya, 5. Dhyana and 6. Observance of essential duties with self awareness (Āvaśyaka).[7] In these, tapas and swādhyāya are mentioned in the same name whereas samtosa is in the name of samyama and Iswarapranidhāna as dhyāna. In isibhāsiyaim's first chapter we find the mention of sauca. Though by sauca, Jainas do not mean bodily-purity, but they give stress on mental purity i.e. the piousness of the heart. Jainism as well as yoga sūtra of Patañjali both accepts that these niyamas are the supporter of the yamas or mahāvratas. We can also say that the twenty five bhāvanās of five mahavratas or thirty two yoga samgraha of Jainism can also be considered as niyamas of Patañjali.

3. Asana- The third limb of yogic-sādhanā of Patañjali is Asana (Bodily-postures). Many of these āsanas are accepted in Jainism in the name of kāyakleśatapa, the sixth kind of external tapas. In Jaina scriptures such as Bhagawati, Aupapātika and Dasāsrutaskandha, we also find the names of various types of Asanas (bodily postures).[8] In Jaina scriputres it is also mentioned that Lord Māhāvīra attained the kevala jnāna in goduhāsana.[9]

4. Prānāyāma- The fourth limb of Patañjali's yoga system is Prāṇāyāma. Regarding this limb we do not find any clear instructions in Jaina-canonical works,only in the commentary of Āvaśyakasutra it is mentioned that one should observe, the meditaion (Kāyotsarga) of one thousand respirations at the occasion of yearly penitential retreat (pratikramaṇa). In the same way five hundred respiration's meditation at fourth monthly penitential retreat (pratikramaṇa), two hundred and fifty respiration's meditation at the time of fortnightly prātikramana, one hundred at daily pratikramana and fifty at the time of nightly pratikramana.[10] In my opinion this is the same as ānāpāna-sati of Ācarya Mahāprajña of jaina terāpantha sect. I do not find

any reference of Kumbhaka, puraka and recaka prānāyāma in early Jaina canonical texts, though in the later period Jaina Ācārya Śubhacandra and Hemacandra in their works, respectively Jnanārnava and Yogasāstra mentioned the various types of Prāṇāyāmas.[11]

5. Pratyāhāra- The fifth limb of Patañjali's Yogasutra is pratyāhāra. Pratyāhāra means to have the control over one's sense organs. This limb has been widelyu discussed in Jaina canon in the name of Pratisamlīnatā as a sixth kind of external austerity. In various Jaina āgamas this fifth limb of yoga has been described in the name of Indriya-samyama. The thirtieth chapter of Uttarādhyayanasutra discusses it in detail,[12] regarding this limb we can have many references in various Jaina canonical works.

6. Dhāranā- The sixth, seventh and eighth limbs of Patañjali's Yoga system are respectively Dhāranā, Dhyāna and Samādhi. Though in the works of Jaina logic, the fourth kind of matijnāna is known as dhāranā. But the concept of dhāranā or retention in Jaina logic is some how different from Patañjali's yoga system. In Patañjali's yoga system dharana means the concentration of mind. While in Jainism dharana means rentention of the experience. The Patañjali's concept of dhāraṇā is some how similar to the Jaina concept of dhyāna.

7. Dhyana- In Jaina tradition dhyāna, generally means the concentration of mind on some object or mental image. According to them our thought and its instrument, the mind are restless. The regulation and concentration of these .is called dhyāna. Though Jainism accepts four kinds of dhyana i.e. (1) Arta-dhyāna concentration of mind on fulfilment of wordly desires, (2) Raudra-dhyāna-concentration of thoughts on violent activities, (3) Dharma-dhyāna-concentration of mind on auspicious thoughts or for the well being of one's own self as well as of others, (4) Sukla-dhyāna- in sukla-dhyāna mind gradually shortens its field of concentration and at last becomes steady and motionless or

nirvikalpa.

8. Samādhi- According to Patañjali samādhi is the motionless state of mind, body and speech, in otherwords it is the state of trance in the connection of self with the outer world is broken.[13]

In Jainism Patañjali's three internal limbs of yoga, such as dhāranā, dhyāna and samādhi are attached to Jaina concept of meditation. Dhāraṇā and dhyāna may be summed up in various stages of dharma-dhyāna and samādhi in sukla-dhyāna. In other way we can also sum up Patañjali's dhāranā and dhyāna into Jaina concept of dhyāna and samādhi into Jain concept of kāyotsarga. Here one should know, that in Patañjali's yoga system dhāranā, dhyāna and samādhi, these three are considered as internal limbs of yogic sādhanā and being them internal limbs, they are not independent from each other. But they have some connective link such as without dhāranā dhyāna is not possible and without dhyāna, samādhi is not possible.

Though in this canonical age meditation alongwith some other limbs of Astāṅga Yoga were in practice in Jainism, but in this age Jaina-sādhanā was centralized in three fold or four fold pāth of emancipation i.e. right faith, right knowledge, right conduct and right austerity. While considering the right conduct and right austerity as one, Umāswati and some other Jaina Acaryas prescribed the threefold path of emancipation. This threefold path of emancipatin is generally acceptable in Hindusim and Buddhism. In Hinduism it is acceptable as Bhakti-yoga, Jnāna-yoga and karma-yoga, while in Buddhism as sila, samādhi and Prajnā. We can compare right knowledge with Jnāna-yoga of Gita and Prajnā of Buddhism. Similarly right faith with Bhakti-Yoga of Gita and samyak samadhi of Buddhism and right conduct with Karma-yoga of Gita and sila of Buddhism.[14]

But here we must be aware of the fact that where as

same Hindu thinkers hold that the cultivation of any one of these three constituents is sufficient to attain emancipation, but Jaina thinkers not agreeable with them, they hold that absence of any one of these makes emancipation impossible, thus Jainism believes in the synthesis of these three yogas.

Here it is to be noted that this three fold path of Jainism can be summed up in the practice of Samayika or Samatva-yoga. For Jainas Samatva-yoga is the excellent blend of the right-faith, right knowledge and right conduct. The Uttarādhyayanasutra mentions:

Agunissa natthi mokkho,
natthi amokkhassanivbanam
(28.30)

Right knowledge is impossible without a right view-point or faith and without right knowledge, right conduct is not possible and without right conduct, liberation remains unattainable. Thus all the three are needed for the attainment of emancipation. **(Continue)**

References:-

1. Uttarādhyayana-28/35
2. Mohenjodaro and Indus Civilisation, John Marshals, VRI, Page 52
3. (A) Sutrakrtānga 3/62
   (B) Sthānānga 10/113
   (C) Rsibhāsita
4. Acārānga 9/5
5. Sutra krtānga 6/3,6/17
6. Ibid- 8/27
7. Bhagawati sutra- Somila
8. Dasāsruta skandha 6/3
9. kalpasutra, 81
10. Āvaśyaka curni, Second Part, page 265
11. (A) Jnānārnva, सर्ग 37-40
    (B) Yoga sāstra 7/8-9
12. Uttarādhyayana 32/21-106
13. Yoga sutra
14. Jaina. Baudha Aura Gita Ke Acaradarsanom kā Tulanātmaka Adhyayana -Sagarmal Jain, Part-II page 1

प्रासङ्गिक

आधुनिक विश्व के परिदृश्य में जैन धर्म-दर्शन (2)

डॉ. धर्मचन्द जैन

दुनिया के दो रूप एवं परिवर्तन के दो रूप-

आज दुनियाँ दो तरह की अनुभव में आ रही है, एक वह जिसमें हम सर्वविध व्यवहार करते हैं तथा दूसरी सी.डी., डी.वी.डी. एवं इण्टरनेट की दुनियाँ। एक है Real world तथा दूसरी है Virtual world. दोनों में मनुष्य की बुद्धि एवं भावनाओं का प्रयोग होता है। इण्टरनेट भी संवाद का माध्यम बन गया है। एक डी.वी.डी., पेन ड्राइव में कई ग्रन्थों को समेटा जा सकता है। वह Virtual world है। यह सब पुद्गल की शक्ति का खेल है। जैनागम भगवती सूत्र (शतक 16 उद्देशक 8) में पुद्गल परमाणु की अस्पृशद् गति का उल्लेख है, जिसके अनुसार एक परमाणु लोक के एक छोर से दूसरे छोर तक एक समय में पहुँच जाता है। समय को जैनदर्शन में काल की सूक्ष्मतम इकाई स्वीकार किया गया है तथा पलक झपकने जितने काल में असंख्यात समय व्यतीत हो जाते हैं। पुद्गल की विशेषताओं को आज विज्ञान अपने प्रयोगों के माध्यम से प्रकट कर रहा है। जैन दर्शन के अनुसार विश्व षड्द्रव्यात्मक है। षड्द्रव्यों में धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय एवं काल में हुए परिवर्तन हमें परिलक्षित नहीं होते। हमें जो परिवर्तन आधुनिकता के रूप में अनुभव में आता है वह विशेषतः पुद्गल द्रव्य एवं जीवद्रव्य से ही सम्बन्ध रखता है। पुद्गल में परिवर्तन दो तरह से आते हैं- एक तो स्वतः परिवर्तन होता रहता है, जिसे आगम की भाषा में वैस्रसिक परिवर्तन कहा जाता है तथा कुछ परिवर्तन मनुष्य सदृश जीवों के प्रयत्न से जन्य होते हैं, इन्हें प्रयोगज परिवर्तन कहते हैं। हमें जो दुनिया में पुद्गल के चमत्कारी परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं वे प्रयोगज परिवर्तन हैं। मनुष्य भी उनके साथ स्वयं को योजित करता रहता है, किन्तु इन परिवर्तनों से सृष्टि के अनेक प्राणियों को कष्ट का अनुभव होता है। उनकी प्रजातियों पर संकट खड़ा होता है। प्रकृति की छेड़छाड़ का परिणाम जीव-जगत् को देर सवेर भोगना ही पड़ता है। जीव भी परस्पर उपग्रह के द्वारा एक-दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं।

पं. चैनसुखदास न्यायतीर्थ व्याख्यानमाला, जयपुर में 24 जनवरी, 2010 को प्रदत्त व्याख्यान पर आधारित।

तीर्थङ्कर वाणी : सर्वहितकारिणी–

जैन धर्म–दर्शन में तीर्थंकरों के द्वारा जो कहा गया है वह मात्र मानवजाति के लिए नहीं, अपितु प्राणिमात्र के लिए हितकारी है। कुन्दकुन्दाचार्य बोधपाहुड में कहते हैं– **छक्कायहियंकरं उत्तं**।(बोधपाहुड, 60) पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, वायुकायिक, तेजस्कायिक, वनस्पतिकायिक एवं त्रसकायिक इन सभी षड्निकायिक जीवों के लिए तीर्थंकरों की वाणी हितकारी है। पर्यावरण में जो आज भयंकर प्रदूषण बढ़ रहा है, उसका कारण पृथ्वीकायिक आदि जीवों का हनन एवं पीड़ा है। आज पृथ्वी को बचाने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है, वातावरण में बढ़ते कार्बन डाइऑक्साइड पर चिन्ता व्यक्त की जा रही है, ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से विश्व आक्रान्त है, पीने योग्य पानी का संकट खड़ा हो गया है, इलेक्ट्रानिक एवं प्लास्टिक उत्पादों का प्रदूषण बढ़ रहा है। जैनदर्शन में जीवरक्षा के द्वारा एवं संवेदनशीलता के द्वारा इन समस्याओं का समाधान खोजा जा सकता है। प्रश्नव्याकरण सूत्र में कहा गया है– "**सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठयाए भगवया पावयणं सुकहियं**।" (प्रश्नव्याकरण सूत्र, 2.1) समस्त जगत् के जीवों की रक्षा एवं दया के लिए भगवान ने प्रवचन फरमाया था। भगवान की वाणी को ग्रहण करने वाला जैन न केवल मानवजाति की रक्षा में सन्नद्ध होता है, अपितु वह एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय एवं पशु–पक्षी, सरीसृप आदि अन्य जीव–जन्तुओं के प्रति भी संवेदनशील होता है। उन्हें भी वह आत्मतुला पर तोलता है। जिस प्रकार मुझे पीड़ित किए जाने पर मुझे दुःख का वेदन होता है उसी प्रकार अन्य जीवों को पीड़ित किए जाने पर उन्हें भी दुःख का वेदन होता है, अतः मैं उनके प्रति हिंसा का व्यवहार न करूँ।

अहिंसा का सिद्धान्त त्रस एवं स्थावर समस्त प्राणियों का क्षेमंकर है। प्रश्नव्याकरणसूत्र में स्पष्ट निर्देश है– "**अहिंसा तसथावरसव्वभूयखेमंकरी**।" (प्रश्नव्याकरण सूत्र 2.1) बृहत्कल्पभाष्य में कहा गया है कि जैसा व्यवहार तुम अपने प्रति चाहते हो वैसा व्यवहार दूसरों के प्रति करो तथा जैसा व्यवहार अपने प्रति नहीं चाहते हो, वैसा व्यवहार दूसरों के प्रति भी मत करो–

जं इच्छसि अत्पणत्तो, जं च ण इच्छसि अत्पणत्तो।
तं इच्छ परस्स वि, एत्तियगं जिणसासणं॥

–बृहत्कल्प भाष्य, 4584

प्राणिमात्र को जीने का अधिकार-

आज विश्व में मानवाधिकार की बात चलती है, किन्तु जैन धर्म-दर्शन तो प्रत्येक प्राणी को जीने का अधिकार प्रदान करता है। आचारांग सूत्र में प्रभु महावीर कहते हैं- **"सव्वे पाणा पियाउया सुहसाया दुक्खपडिकूला, अप्पियवहा पियजीविणो जीविउकामा सव्वेसिं जीवियं पियं।"** (आचारांग सूत्र, 1.2.3)सब प्राणियों को आयुष्य प्रिय है, सबको सुख प्रिय एवं दुःख प्रतिकूल लगता है, सबको वध अप्रिय एवं जीवन प्रिय है, सब जीव जीना चाहते हैं। अतः सबके जीवन के अधिकार की रक्षा करें, इस प्रकार की संवेदनशीलता आचारांग सूत्र जागरित करता है। यही नहीं आचारांग सूत्र में यह भी कहा गया है कि संसार का कोई प्राणी हन्तव्य नहीं है, शासन करने योग्य एवं गुलाम बनाने योग्य नहीं है, कोई भी प्राणी परिताप देने योग्य एवं अशान्त बनाने योग्य नहीं है। (आचारांग, 1.4.2 का अर्थ) आचारांग का यह सूत्र स्पष्ट कर रहा है कि जैन दर्शन में प्रत्येक प्राणी के जीवन के प्रति आदर एवं सम्मान का भाव है। प्रत्येक जीव को स्वतन्त्रता एवं समानता दी गई है। विश्व में आज यह संदेश पहुँचाने की महती आवश्यकता है।

खाद्य संकट एवं ग्लोबल वार्मिंग-

अमेरिकी पूर्व राष्ट्रपति जार्ज बुश ने वैश्विक खाद्य संकट (Global food crisis) एवं ग्लोबल वार्मिंग कारण के लिए भारत को दोषी ठहराते हुए कहा था कि भारत के लोग पेटू हैं, ज्यादा खाते हैं, किन्तु स्थिति का सही विश्लेषण किया जाए तो खाद्य संकट का प्रमुख कारण मांसाहार है, क्योंकि मांसाहार-उत्पादन हेतु पशुओं को अधिक अन्न खिलाकर कम मात्रा में भोज्य अंश प्राप्त किया जाता है। मांसाहार के लिए जहां अमेरिका में एक व्यक्ति के लिए एक वर्ष में लगभग 1100 किलोग्राम अन्न की खपत होती है वहाँ भारत में शाकाहारी व्यक्ति एक वर्ष में 150 किलोग्राम अन्न से अधिक नहीं खाता है। इसी प्रकार एक टन मांस प्राप्त करने के लिए जितनी भूमि में अनाज उत्पन्न किया जाता है, उससे शाकाहारी व्यक्ति को 10 से 12 टन पोषक भोजन मिल जाता है। पानी की खपत भी मांस-संयत्रों में बहुत अधिक होती है। ग्लोबल वार्मिंग का भी यह एक प्रमुख कारण है। मांसाहार के उत्पादन हेतु जल की बहुत अधिक खपत होती है तथा हरियाली की कटाई होती है जो ग्लोबल वार्मिंग का एक प्रमुख कारण बनती है।

करुणा एवं मैत्री के विकास की आवश्यकता-

जैनदर्शन का कर्मसिद्धान्त इस तथ्य को प्रबल रीति से स्थापित करता है कि मनुष्य अपने शुभ-अशुभ कर्मों के अनुरूप फल प्राप्त करता है। चित्त की किस चेतना से जीव कार्य करता है, तदनुसार उसे सुख-दुःख की प्राप्ति होती है। पर्यावरण को हम प्रदूषित करेंगे तो उसका फल भी हमें भोगना होगा। दूसरों के लिए दुःख, शोक आदि उत्पन्न करेंगे तो बदले में हमें दुःख आदि की ही प्राप्ति होगी। दूसरों के प्रति अनुकम्पा, करुणा, मैत्री आदि का व्यवहार करेंगे तो सुख एवं शांति की प्राप्ति स्वतः होगी। दूसरों से लेने का नहीं, उन्हें कुछ देने के भाव का विकास करने की आवश्यकता है।

पोप के द्वारा घोषित सात नये पाप-

आधुनिक विश्व के परिप्रेक्ष्य में मैं कैथोलिक चर्च के पोप के साक्षात्कार की चर्चा करना आवश्यक समझता हूँ, जिसमें अप्रेल 2008 में उन्होंने आधुनिक सामाजिक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर सात नये पापों को अपने धर्म में योजित किया है, वे सात पाप सामाजिक पाप (Social Sins) कहे गये हैं-

1. पर्यावरण प्रदूषण (Environmental Pollution)
2. आनुवंशिकीय छेड़छाड़ (Genetic Manipulation)
3. अनीति से अर्जित धन (Obscene Wealth)
4. निर्धनता उत्पन्न करना (Infliction of Poverty)
5. नशीले पदार्थों का व्यापार (Drug Trafficking)
6. नैतिक रूप से विवादास्पद प्रयोग (Morally Debatable Experiments)
7. मानव के प्राकृतिक मौलिक अधिकारों का हनन (Violation of the fundamental rights of Human Nature)

ईसाई धर्म में पहले से सात पाप प्रचलित हैं- काम, क्रोध, आलस्य/अकर्मण्यता, मान, लोभ, पेटुपन और ईर्ष्या। इन सात पापों में नये सात पापों को जोड़कर पोप ने ईसाई धर्म की प्रासंगिकता में अभिवृद्धि की है। इससे न केवल कैथोलिक ईसाइयों में अपितु सम्पूर्ण विश्व में एक अच्छा संदेश गया है। आधुनिक विश्व की जो प्रमुख समस्याएँ मानव जाति के लिए घातक बनकर उभरी

हैं, उन्हें नियंत्रित करने में पोप की नूतन दृष्टि एवं घोषणा को स्वागत योग्य माना जा सकता है। धर्म तो यह ही निरूपित कर सकता है कि क्या कार्य उचित है एवं क्या अनुचित, कौनसा कार्य करणीय है एवं कौनसा कार्य अकरणीय। पाप की श्रेणि में डाल देने पर वे कार्य अकरणीय हो जाते हैं।

ये सात पाप जैनधर्म के लिए नये नहीं–

जैनधर्म में अहिंसा का इतना व्यापक स्वरूप है कि पर्यावरण प्रदूषण का कार्य स्वतः ही हिंसा के रूप में पाप की श्रेणि में समाविष्ट हो जाता है। नशीले पदार्थों का व्यापार जैन धर्म में पन्द्रह कर्मादानों के अन्तर्गत त्याज्य है तथा नशे का सेवन सप्त कुव्यसनों के अन्तर्गत त्याज्य बताया गया है। जैन धर्म–दर्शन मनुष्य के प्राकृतिक मौलिक अधिकारों का संरक्षक है। वह उन अधिकारों के हनन को हिंसा में समाविष्ट करता है। अनीति से अर्जित धन को अस्तेय व्रत के अन्तर्गत लिया गया है। मानव जीन के साथ छेड़छाड़ अनैतिक है एवं हिंसक कार्य है। नैतिकरूप से विवादास्पद प्रयोग भी हिंसादि पापों का हिस्सा हैं। निर्धनता उत्पन्न करना, दूसरों का शोषण करने रूप पाप हिंसा से सम्बद्ध है। धन का प्रदर्शन भी पाप की कोटि में ही आता है, क्योंकि यह समाज में मिथ्या अहंकार को प्रचारित करने के साथ गलत आदतों को जन्म देता है। इस प्रकार जैन धर्म में पहले से पापों का व्यापक विचार किया गया है। ईसाई धर्म के प्राचीन सात पापों में हिंसा, मृषावाद, चौर्य, मैथुन एवं परिग्रह को पाप की श्रेणि में नहीं लिया गया है, इसलिए उन्हें आधुनिक विश्व की दृष्टि से नये पापों की गणना करानी पड़ी। जैनधर्म में पहले से 18 पापों की सूची है। यह अवश्य है कि पोप के द्वारा निरूपित इन पापों को सामाजिक रूप प्रदान किया गया है, क्योंकि ये पाप समाज के लिए अहितकारी हैं, किन्तु जैनधर्म में पापों का व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्तर पर विभाजन नहीं किया गया है, क्योंकि हिंसादि अनेक पाप व्यक्तित्व एवं सामाजिक दोनों प्रकार की हानि करते हैं, अतः उन्हें दोनों दृष्टियों से ही त्याज्य समझना चाहिए।

तनाव की समस्या के निराकरण की दृष्टि–

'तनाव' मनुष्य की आज बहुत बड़ी समस्या है तथा इस समस्या का निराकरण आध्यात्मिक मूल्यों को जीवन में स्थान देने पर सरलता से किया जा सकता है। आध्यात्मिकता के साथ मनुष्य की चेतना का विकास होता है। उसमें सत्य को समझने एवं आचरण में लाने की रुचि जागृत होती है अथवा सम्यग्दृष्टि का विकास होता है। यह सम्यग्दृष्टि बाह्य पदार्थों के प्रति उसके आकर्षण पर विराम

लगाती है। वह फिर उन पदार्थों के चिपटता नहीं है, उनमें उसकी जीवनबुद्धि नहीं रहती है, अपितु उनसे दूर रहकर भी निज ज्ञान के प्रकाश में आनन्द का अनुभव करता है। वह फिर बाह्य पदार्थों का उपयोग तो करता है, किन्तु उनके प्रति आसक्त नहीं होता। सम्यग्दृष्टि का ज्ञान सम्यग्ज्ञान होता है। सम्यग्ज्ञान का स्वरूप समणसुत्तं में इस प्रकार निरूपित किया गया है-

जेण तच्चं विबुज्झेज्ज, जेण चित्तं णिरुज्झदि।
जेण अत्ता विसुज्झेज्ज, तं णाणं जिणसासणे।।
जेण रागा विरजेज्ज, जेण सेएसु रज्जदि।
जेण मित्ती पभावेज्ज, तं णाणं जिणसासणे।।

-समणसुत्तं

जिससे तत्त्व का बोध होता हो, चित्त का निरोध हो एवं आत्मा विशुद्ध हो, जिनशासन में वह ज्ञान है। जिस बोध से व्यक्ति राग से विरक्त बने, श्रेय तत्त्व में अनुरक्त बने तथा मैत्रीभाव का संचरण हो, वह जिनशासन में ज्ञान है। यह ज्ञान ही सम्यग्ज्ञान के रूप में जाना जाता है।

आचार्य विद्यासागरजी के शब्दों में-

ज्ञान का पदार्थ की ओर
ढुलक जाना ही
परम आर्त पीड़ा है
और ज्ञान में पदार्थों का
झलक आना ही
परमार्थ की क्रीड़ा है।

-मूकमाटी, पृ. 124

पदार्थों की ओर जो हमारा आकर्षण बना हुआ है वह आर्त्तध्यान को ही उत्पन्न करता है। इष्ट के संयोग एवं अनिष्ट के वियोग की आकांक्षा लिए व्यक्ति आर्त बना रहता है, कभी उसकी तीव्रता हो तो रौद्रध्यान में पहुंच जाता है। आर्त एवं रौद्रध्यान चित्त की दुःखद अवस्था के प्रतीक हैं। जो पदार्थों के प्रति ममत्व एवं अधिकार लालसा को समेट लेता है उसे पदार्थों का ज्ञान होने पर भी पीड़ा नहीं होती, क्योंकि उसमें पीड़ा का कारण राग-द्वेष एवं मोह नहीं है।

आज मनुष्य स्वतंत्रता के साथ फ्री-विल (Free will) के नाम पर स्वच्छन्दता का वरण कर रहा है, किन्तु फ्री-विल उसके सुख एवं शांति का साधन

न बनकर दुःख, निराशा एवं अवसाद के थपेड़ों की निमित्त बन जाती है। इस फ्री-विल के साथ भी मनुष्य को सम्यग्दृष्टि एवं विवेक का प्रयोग करने की आवश्यकता है। इच्छाओं एवं आकांक्षाओं का बिना सम्यग्ज्ञान के कभी अन्त नहीं होता। सम्यग्ज्ञान ही इन पर लगाम लगाता है।

जैन धर्म : सर्वोदय तीर्थ–

आचार्य समन्तभद्र ने जैन धर्म–दर्शन को सर्वोदय तीर्थ के रूप में प्रस्तुत करते हुए कहा है–

सर्वापदामन्तकरं निरन्तं सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव।

–युक्त्यनुशासन, 61

हे प्रभो! समस्त आपदाओं का अन्त करने वाला यह आपका ही सर्वोदय तीर्थ है, जिसका कोई अन्त नहीं है। जैनदर्शन में मानवजनित समस्त समस्याओं का अन्त करने का सामर्थ्य विद्यमान है, साथ ही इसमें सबका कल्याण करने का चिन्तन निहित है। मनुष्य के चित्त का शोधन ही मानवजनित समस्याओं के समाधान का आधार है, जिसे जैनदर्शन में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, भोगोपभोग परिमाण, समत्व, क्षमा, मैत्री आदि के माध्यम से खूब पुष्ट किया गया है।

जैन धर्म मानव के गौरव एवं सम्मान का रक्षक है। वह प्रत्येक मनुष्य की समानता एवं स्वतंत्रता को अपने दार्शनिक सिद्धान्तों से पुष्ट करता है। इसमें वर्ण, जाति, लिंग आदि के आधार पर किसी को धर्म से वंचित नहीं किया गया। यह अन्य धर्मों के प्रति भी सद्भावपूर्ण व्यवहार का समर्थक रहा है तथा नयवाद एवं अनेकान्तवाद के आधार पर अन्य धर्म–दर्शनों में निहित सत्य को स्वीकार करता है। नमस्कार मंत्र में 'नमो अरिहंताणं' में राग–द्वेष के विजेता प्रत्येक अरिहन्त को नमन किया गया है, किसी एक तीर्थंकर को नहीं। पाँचों पद इसी प्रकार गुणपूजक हैं, व्यक्तिपूजक नहीं। महात्मा गांधी, विनोबा भावे, आइंस्टीन आदि महापुरुषों की जैन धर्म–दर्शन पर गहरी आस्था थी।

आज भगवान् महावीर को नहीं उनके द्वारा निरूपित मूल्यों को प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता है। भगवान् महावीर उन मूल्यों से अपने आप प्रतिष्ठित हो जायेंगे। आज गांधीजी को अहिंसा एवं सत्य के प्रयोगों के कारण प्रतिष्ठा प्राप्त है, गाँधी जी की प्रतिष्ठा से अहिंसा एवं सत्य का महत्त्व नहीं है। व्यक्ति का महत्त्व उसके जीवन, कार्यों एवं मूल्यों से स्थापित होता है। अतः हमें महावीर को

प्रतिष्ठित करना है तो उनके द्वारा स्थापित मूल्यों को प्रतिष्ठित करना होगा।

संसार के प्राणियों के प्रति किस प्रकार का व्यवहार किया जाए, इसका संकेत आचार्य अमितगति ने इस प्रकार किया है-

सत्त्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव।।

-सामायिक पाठ, 1

सभी प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव हो, दुःखी जीवों के प्रति करुणाभाव हो एवं विरोधीवृत्ति वालों के प्रति माध्यस्थभाव हो। यह चिन्तन प्रत्येक मानव का हो तो उसका चित्त सरलता से निर्मल रह सकता है तथा विश्व में शान्ति एवं सहअस्तित्व का आनन्द लिया जा सकता है।

आधुनिक विश्व को जैनधर्म-दर्शन के संदेश-

जैन धर्म-दर्शन के आधुनिक विश्व के लिए अनेक संदेश हो सकते हैं, कतिपय प्रमुख संदेशों का उल्लेख किया जा रहा है।

1. कोई व्यक्ति किसी भी धर्म-दर्शन को मानने वाला क्यों न हो, उसे नास्तिक या मिथ्यात्वी समझकर उसके प्रति द्वेष एवं जुल्म मत करो।
2. पर्यावरण में किसी प्रकार के प्रदूषण को उत्पन्न करने एवं उसकी वृद्धि करने में भागीदार मत बनो।
3. पदार्थवादी एवं सुविधावादी दृष्टिकोण को त्यागकर वास्तविक आवश्यकता के अनुसार वस्तुओं का उपयोग करो।
4. आवश्यकता से अधिक संग्रह एवं परिग्रह की बुराई से बचो।
5. अपनी इच्छाओं को सीमित करो एवं उनकी पूर्ति हेतु अनीति का प्रयोग मत करो।
6. विश्व के समस्त प्राणियों के प्रति संवेदनशीलता एवं मैत्री का विकास करो।
7. दुराग्रह को छोड़ो, अनेकान्तदृष्टि से चिन्तन की प्रवृत्ति अपनाकर समस्याओं का समाधान खोजो।
8. सबके आत्म-सम्मान एवं गौरव की रक्षा करो।
9. सम्यग्ज्ञान वह नहीं है जो राग-द्वेष को बढ़ावा देता है, अपितु वह है जो इन्हें दूर करता है। ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के साथ सम्यग्ज्ञान के इस स्वरूप को महत्त्व दो।

10. अशुभ से शुभ एवं शुभ से शुद्ध की ओर जाने का प्रयत्न करो।
11. मांसाहार को त्यागो एवं शाकाहार को अपनाओ।
12. मन, वचन, शरीर एवं अन्य साधनों का दुरुपयोग नहीं, सदुपयोग करो।
13. नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों के साथ जीवन-यापन करो।
14. अपने कर्त्तव्य एवं दूसरे के अधिकारों के प्रति सजग रहो।
15. संयम धारण करो, उससे समस्त आपदाओं को जीता जा सकता है।
16. सहिष्णुता, क्षमाभाव एवं तप को अपनाओ उससे कलह के प्रसंगों को टाला जा सकता है।
17. सत्य को जानो एवं उसका आचरण करो।
18. प्रशम सुख का अनुभव करो एवं जीवन में उसे महत्त्व दो।

प्रायः लोगों को इन्द्रिय सुखों से परिचय है, या फिर वे स्वर्ग एवं मोक्ष के सुख की बातें सुनते हैं, किन्तु जैनदर्शन के ग्रन्थ प्रशमरतिप्रकरण में एक तीसरे सुख 'प्रशम सुख' की चर्चा की गई है जो हम सबको प्रत्यक्ष अनुभव में आता है। प्रशमसुख है-शान्ति का सुख, जो कषायों के क्षीण या न्यून होने पर प्राप्त होता है। क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, ईर्ष्या आदि में जब कमी आती है तो हमें प्रशमसुख का अनुभव होता है। इस प्रशमसुख के सम्बन्ध में वाचक उमास्वाति/उमास्वामी कहते हैं-

स्वर्गसुखानि परोक्षाण्यत्यन्तपरोक्षमेव मोक्षसुखम्।
प्रत्यक्षं प्रशमसुखं न परवशं न व्ययप्राप्तम्।।

-प्रशमरतिप्रकरण, 237

स्वर्ग के सुख परोक्ष हैं, मोक्ष का सुख भी परोक्ष है, किन्तु भीतर में धधकते कषायों की शान्ति से जो प्रशमसुख प्राप्त होता है, उसकी प्राप्ति में हम स्वाधीन हैं। इन्द्रियसुख में तो फिर भी पदार्थों की पराधीनता रहती है, किन्तु प्रशमसुख में तो कोई परवशता नहीं है। इसकी दूसरी विशेषता है कि इसके लिए कोई धन का व्यय नहीं करना पड़ता, बिना व्यय के ही यह प्राप्त हो जाता है। इस प्रशम सुख के अनुभव का जितना विस्तार होता जायेगा तो मोक्ष का सुख भी प्राप्त हो ही जाएगा।

-आचार्य एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

अमरत्व का वह उपासक (4)

आलेखन - श्री सम्पतराज चौधरी

श्रद्धेय मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के विशिष्ट गुणों का प्रशस्ति गान एवं उनके प्रति अपने अहोभाव चर्चा-वार्ता में समय-समय पर व्यक्त किये। गुरुदेव के जन्म-शताब्दी वर्ष में मुनि श्री के भावों का प्रस्तुतीकरण श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली नेअपने शब्दों में धारावाहिक रूप में किया है।

गुणानुवाद : अनुभूति का आस्वाद

(1)

''पथिक, अब मैं इस दिव्य पुरुष का प्रसाद पाने
तुम्हें अपने अन्तःकरण के मंदिर में ले चलता हूँ,
जहाँ उनकी शाश्वत छवि अंकित है,
जहाँ नित्य मैं उनकी अर्चना करता हूँ,
अपने गीतों से उनके चरण प्रक्षालित करता हूँ
एवं मन के समस्त भाव उन्हें समर्पित कर निस्संग हो जाता हूँ

''पथिक, देवालय के पट खुल गये हैं,
उनके स्वरूप का दर्शन करने के लिए अन्तर का दीप जला लो
तुम पाओगे कि-
वे उत्कृष्ट कोटि के श्रमण थे, क्योंकि उनकी चेतना
समता रस से अभिषिक्त थी,
वे संयम के विभूषण थे क्योंकि वे ब्रह्मचर्य से अनुप्राणित थे
वे आत्मज्ञानी थे, क्योंकि उन्होंने निर्विकल्प दशा प्राप्त करली थी
वे तप से तेजस्वी थे,
प्रेम और करुणा से प्रभावी थे।
वे शाश्वत की चाह पाने कृत संकल्प थे
पर मैं उनकी थाह नहीं पा सका हूँ।''

"मुनिवर, आप यदि उनके अन्तेवासी होकर भी उनकी थाह नहीं पा सके
तो भला मैं उन तक कैसे पहुँच सकूंगा?
उनके देवालय में जाकर भी अपने रिक्त पात्र को कैसे भर सकूंगा?"

"पथिक, मैं ही क्या बड़े-बड़े प्रज्ञाशील भी उनकी थाह नहीं पा सके
मैं तुम्हारी उत्कंठा को समझ रहा हूँ।
तुम उनके पास पहुँच सकते हो- उनसे प्रीति करके,
उनकी जीवन प्रतिमा को मन मंदिर में प्रतिष्ठित करके।
यदि ऐसा हुआ तो पथिक, तुम्हारे अन्तर का दीप जल उठेगा,
तुम्हारे हृदय का अंधकार डगमगा जायेगा,
फिर आलोक का उद्घाटन होगा और
तुम्हें उनके सान्निध्य की अनुभूति होगी।
उस समय पथिक तुम उनसे प्रार्थना करना न भूलना कि-
हे देव!
प्रथम मिलन में ही मैं तुमसे पारस्परिकता का सम्बन्ध जोड़ना चाहता हूँ।
इतना निवेदन कर तुम अपना मैं (अहं) उन्हें सौंप देना
और बदले में उनका 'मैं' (आत्मस्वरूप) मांग लेना।"

"पथिक, यदि तुमने उनसे यह विनिमय कर लिया तो
तुम उनके पास पहुँच कर ही रहोगे।
तुम फिर याचक बनकर नहीं, गुणग्राहक बनकर जाना,
तुम्हें उनके आत्मगुणों का निर्मल नीर मिलेगा जो
तुम्हारे जीवन के मूल में रिस-रिस कर
उसे पल्लवित करेगा, पुष्पित करेगा एवं
कालान्तर में अक्षय फल देगा।"

(2)

"पर मुनिवर! मेरे जैसे अज्ञानी के लिए क्या यह सम्भव है?"

"पथिक, एक दिन मैं भी तुम जैसा ही था,
गुरुदेव ने एक दीप-विहीन घर में एक दीप रख दिया,
अंधकार कंपित हो गया,

उनके उद्‌बोधन का प्रकाश मिला,
वह मात्र अनित्यता का रूपायन ही नहीं था,
वह नित्य की ओर गतिमान होने का सोपान भी था।
मैं उस पर चढ़ गया, अंधेरा छूटता गया, प्रकाश मिलता गया
और मेरा पथ प्रशस्त हो गया-आनन्द की खोज का।"

"पथिक, तुम ध्यान से सुनो-
उस देव पुरुष को जानने की तुम्हारी उत्कंठा ही
इस बात का संकेत है कि तुम्हारी अज्ञान रूपी निशा का
अवसान अधिक लम्बा नहीं है।
उनके साथ तुमने तादात्म्य स्थापित कर लिया तो
तुम्हें उनकी अनुभूति के प्रकाश से साक्षात्कार हो जायेगा।"

"हे मुनिवर!
अपनी इस रहस्यमयी वाणी को जरा और उजागर करने की कृपा करें?"

"पथिक, आज गुरुदेव शरीर रूप में हमारे बीच नहीं हैं,
अतः उनके गुणों की अनुभूति ही उनका स्वरूप दर्शन है।
कृष्ण की उपस्थिति में राधा बनना आसान हो सकता है
क्योंकि कृष्ण को उसने साक्षात् देखा था
पर कृष्ण की अनुपस्थिति में मीरा बनने के लिये
उन्हें अन्तर्चक्षुओं से ही देखना होगा।
इन अन्तर्चक्षुओं का खुलना ही उनकी अनुभूति का प्रकाश है।
अगर तुमने अहं को विसर्जित कर दिया तो
तुम्हारी आस्था के कुसुम खिल उठेंगे,
उनकी सुवास तुम्हारी अनुभूति हो जायेगी।
फिर तुम्हारा आस्था के साथ संशय,
विश्वास के साथ अविश्वास एवं
समर्पण के साथ संकोच का द्वन्द्व नहीं होगा।
गुरुदेव के साथ तुम्हारी एकात्मकता स्थापित हो जायेगी
और तुम उनका मौन संदेश सुन सकोगे।

"पथिक, आस्था के बिना रास्ता नहीं,
और परमानन्द से वास्ता भी नहीं।
एक बात याद रखना-
सत्य दिया नहीं जाता है,
उसे पाया जाता है
और गुरुदेव उसके पाने की प्यास जगाते हैं।"

(3)

"हे मुनिवर! आपने भी तो गुरुदेव के प्रति
मेरी प्यास जगा दी है।
अब उनके गुणों का दिग्दर्शन कराकर मेरी पिपासा शान्त कीजिए।

(4)

"पथिक, गुरुदेव ने अपने पूर्व संस्कारों को जीतकर,
महान् विकल्प सागर को पार कर,
अथाह गुरुता को प्राप्त कर लिया था,
जहाँ न राग की मूर्च्छा थी न द्वेष की ज्वाला।
उनके गुणों का वर्णन करना मुझ जैसे अकिंचन के लिये
मानो अंजलि से सागर भरना है।
सच कहता हूँ पथिक, उनके गुणों का वर्णन मेरी सामर्थ्य में नहीं है।"

"मुनिवर!
मुझे आश्चर्य हो रहा है कि उनके गुणानुवाद में
आप अपनी सामर्थ्य और असामर्थ्य के बीच ठहर गये हैं?
तीर्थंकरों के तो अनन्तगुण कहे गये हैं फिर भी
आचार्यों ने अपने सामर्थ्य की परवाह न करते हुए
उनकी स्तुति की है। फिर आप अपने सामर्थ्य की
परवाह क्यों करते हैं?
यदि उनके गुणों का पूरा वर्णन सम्भव नहीं तो
उनके कुछ विशिष्ट गुण ही बता दें।

"पथिक, तुमने मेरी समस्या का समाधान तो दे दिया,

परन्तु मैं उनके विशिष्ट गुणों को भी कैसे कहूँ?
मुझे तो उनके सामान्य गुण भी विशिष्ट लगते हैं
और विशिष्ट गुण भी सामान्य ही लगते हैं
यही तो उस विशिष्ट पुरुष की विशिष्टता है।
जिन्होंने मुझे अशब्द की ओर प्रेरित किया,
बतलाओ, अब मैं उन्हें शब्दों में कैसे बाँधू?"

(5)

"पथिक, मेरे अन्तःकरण में उनकी मौन भाषा गूंजित हो रही है,
महावीर के उस अप्रतिम साधक के
आचरण में आचारांग प्रतिबिम्बित है,
उसकी यतना में छेद सूत्र प्रतिध्वनित है,
प्रवचनों में अपार श्रुतज्ञान गूंजित है
एवं उनके जीवन में
उत्तराध्ययन के अप्रमाद की देशना झंकृत है।
उनका जीवन एक आगमिक कथा है।
पर तुमने ठीक ही कहा है, पथिक,
कि गुणानुवाद में सामर्थ्य और असामर्थ्य का द्वन्द्व क्यों?
मैं तो भूल ही गया कि-
उनका गुणानुवाद ही तो मेरी स्तुति है, प्रार्थना है और गीत है
यही तो मेरा सम्बल भी है - निष्पाप और निर्विकार बनने का
मैं अवश्य ही उनके गुणों का गान करूँगा।"

"पथिक, मैं संकल्प के साथ गुणानुवाद के लिय तत्पर हूँ,
निष्ठा से तुम उनको आत्मसात् करने का प्रयास कर
अपनी अनुभूति में उतार लेना।
तुम्हारे अस्तित्व के अर्थ की खोज यात्रा प्रारम्भ हो जायेगी
शाश्वत की ओर पत्र धरोगे तो
चैतन्य जाग्रत हो जायगा
फिर तो आनन्द मिलकर ही रहेगा।"

आचार्य हस्ती जन्म-शती

श्री हस्तिमल्ल शतक (4)

श्री सुमन्त भद्र

विश्वचेतना के महान सन्त तेजस्वी
संस्कृति-वाग्धारा के अमृत प्रवाह हैं
जिनके अवतार से समुन्नत हो वंशवृक्ष
वे ही भवसागर से तारक संवाह हैं
यों तो परिवर्तनशील जगती में जन्म-मृत्यु
कर्मक्रम अनवरत कभी शान्ति कभी दाह है
पुनरागमनचक्ररोध मुक्तिदिग्दर्शक नाम
आचार्य हस्तिमल्ल सुधार्णव अथाह है ||28 ||

पुण्यभू पीपाड़ मध्य विक्रम बीसवां शतक
ओसवालवंशीय दानमल बोहरा नाम है
जिनका परिणय हमीरमल गांधी तनयाश्री
न्यौजाबाई शीलधना नारीगुणग्राम है
धर्माराधन दयादान गांधी कुलरीति परम
कुशला निर्देशिका उदारता-सुधाम है
संस्कार मेधा प्रशिक्षण नयवर्तन में
आचार्य हस्तिमल्ल कृतार्थ पूर्ण काम हैं ||29 ||

न्यौजाबाई-कुक्षिजात रामलाल-केवलचन्द
तनय-द्वय सुजातप्रवर महतो महीयान हैं
तनयाचतुष्क सद्दा रामी सुन्दर सह चुन्नी बाई
शील-संस्कारमयी रत्नधन समान हैं
सामायिक स्वाध्याय संवर सह प्रत्याख्यान
तप-त्याग सत्कर्म परम आस्थावान हैं

अतिथि-श्रमण सेवा में दत्तचित्त निशिवासर
आचार्य हस्तिमल्ल पितृ वंशमान हैं ||30 ||

दुर्बोध कर्मगति प्रारब्ध बलवान
कालचक्र अविरल जन्म-मृत्यु ध्रुवमान है
सुख-दुःख परिवर्तनशील क्षणभंगुर नश्वरप्रति
आत्यन्तिक अति दुर्लभ सृष्टि का विधान है
भव की विडम्बनावश जीव विवश चंचलगति
गमनागमन हर्ष-शोक धारा प्रवाहमान है
मोक्षलब्धि एकमात्र चिरनिदान द्वैताद्वैत
आचार्य हस्तिमल्ल सद्गति निधान है ||31 ||

बोहरा-कुलवचन धूलिलग्न सर्व विस्मयकर
दानमल बोहरा आकस्मिक निधन जात है
धर्मपत्नी न्यौजाबाई शोकाकुल साश्चर्य
पूर्ण परिवार पर असह्य वज्राघात है
पुत्रद्वय रामलाल-केवलचन्द अविवाहित
सान्त्वनदा न्यौजाबाई जननी सह तात हैं
सिद्धार्हद्धर्मसाधु चतुश्शरण चिरसम्बल
आचार्य हस्तिमल्ल भावी जन्मजात है ||32 ||

द्वितीयाघात रामलाल विवाहित-निधन अन्वागत
भीषणतम आपन्नीरद व्याकुल परिवार है
मात्र शेष केवलचन्द कुलभार वहन हेतु
विपदा पर विपदा कैसा दुःखमय संसार है
भवितव्य क्या है, कब घटित होगा रूप कैसा
सामान्यजन हित अनालोच्यजीत है कि हार है
कर्मजटिल उलझा विकल जीव अति आकुल है
आचार्य हस्तिमल्ल अगम्य सर्वकार है ||33 ||

दिवंगत रामलाल-भार्या जयमल्लाम्नाय मध्य
दीक्षित न्यौज्याबाई-केवलचन्दद्वय शेष है
अग्रज-व्यापारपथ अनुज केवलचन्द लग्न
गिरधारीलाल मुणोत जाता-विवाहित सविशेष हैं
रूपकुंवर धर्मपत्नी धर्मशीला स्नेहमयी
शुष्कस्नेहसरिता प्रवाहित सन्निवेश है
कालधारा परिवर्तित किञ्चिन्मात्र हर्षागम
आचार्य हस्तिमल्ल महिमा अशेष हैं ||34 ||

योगायोग रूपकुंवर गर्भवती वंशवृक्ष
फलवान होने की आशा सुखकारी है
नित्य नवकल्पना शुभाशंसा सुखपूर्वक
गृहप्रांगण गूंजने को मधुतम किलकारी है
सहसा प्लेग महामारी निगल गयी केवलचन्द
काल तेरी गति कितनी दुर्गम सहन्यारी है
हर्ष में विषाद-विष किन्तु सुधागर्भस्थ
आचार्य हस्तिमल्ल बीज अघहारी है ||35 ||

गर्भस्थशिशुमोद विस्मृत कर रूपकंवर
शोकाकुल सुखशून्य भासित संसार है
आशामुकुल अतिम्लान अद्भुत तुषारपात यह
सुख मृगमरीचिका-सा लगता असार है
छिद्रमयी नौका पतवार रिक्त हस्तअवश
वात्याचक्र परिग्रस्त दुर्गम मझधार है
तीर्थंकर-शरण मात्र अवशेष चित्त-हृदय
आचार्य हस्तिमल्ल जातक वरणहार है ||36 ||

(क्रमशः)

-ए 1/3, सुखवानी उद्यान, पिंचरी-चिंचवड़ रोड़, पुणे-411033 (महा.)

आचार्य हस्ती जन्मशती

श्रद्धापुंज के संस्मरणों का वातायन

श्री के.एस. गलुण्डिया(सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)

मेरे माता-पिता(स्व. श्रीमती माणक कंवर एवं श्री हिम्मत सिंह जी गलुण्डिया) आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब के अनन्य भक्त थे। बाल्यकाल से ही उनके दिए हुए संस्कारों के सुफल से मेरी नानी जी स्व. श्रीमती प्रेमकंवर बाई रिंयावाला के साथ आचार्य श्री के दर्शनों का लाभ मिला।

कई ऐसी घटनाएं घटित हुई हैं, जो मेरे हृदयपटल पर एक अमिट छाप छोड़ गयीं। मेरे पिताश्री राज्य-सेवा में उच्च अधिकारी थे। सन् 1955 की बात है जब मैं कॉलेज में पढ़ता था, पिताश्री का स्थानान्तरण जोधपुर से जयपुर हो गया। हम लोग कार से जोधपुर से जयपुर के लिये रवाना हुए। चौमासे का अन्तिम समय था। गुरुदेव अजमेर बिराज रहे थे। गुरुदेव के दर्शनों के लिये हम लोग अजमेर रुक गये एवं लाखन कोटड़ी में दर्शनों के लिये गये। थोड़ी देर वहाँ दर्शन-लाभ लेने के पश्चात् पिताश्री ने गुरुदेव से आज्ञा मांगी और मांगलिक के लिये विनति की। गुरुदेव ने दया पालने के लिये कहा। संध्या का समय था, पिताश्री को अगले दिन जयपुर में नये पद का कार्यभार ग्रहण करना था, अतः फिर से मांगलिक के लिये आग्रह किया। सामान्यतया गुरुदेव रुकने के लिये कभी भी नहीं फरमाते थे, लेकिन उस दिन कुछ अनहोनी का पूर्वाभास होने के कारण गुरुदेव ने निरन्तर आग्रह करने पर ही मांगलिक नहीं फरमाया।

जब हम लोग जयपुर से लगभग 30 किलोमीटर पहले बांडी नदी के किनारे पहुंचे तो वहाँ गाड़ियों एवं ट्रकों की लाइन लगी हुयी थी एवं बांडी नदी में पानी तेज गति से बह रहा था। हिम्मत करके जिस ट्रक में हमारा सामान था उसमें ड्राइवर के केबिन में बैठकर नदी पार करने का प्रयास किया, लेकिन बीच में ही ट्रक बन्द हो गया। बारामासियों व ट्रक ड्राइवरों की मदद से ट्रक को दूसरे किनारे तक पहुँचाया। कार भी नहीं निकल पाई तथा अन्य कोई साधन नहीं होने से सारे परिवार को रात रेत के टीलों पर निकालनी पड़ी। अगले दिन प्रेमनाथ मोटर्स से मैकेनिक गाड़ी लेकर आया तब जाकर हम लोग, हमारा सामान एवं गाड़ी दोपहर

तक जयपुर पहुँची। उस वक्त अनायास गुरुदेव की याद आयी और आभास हुआ कि उनके आशीर्वाद एवं पुण्य प्रताप से ही कोई बड़ी दुर्घटना टल गयी।

दूसरी घटना मैं जब अजमेर में पदस्थापित था तब की है। वर्ष 1971-72 के आसपास गुरुदेव अजमेर में बिराज रहे थे। मैं लगभग रोज सुबह गुरुदेव के दर्शनों के लिये जाता था। एक दिन गुरुदेव ने अनायास ही प्रश्न किया "भोल्या थू सिगरेट पीवे कइ?" मैंने स्वीकारोक्ति में सिर हिला दिया। गुरुदेव ने कहा कि यह बहुत हानिकारक है इसे छोड़ने का प्रयास कर। मैंने कहा यह बहुत मुश्किल है। गुरुदेव ने मेरी मनःस्थिति को भांपते हुए सौगन नहीं दिलवाई, सिर्फ इतना कहा "काले सुबह आवे जद तक सिगरेट मत पीजे"। मैं मना नहीं कर पाया। वो चौबीस घण्टे मैंने बड़ी कठिनाई और कष्टदायक स्थिति में निकाले। मुझे लगा कि मेरी भूख-प्यास और कार्य क्षमता प्रभावित हो गयी एवं मैं सुबह का इंतजार करता रहा। सुबह सूर्योदय होते ही मैं गुरुदेव के दर्शनों के लिये पहुँच गया। गुरुदेव ने पूछा "क्यान रियो"? मैंने कहा "बाबजी सिगरेट छोड़ना बहुत मुश्किल है।" गुरुदेव ने एक ही बात कही कि सबसे कठिन समय निकल चुका है, अब हिम्मत राख। वह दिन है कि गुरुदेव की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से मैं जो 20 से भी अधिक सिगरेट रोज पीता था, की लत छूट गयी एवं मैं उस अभिशप्त जीवन से मुक्त हो गया।

गुरुदेव कभी चमत्कार दिखाते नहीं थे, लेकिन चमत्कार स्वतः ही हो जाते थे। एक बात का मैं विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूँगा। कई ऐसे अवसर आये जब मैं मन में विभिन्न प्रश्न एवं कई शंकाएँ लेकर गुरुदेव के पास गया। यह मेरी श्रद्धा एवं विश्वास कहिये या गुरुदेव का दिव्य प्रताप, बिना कुछ पूछे और बताये ही सारी शंकाओं एवं प्रश्नों का समाधान स्वतः ही हो जाता था।

गुरुदेव के स्मरणमात्र से कई संकठों व दुःखों का निवारण स्वतः ही हो जाता है। जीवन में चित्त की अस्वस्थता एवं वातावरण की प्रतिकूलता तो बनती रहती है, लेकिन माता श्री का दिया हुआ मंत्र "गुरु हस्ती, पार करो मेरी कस्ती" का जब-जब स्मरण किया, मन में एक असीम शांति का अनुभव हुआ एवं बुरा से बुरा समय भी निकल गया। गुरुदेव का सौम्य, शांत एवं तेजस्वी व्यक्तित्व जीवन में सदैव प्रेरणा का स्रोत एवं संबल रहा है।

-53, गोपालबाड़ी, जयपुर (राज.)

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (7)

प्रश्न 8. ''क्रोधादि चार कषायों को विफल करने के कौन-कौन से उपाय हैं?

उत्तर : प्रभु ने सूत्रकृतांग सूत्र के छट्ठे अध्ययन को 26 वीं गाथा में कहा है- ''कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं च अज्झत्थ दोसा।'' अर्थात् क्रोध, मान, माया और लोभ ये चारों ही आध्यात्मिक दोष हैं। वस्तुतः आध्यात्मिक दोष जितने अंशों में नष्ट होते हैं, उतने ही अंशों में आत्मिक गुणों की उन्नति और वृद्धि होती है। समस्त आध्यात्मिक दोषों के मूल ये चार कषाय हैं। इनके सेवन से आत्मिक गुणों की हानि होती है और विशेषतः पाप-कर्मों की वृद्धि होती है। जहाँ एक स्थान पर बताया कि इन कषायों की वृद्धि से जन्म-मरण की भी वृद्धि होती है, अनंत संसार बढ़ता है, तो दूसरी जगह इनको विफल करने का उपाय भी बताया है। क्रोधादि चार कषायों को विफल करने हेतु प्रमुख उपायों का निर्देश करते हुए कहा है-

उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
मायं चऽज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे।।

-दशवैकालिक सूत्र-8.39

अर्थात् उपशम से क्रोध को, मार्दव से मान को, आर्जव (सरलता) से माया को एवं संतोष से लोभ को जीते। कषायों को जीतने का यह सरल उपाय है। इसके अतिरिक्त आगमों में अन्य उपायों की भी चर्चा की गई है।

(1) क्रोध-कषाय को विफल करने का उपाय:-

''बहुं परघरे अत्थि, विविहं खाइमं साइमं।
ण तत्थ पंडिओ कुप्पे, इच्छा दिज्ज परो ण वा।।
सयणासणवत्थं वा, भत्तं पाणं व संजए।

अदिंतस्स ण कुप्पिज्जा, पच्चक्खे वि य दीसओ ।।''

- दशवैकालिक सूत्र-5/2/27-28

अर्थात् गृहस्थ के घर में अनेक प्रकार का प्रचुर खाद्य आहार रहता है और प्रत्यक्ष दीखते हुए भी शयन, आसन, वस्त्र, भक्त और पान न देने वाले पर पण्डित मुनि क्रोध न करे एवं ऐसा विचार करे कि यह गृहस्थ है दे या न दे, इसकी इच्छा। किन्तु न देने पर साधु उसे न झिड़के, न डाँटे, न फटकारे, न ही गाली-गलौज करे, न किसी प्रकार का शाप दे, क्योंकि ऐसा करने पर श्रमण का क्षमा नामक श्रमण-धर्म लुप्त हो जाता है। अतः साधक यह चिन्तन करे कि शुद्ध एषणा के द्वारा दाता की शुद्ध भावना से जितना मिले उतना ही अच्छा है और सबसे अच्छी बात तो यह है कि यदि कम मिला तो सहज में ऊणोदरी तप का लाभ मिल जायेगा। अतएव न देने पर साधु कुछ भी बोले बिना या मन में द्वेष, घृणा या रोष का भाव लाए बिना प्रसन्न चित्त से अपने स्थान पर लौट आए। आगे कहा है-

''जे ण वंदे ण से कुप्पे, वंदिओ ण समुक्कसे।
एवमण्णेसमाणस्स, सामण्णमणुचिट्ठइ ।।''

-दशवैकालिक सूत्र,5/2/30

अर्थात् वन्दन न करने वाले पर क्रोध न करे और करने पर गर्व न करे, ये दोनों दोष भिक्षा जीवी साधु में नहीं होने चाहिए, क्योंकि कोप से क्षमा धर्म का, गर्व से मार्दव धर्म का नाश होता है। अतः प्रज्ञाशील साधक को यही चिन्तन करना चाहिए कि किसी के द्वारा वंदन करने या न करने से साधु को कोई लाभ नहीं, उसके कर्म नहीं कट जायेंगे। यदि वंदना से कुछ लाभ है तो वह गृहस्थ को है। अतः साधु को दोनों ही परिस्थितियों में समभाव रखना चाहिए।

''अतिंतिणे अचवले, अप्पभासी मियासणे।
हविज्ज उअरे दंते, थोवं लद्धुं न खिंसए।।''

-दशवैकालिक सूत्र, 8/29

अर्थात् साधक अल्पभाषी, मितभोजी और उदर का दमन करने वाला

हो। अतः आहार न मिलने पर या नीरस आहार मिलने पर क्रोध न करे, तनतनाहट न करे और थोड़ा पाकर दाता की निंदा न करे। साधक वह होता है जो अल्पभाषी होता है तथा जो मित भोजी अर्थात् प्रमाण से कम आहार करने वाला होता है-क्योंकि जो मित-भोजी होता है, उसकी स्वाध्याय-ध्यान आदि चर्याएँ ठीक होती हैं। यदि बहुभोजी होता है तो अल्पाहार मिलने पर गृहस्थ की निन्दा करता है, उस पर कुपित होता है। सच्चा साधक पदार्थ , गृहस्थ की या ग्राम की निंदा नहीं करता, वह संतोष धारण कर लेता है। वह सोचता है कि वह तो गृहस्थ की चीज है वह दे या न दे यह उसकी इच्छा। अतः इस प्रकार के चिन्तन से साधक क्रोध कषाय पर विजय प्राप्त कर सकता है।

2. मान कषाय को विफल करने का उपाय-

"न बाहिरं परिभवे, अत्ताणं न समुक्कसे।
सुअलाभे न मज्जिज्जा, जच्चा तवस्सि बुद्धिए ।।"

-दशवैकालिक सूत्र 8/30

अर्थात् साधक अपने से भिन्न किसी जीव का तिरस्कार नहीं करे। अपना महत्त्व भी प्रकट नहीं करे। श्रुत, लाभ, जाति, तपस्विता और बुद्धि से उत्कृष्ट होने पर भी मद नहीं करे। क्योंकि अभिमान पतन का कारण है, उससे अपना विकास रुकता है और साधक चिकने कर्मों का बंध करके आत्मा पर अशुद्धि का आवरण डालता है। यह अभिमान रूप कषाय विनय गुण का नाशक है। शास्त्रकार फरमाते हैं- 'माणो विणयनासणो' अर्थात् मान कषाय विनय गुण को नष्ट करने वाला है, साथ ही 'विणयमूलो धम्मो'- अर्थात् धर्म का मूल विनय है। इस प्रकार विनय गुण की घात करने वाला मान कषाय, अधर्म का जनक है। मान कषाय से प्रभावित साधक अपने राई मात्र गुणों को पर्वत समान बताकर स्व प्रशंसा करता है। वह अभिमानी साधक छिद्रान्वेषी होने के साथ आत्म-प्रशंसा के पुल बाँधता है। फलतः वह शिष्टजनों में आदरणीय नहीं होता है और जहाँ मान होता है वहाँ क्रोध अवश्य पाया जाता है।

उपर्युक्त गाथा- 5/2/30 से यह स्पष्ट होता है कि जहाँ-जहाँ क्रोध है, वहाँ-वहाँ मान होता है। क्योंकि मानी व्यक्ति को पग-पग पर अपने अपमान की आशंका रहती है जिससे वह क्रुद्ध हो उठता है। इस प्रकार मान के दुष्परिणामों को जानकर साधक को मान-कषाय से दूर रहना चाहिए।

3. माया कषाय को विफल करने के उपाय-

''जाणंतु ता इमे समणा, आययट्ठी अयं मुणी।
संतुट्ठो सेवए पंतं, लूहवित्ती सुतोसओ।।''
''पूयणट्ठा जसोकामी, माणसम्माणकामए।
बहुं पसवई पावं, मायासल्लं च कुव्वइ।।''

-दशवैकालिक सूत्र 5/2/34-35

अर्थात् यदि कोई साधु विविध प्रकार के पान और भोजन प्राप्त कर एकान्त में बैठकर उसमें से अच्छा-अच्छा खा जाता है और विवर्ण अर्थात् नीरस को ले आता है ताकि बाकी के श्रमण यह कहें कि यह मुनि बड़ा मोक्षार्थी है, नीरस आहार सेवन करता है तथा रुक्ष आहार करने में संतोष करने वाला है। ऐसा पूजार्थी, यश-कीर्ति पाने का अभिलाषी तथा मान-सम्मान की कामना करने वाला साधु बहुत पाप-कर्मों का उपार्जन करता है, तथा माया शल्य का आचरण करता है।

''से जाणमजाणं वा, कट्टु आहम्मियं पयं।
संवरे खिप्पमप्पाणं, बीयं तं ण समायरे।।
अणायारं परक्कम्म, नेव गूहे न णिण्हवे।
सुई सया वियडभावे, असंसत्ते जिइंदिए।।''

-दशवैकालिक सूत्र 8/31-32

अर्थात् साधु से जानते हुए या अनजाने कोई अधार्मिक कार्य हो जाए तो उससे अपने आपको रोक ले और यदि कोई अकरणीय कार्य हो जाय तो वह निष्कपट भाव से गुरु साक्षी से गर्हा करे और सदा पवित्र प्रकट भाव धारण करने वाला असंसक्त एवं जितेन्द्रिय रहे।

क्रोध, लोभ और मद से भी बढ़कर माया भयंकर है, दुर्गुणों की खान

है। सत्य महाव्रत को भस्म करने वाली ज्वाला है। यह कई रूपों में साधक के जीवन में आती है। अधर्म या अनाचरणीय केवल अज्ञान में नहीं होता, किन्तु यदा-कदा, ज्ञानपूर्वक भी होता है। मोह के उदयवश 9वें गुणस्थानवर्ती साधक के भी माया का उपाय हो सकता है। उसके निकन्दन के लिए शास्त्रकार फरमाते हैं- उसे छिपाओ मत। जो दोष का सेवन करके गुरु के समक्ष छिपाता है वह पाप का बंध करता है। यदि आलोचना और प्रायश्चित्त आदि से उस कृत पाप की शुद्धि न की गई तो फिर अनुबंध पड़ जायेगा। जिसका फल चातुर्गतिक संसार में परिभ्रमण करके भोगना होगा। अतः भूल या अपराध होने पर साधक तुरन्त उस पाप की गुरु के समक्ष आलोचना करके कुछ भी छिपाये बिना जैसा और जितनी मात्रा में जिस भाव में दोष लगा हो उसे गुरु-साक्षी से प्रकट कर गुरु-मुख से प्रायश्चित्त लेकर शुद्ध हो जाय। इस प्रकार माया के दुष्परिणाम और उसको विफल करने के उपायों को जानकर साधक सदा पवित्र, निष्कपट, स्पष्ट एवं जितेन्द्रिय रहे।

4. लोभ को विफल करने के उपाय-

> *"सिया एगइओ लद्धुं, लोभेण विणिगूहइ।*
> *मा मेयं दाइयं संतं, दट्ठूणं सयमायए ।।"*

-दशवैकालिक सूत्र 5/2/31

अर्थात् कदाचित् साधु सरस आहार इस लोभ से छिपा लेता है कि मुझे मिला हुआ आहार गुरु को दिखाया गया तो वे देखकर स्वयं ले लें और मुझे न दें। इस प्रकार आहार के लाभ से खाने के लोभ में घिरा हुआ साधक अपने स्वार्थ को ही बड़ा मानने वाला, स्वाद लोलुप, बहुत पाप करता है और वह संतोष भाव से रहित हो जाता है। ऐसा साधु निर्वाण को प्राप्त नहीं हो पाता, क्योंकि- ***The More You get the more you want and greed increases with every gain.*** अर्थात् जैसे-जैसे लाभ होता है, वैसे-वैसे लोभ बढता है और लोभ को तो सर्वगुण नाशक कहा है। "लोहो सव्वविणासणो", उदाहरणार्थ लोभ के वशीभूत होकर पुत्र मृदु- स्वभाव एवं मानवता परायण पिता

से रुष्ट हो जाता है, सम्बन्ध तोड़ लेता है, क्रोधान्ध होकर दुर्वचन बोलता है। यह प्रीति का नाश है। पुत्र को धन का भाग नहीं मिलता है तो रुष्ट होकर पिता के समक्ष अविनयपूर्वक बोलता है, गाली-गलौज करता है, तथा भाग लेने हेतु कठिबद्ध हो जाता है। यह विनय-गुण का नाश है। इस प्रकार लोभ-कषाय के दुष्परिणामों को जान कर, साधक को कदाचित् किसी वस्तु पर लोभ या आसक्ति आती है तो इस प्रकार चिन्तन करे कि इनसे मेरे ही आत्म-गुणों का ह्रास होता है। चेतन मोह ग्रस्तता के कारण जड़वत् बन जाता है, जिससे स्वयं के हित का ही सर्व प्रकारेण नाश होता है। अतः आत्म-हितैषी साधक के लिए आवश्यक है कि वह कषायों को विफल करने हेतु प्रयत्नशील रहे।

भ्रूण हत्या

श्री कस्तूरचन्द सी. बाफणा

मत मार ए माता भूल कर भी न आऊँगी तेरे तन में।
माँ भी हत्यारिन होगी, कभी न सोचा था मन में।।
भ्रूण हत्या करने वाली बदल दो अपना नाम।
माँ का नाम लज्जित होता, कितना गंदा है ये काम।।

मैं तो जा रही माता, पर एक बात सुन लेना।
दूसरी बहन रहे सुरक्षित उस पर तो दया करना।।

आज करे तूं जैसा,
मेरी नानी करती वैसा।
मेरी मां बन पाती तूं?
फिर हत्या क्यों करवाती तूं?

निरपराध को न्यायालय भी नहीं देता सजा।
मुझे मृत्युदंड देकर नहीं आती तुझे लज्जा।।

-नयनतारा, सुभाष चौक, जलगांव (महा.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 57)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(आहारक समुद्घात)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- आहारक समुद्घात किसे कहते हैं?

समाधान- आहारक लब्धि सम्पन्न अणगार जब आहारक शरीर बनाते हैं तब अपने आत्म-प्रदेशों को लम्बाई में जघन्य अंगुल का असंख्यातवाँ भाग और उत्कृष्ट संख्यात योजन तक तथा चौड़ाई व मोटाई में शरीर प्रमाण क्षेत्र में एक ही दिशा में निकालते हैं उसे आहारक समुद्घात कहते हैं।

जिज्ञासा- आहारक शरीर कौन बना सकते हैं?

समधान- जिन अणगारों को चौदह पूर्वों का ज्ञान होता है तथा आहारक लब्धि प्राप्त होती है, वे ही आहारक शरीर बना सकते हैं। साध्वियों को चौदह पूर्वों का ज्ञान प्राप्त नहीं होता, इस कारण से साध्वियाँ आहारक शरीर नहीं बना सकती हैं।

जिज्ञासा- क्या प्रत्येक चौदह पूर्वधारी साधु आहारक शरीर बनाते हैं?

समाधान- प्रत्येक चौदह पूर्वधारी साधु आहारक शरीर नहीं बनाते। जिनमें आहारक लब्धि होती है, वे ही बना सकते हैं। तत्त्वार्थ सूत्र की सर्वार्थसिद्धि टीका में तथा आवश्यक सूत्र की हारिभद्रीय वृत्ति में उल्लेख है कि चौदहपूर्वी दो प्रकार के हैं- 1. भिन्नाक्षरी, 2. अभिन्नाक्षरी।

भिन्नाक्षरी अर्थात् सर्वाक्षर सन्निपाति लब्धि से युक्त। ये श्रुत केवली भी कहलाते हैं। ये प्रत्येक अक्षर, शब्दादि के अनन्त अर्थ, गम, पर्यायादि के जानकार होते हैं। इनमें कुतुहल वृत्ति नहीं होती, ये गंभीर होते हैं अतः ये आहारक शरीर नहीं बनाते हैं।

अभिन्नाक्षरी अर्थात् चौदह पूर्वों के ज्ञाता होने पर भी अक्षर,

शब्दादि के अर्थ, गम पर्यायादि को विशेष रूप से नहीं जानते हैं अर्थात् भिन्नाक्षरी की तुलना में सामान्य रूप से जानते हैं, इनमें कुतुहल वृत्ति भी समाप्त नहीं हो पाने के कारण ये आहारक शरीर बनाते हैं।

जिज्ञासा- आहारक शरीर कितने कारणों से बनाया जाता है?

समाधान- प्रज्ञापना सूत्र के 36 वें पद की टीका में उल्लेख है कि आहारक शरीर चार कारणों से बनाया जाता है-

1. चौदहपूर्वी मुनि को पूर्वों का ज्ञान चितारते स्वयं को शंका उत्पन्न होने पर। 2. कोई वादी आकर प्रश्न करे तथा स्वयं का उपयोग नहीं लगने पर, 3. तीर्थंकर भगवान की ऋद्धि दर्शन की कुतुहलता जागृत होने पर, 4. जीवदया का प्रसंग आने पर अर्थात् पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा को रोकने के लिये।

जिज्ञासा- आहारक शरीर में आत्म-प्रदेश किनके पास जाते हैं?

समाधान- आहारक शरीर बनाने के चार कारणों में से प्रथम, द्वितीय व तृतीय कारण उपस्थित होने पर आहारक लब्धि सम्पन्न प्रमत्त अणगार अपने शरीर में से एक हाथ का पुतला निकालकर तीर्थंकर भगवान् के पास भेजते हैं। उस पुतलेरूप आहारक शरीर में मुनिराज के असंख्यात आत्म-प्रदेश होते हैं, वे भी साथ में जाते हैं। केवली भगवान् के पास प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय कारण होने पर आहारक शरीर के आत्मप्रदेश जाते हैं। चतुर्थ कारण उपस्थित होने पर आहारक शरीर तीर्थंकर अथवा केवली के पास नहीं भेजकर क्रूर, अन्यायी एवं हिंसक वृत्ति वाले शासक के पास भेजा जाता है, वहाँ आकाश में उद्घोषणा करके हिंसा के दुष्परिणामों को बतलाकर उसकी हिंसकवृत्ति का परित्याग कराने में आहारक शरीर सहायक बनता है।

जिज्ञासा- आहारक समुद्घात तथा आहारक शरीर में क्या पारस्परिक सम्बन्ध है?

समाधान- यद्यपि आहारक समुद्घात एवं आहारक शरीर दोनों का ही कालमान असंख्यात समय वाला अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है तथापि आहारक समुद्घात का अन्तर्मुहूर्त बड़ा है। आहारक समुद्घात

आहारक शरीर बनाते समय प्रारम्भिक अन्तर्मुहूर्त में ही होता है, बाद में नहीं होता।

दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि आहारक शरीर में आहारक समुद्घात की भजना है, जबकि आहारक समुद्घात में आहारक शरीर की नियमा है।

जिज्ञासा– आहारक समुद्घात में कोई जीव मृत्यु को प्राप्त होता है अथवा नहीं?

समाधान– यद्यपि प्रज्ञापना सूत्र के 36 वें समुद्घात पद की टीका में उल्लेख है कि आहारक समुद्घात में कोई जीव मृत्यु को भी प्राप्त हो सकता है। यदि मृत्यु को प्राप्त होता है तो विग्रह गति से उत्पन्न होता है और वह अधिक से अधिक तीन समय की विग्रह गति से उत्पन्न होता है। तथापि भगवती सूत्र के शतक 8 उद्देशक 9 में वर्णित सर्वबन्धक-देशबन्धक के अधिकार से स्पष्ट होता है कि आहारक समुद्घात में जीव मृत्यु को प्राप्त नहीं होता, क्योंकि वहाँ पर आहारक शरीर के देशबन्ध की जघन्य व उत्कृष्ट दोनों स्थिति अन्तर्मुहूर्त बतलायी है। यदि मृत्यु को प्राप्त हो सकता होता तो वैक्रिय के देशबन्ध के समान आहारक के देशबन्ध की जघन्य स्थिति एक समय की बतलाते।

अतः यही मानना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है कि आहारक समुद्घात में जीव मृत्यु को प्राप्त नहीं होता है। आहारक शरीर से निवृत्त होने के बाद ही मृत्यु को प्राप्त हो सकता है।

जिज्ञासा– आहारक समुद्घात में आहारक शरीर जो निकलता है वह मुनिराज के शरीर में से कहाँ से निकलता है?

समाधान– आहारक समुद्घात में आहारक शरीर मुनिराज के शरीर से निकलता है उसको लेकर अनेक विचारधाराएँ प्रचलित हैं। कतिपय ग्रन्थकार उत्तम अंग-मस्तक से निकलने की बात कहते हैं, तो कुछ दोनों आँखों से निकलने की बात कहते हैं। सर्वांग शरीर से निकलने का भी कतिपय ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है। तत्त्व केवलिगम्य है।

-रजिस्ट्रार- अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर(राज.)

।। श्री महावीराय नमः ।।

पूज्य कुशलगणी की जय ।। जय गुरू हस्ती ।। श्री कुशलरत्न गजेन्द्रगणिभ्यो नमः

परमश्रद्धेय जैनाचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. के सुशिष्य
आचार्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म. सा. की जय

श्री श्वे. स्था. जैन चतुर्विध संघ के हितार्थ प्रमुख मुनियों द्वारा स्वीकृत

पाक्षिक पत्र विक्रम सम्वत् २०६७

वीर सम्वत् २५३६-३७ सन् २०१०-२०११

(निर्णय सागर पंचाग से सम्पादित)

क्र. सं.	मास-पक्ष	तिथिवार	पक्खी दिनांक	घड़ी पल	क्षय तिथि	वृद्धि तिथि	रोहिणी नक्षत्र	पुष्य नक्षत्र
१	चैत्र सुदि	१४ सोम	२९.३.२०१०	११-१०	-	-	७ सोम	११ शुक्र
२	प्र.वैशाख वदि	१४ मंगल	१३.४.२०१०	२७-५	१	६	-	-
३	प्र.वैशाख सुदि	१५ बुध	२८.४.२०१०	२६-१३	१०	-	४ रवि	८ गुरू
४	द्वि.वैशाख वदि	१४ गुरू	१३.५.२०१०	२-५५	-	१२	-	-
५	द्वि.वैशाख सुदि	१५ गुरू	२७.५.२०१०	५६-५५	१/१४	-	२ शनि	६ बुध
६	ज्येष्ठ वदि	१४ शुक्र	११.६.२०१०	३१-५३	-	३	३० शनि	-
७	ज्येष्ठ सुदि	१५ शनि	२६.६.२०१०	२७-५३	५	-	-	३ मंगल
८	आषाढ़ वदि	३० रवि	११.७.२०१०	४८-३	१४	७	१२ शुक्र	-
९	आषाढ़ सुदि	प्र.१५रवि	२५.७.२०१०	६०-०	७	१५	-	२ मंगल
१०	श्रावण वदि	१४ सोम	०९.८.२०१०	१५-१०	-	-	१० गुरू	१४ सोम

विशेष विवरण

-आयंबिल ओली प्रारम्भ चैत्र सुदि ७ सोमवार २२.३.२०१०।
-भगवान महावीर जन्म कल्याणक चैत्र सुदि १३ रविवार २८.३.२०१०।
-आयंबिल ओली पूर्ण चैत्र सुदि १५ मंगलवार ३०.३.२०१०।
-अक्षय तृतीया द्वि. वैशाख सुदि ३ रविवार १६.५.२०१०।
-आचार्य भगवन्त पूज्य गुरूदेव १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. की १९वीं पुण्य तिथि द्वि. वैशाख सुदि ८ शुक्रवार २१.५.२०१० ।
-भगवान महावीर केवल कल्याणक द्वि. वैशाख सुदि १० रविवार २३.५.२०१० ।
-संघ स्थापना दिवस द्वि. वैशाख सुदि ११ सोमवार २४.५.२०१० ।
-आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का २०वां आचार्य पद दिवस ज्येष्ठ वदि ५ बुधवार २.६.२०१० ।
-परम्परा के मूल पुरूष पूज्य श्री कुशल चन्द्रजी म. सा. की २२७वीं पुण्य तिथि ज्येष्ठ वदि ६ गुरूवार ३.६.२०१० ।
-आर्द्रा नक्षत्र प्रारम्भः ज्येष्ठ सुदि ११ मंगलवार २२.६.२०१०, इसके पश्चात्गाज-बीज होने पर सूत्र की असज्झाय नहीं रहेगी ।
-क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्रीरतन चन्द जी म. सा. की १६५वीं पुण्य तिथि ज्येष्ठ सुदि १४ शुक्रवार २५.६.२०१० ।

श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः जय गुरु मान

जैन भागवती दीक्षा महोत्सव

आदरणीय धर्मप्रेमी बन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र!

आपको सूचित करते हुए परम प्रसन्नता है कि **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** की अनुमति से **द्वि. वैशाख शुक्ला द्वितीया, शनिवार, दिनांक 15 मई 2010** को **बालोतरा, भरतपुर** एवं **बैंगलोर** में तथा **द्वितीय वैशाख शुक्ला दशमी, रविवार, 23 मई 2010** को **चांगोटोला (म.प्र.)** में निम्नांकित मुमुक्षु बहिनों की **जैन भागवती दीक्षाएँ** सम्पन्न होने जा रही हैं -

15 मई को सम्पन्न होने वाली दीक्षाएँ

(1) बालोतरा (राज.) में सम्पन्न होने वाली दीक्षाएँ

मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिका जैन

मुमुक्षु बहिन सुश्री कोमल कोठारी

मुमुक्षु बहिन सुश्री समता जैन

मुमुक्षु बहिन सुश्री ट्विंकल सालेचा

मुमुक्षु बहिन सुश्री वर्षा सालेचा

उक्त पाँच दीक्षाएँ परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर **पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** के मुखारविन्द से तथा परम श्रद्धेय **उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, प्रभृति मुनिपुंगवों की मंगलमनीषा से एवं साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती **श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** की नेश्रायवर्तिनी तत्त्वचिन्तिका महासती **श्री रतनकंवर जी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती **श्री सोहनकंवर जी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती **श्री इन्दुबालाजी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती **श्री निःशल्यवती जी म. सा.**, व्याख्यात्री महासती **श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा.** आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में होगी।

(2) भरतपुर (राज.) में सम्पन्न होने वाली दीक्षा

मुमुक्षु बहिन सुश्री विजयश्री (एलिजा) जैन

यहाँ पर विदुषी महासती **श्री सौभाग्यवती जी म.सा.** आदि ठाणा का सान्निध्य प्राप्त होगा।

(3) बैंगलोर (कर्नाटक) में सम्पन्न होने वाली दीक्षाएँ

मुमुक्षु बहिन श्रीमती मंजू जी डागा

मुमुक्षु बहिन सुश्री प्रीति जी कानुंगा

यहाँ पर व्याख्यात्री महासती **श्री ज्ञानलता जी म.सा.** आदि ठाणा का सान्निध्य प्राप्त होगा। **बैंगलोर में 15 मई को ही कुछ और दीक्षाएँ होना सम्भावित है।**

23 मई को चांगोटोला (म.प्र.) में सम्पन्न होने वाली दीक्षा

मुमुक्षु मंगला बहिन

यहाँ पर व्याख्यात्री महासती **श्री तेजकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा का सान्निध्य प्राप्त होगा।

अनुरोध

आपसे विनम्र अनुरोध है कि दीक्षा महोत्सव के पावन-पुनीत प्रसंग पर व्रत-नियमयुक्त श्रद्धा समर्पण के साथ जैन भागवती दीक्षा की अनुमोदना का लाभ प्राप्त करें।

उपर्युक्त नगरों के दीक्षा-स्थल एवं सम्पर्क सूत्र निम्नानुसार हैं-

बालोतरा- दीक्षा स्थल-श्री वर्द्धमान आदर्श विद्या मन्दिर, विमलनाथ कॉलोनी, बालोतरा (राज.) सम्पर्क सूत्र-श्री डूंगरचन्दजी श्रीश्रीमाल 9251311717, श्री नेमीचन्दजी अन्याव 9413525132, श्री खीमराजजी भण्डारी 9414108811, श्री ओमप्रकाशजी बांठिया 9461522309, श्री छगनलालजी वैदमुथा 9460541805, श्री धर्मेशजी चौपड़ा 9414108191

भरतपुर- दीक्षा स्थल-राजेन्द्र सूरि जैन कीर्ति मन्दिर, सेवर रोड, भरतपुर (राज.) सम्पर्क सूत्र-श्री सुभाषचन्द जी जैन, 9828502515, श्री विरेन्द्र जी जैन, 9414023392

बैंगलोर- दीक्षा स्थल-मराठा हॉस्टल, गुलटेम्पल रोड, बैंगलोर (कर्नाटक),सम्पर्क सूत्र-श्री यशवन्त जी सांखला, 09845019669, श्री रमेश जी गुन्देचा, 09845499907

चांगोटोला- दीक्षा स्थल-जैन स्थानक भवन, पो. चांगोटोला, जिला-बालाघाट (म.प्र.), सम्पर्क सूत्र-श्री विनोद जी बोथरा, 09425138532,श्री निलेश जी चोरडिया, 09407314581

आयोजक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं उपर्युक्त नगरों के स्थानीय संघ

निवेदक

सभी मुमुक्षु बहिनों के पारिवारिक जन

विनीत

सुमेरसिंह बोथरा-अध्यक्ष, **गौतमचन्द हुण्डीवाल**-कार्याध्यक्ष, **पूरणराज अबानी**-महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 0291-2641445, टेलीफैक्स-2636763

मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिका जैन : परिचय

जन्मतिथि- 09 अक्टूबर 1982

जन्मस्थान- सवाईमाधोपुर (राज.)

व्यावहारिक शिक्षा- सैकेण्डरी

पारिवारिक परिचय

दादा-दादी : स्व. श्री जीतमल जी-श्रीमती पांचीबाई जी जैन, जरखोदा

पिता-माता : श्री दामोदर जी-श्रीमती प्रसन्नदेवी जी जैन, सवाईमाधोपुर

भाई-भाभी : प्रो. चन्द्रप्रकाश जी-श्रीमती गायत्रीदेवी जी जैन, सवाईमाधोपुर

बहिन-बहिनोई : श्रीमती रेखा जी-श्री गोविन्दसहाय जी जैन, सवाईमाधोपुर,
श्रीमती ममता जी-श्री मुकेश जी जैन, सवाईमाधोपुर
श्रीमती हेमलता जी-मुकेश जी जैन, सवाईमाधोपुर
श्रीमती तारा जी-श्री जितेन्द्र जी जैन, बजरिया
श्रीमती अन्तिमा जी-श्री अनिल जी जैन, कोटा।

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र 1 से 4 अध्ययन

आगम वाचनी : वीर स्तुति, अन्तगड़सूत्र, कल्पसूत्र, सुखविपाक सूत्र

स्तोक कण्ठस्थ : 25 बोल, 67 बोल, कर्मप्रकृति, गति-आगति, समिति-गुप्ति, पाँच देव, उपयोग, जयन्तीबाई के प्रश्नोत्तर, लघुदण्डक, ज्ञानलब्धि, 33 बोल, 47, 50, 800 बोल की बन्धियाँ, 98 बोल, 102 बोल का बासठिया, जीवधड़ा, गुणस्थान स्वरूप, जीव-पज्जवा, अजीव-पज्जवा, कायस्थिति आदि।

स्तोत्र : भक्तामर　　भाषा ज्ञान : हिन्दी, राजस्थानी।

अन्य : अ.भा.श्री जैन रत्न आ. शिक्षणबोर्ड की प्रथम से चतुर्थ कक्षा उत्तीर्ण।

पयुर्षण सेवा : दो वर्ष　　वैराग्यावधि : आठ माह

मुमुक्षु बहिन सुश्री कोमल कोठारी : परिचय

जन्मतिथि- 04 दिसम्बर 1982

जन्मस्थान- जलगाँव (महा.)

व्यावहारिक शिक्षा- बी.कॉम (प्रथम वर्ष)

पारिवारिक परिचय

दादा-दादी : स्व. श्री अमरचन्द जी-स्व. श्रीमती राजीबाई जी कोठारी, जलगाँव

पिता-माता : श्री रमेशचन्द जी-श्रीमती विजयाबाई जी कोठारी, जलगाँव

भाई-भाभी : श्री मनोजकुमार जी-श्रीमती हर्षा जी कोठारी, जलगाँव

बहिन-बहिनोई : श्रीमती ज्योतिजी-श्री नितिन जी सुराणा, चालीसगांव,

श्रीमती जया जी-श्री वर्द्धमान जी ओस्तवाल, चालीसगाँव

श्रीमती मधु जी- श्री वर्द्धमान जी मोदी-घोटी।

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, सुखविपाकसूत्र, नन्दीसूत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, अणुत्तरोववाइयसूत्र, आवश्यक सूत्र।

आगम वाचनी : अन्तगडसूत्र, दशवैकालिकसूत्र, उपासकदशांगसूत्र, स्थानांग सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, नन्दीसूत्र, कल्पसूत्र, भगवती सूत्र (भाग- 1)।

स्तोक कण्ठस्थ : 25 बोल, 67 बोल, 33 बोल, पाँच समिति-तीन गुप्ति, संज्ञा, उपयोग, जयन्तीबाई के प्रश्न, रूपी-अरूपी, गति-आगति, कर्मप्रकृति, लघुदण्डक, जीवधड़ा, नवतत्त्व, ज्ञानलब्धि, 47 बोल, 50 बोल, 800 बोल की बंधी, द्रव्येन्द्रियपद, 24 ठाणा, नियण्ठा, पन्नवणा सूत्र के प्रथम भाग के थोकड़े आदि।

स्तोत्र : भक्तामरस्तोत्र, कल्याणमन्दिरस्तोत्र, महावीराष्टक, उवस्सग्गहर स्तोत्र, पुच्छिस्सुणं, घंटाकर्ण इत्यादि।

भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी, राजस्थानी, मराठी।

अन्य : अ.भा.श्री जैन रत्न आ. शिक्षण बोर्ड की प्रथम से नवमीं कक्षा उत्तीर्ण।

पर्युषण सेवा : 7 वर्ष वैराग्यावधि : 7 माह

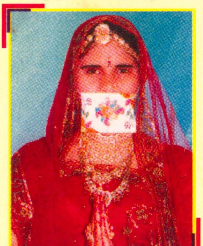

मुमुक्षु बहिन सुश्री समता जैन : परिचय

जन्मतिथि- 02 अप्रेल 1987

जन्मस्थान- श्यामपुरा, सवाईमाधोपुर (राज.)

व्यावहारिक शिक्षा- बी.ए.

पारिवारिक परिचय

दादा-दादी : श्री राजुलाल जी-श्रीमती गाजादेवी जी जैन, श्यामपुरा

पिता-माता : श्री नरेन्द्रमोहन जी-श्रीमती चमेलीदेवी जी जैन, बजरिया

भाई : श्री जिनेन्द्र कुमार जी जैन, बजरिया, सवाईमाधोपुर

बहिन-बहिनोई : श्रीमती अमिता जी-श्री ऋषभकुमार जी जैन, बाबई,
श्रीमती हेमलता जी-श्री पंकज कुमार जी जैन, जयपुर,
सुश्री प्रभा, सुश्री मोनिका, सुश्री मनीषा, सुश्री पूनम

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, नन्दीसूत्र, सुखविपाक सूत्र, अनुत्तरोववाई सूत्र, आचारांग सूत्र, बृहत्कल्पसूत्र, पुप्फचूलियासूत्र, कप्पवडंसियासूत्र, व्यवहार सूत्र, निशीथसूत्र, निरयावलिया, वण्हिदसा, आवश्यक सूत्र, आयारदशा, तत्त्वार्थसूत्र।

आगम वाचनी : अन्तगड़सूत्र, दशवैकालिक सूत्र, कल्पसूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, विपाक सूत्र, समवायांग सूत्र, नन्दीसूत्र, पन्नवणा सूत्र।

स्तोक कण्ठस्थ : थोक संग्रह भाग-1,2,3 के थोकड़े, पन्नवणा सूत्र प्रथम भाग के थोकड़े, 47, 50, 800 बोल की बंधी, 24 ठाणा, नवतत्त्व, ज्ञानलब्धि, जीवपज्जवा, इन्द्रियपद, कायस्थिति, गमा, संजया-नियंठा, कर्मग्रन्थ भाग 1 से 6।

स्तोत्र : भक्तामर, कल्याणमंदिर, महावीराष्टक, रत्नाकर पच्चीसी (संस्कृत, प्राकृत), पुच्छिंस्सु णं, उवसग्गहर, हीराष्टकम् (हिन्दी, संस्कृत) आदि।

भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी, राजस्थानी।

अन्य : अ.भा.श्री जैन रत्न आ. शिक्षणबोर्ड की प्रथम से दसवीं कक्षा उत्तीर्ण।

पर्युषण सेवा : तीन वर्ष वैराग्यावधि : 3 वर्ष

मुमुक्षु बहिन सुश्री ट्विंकल सालेचा : परिचय

जन्मतिथि- 25 जुलाई 1990

जन्मस्थान- बालोतरा (जिला-बाड़मेर) राज.

व्यावहारिक शिक्षा- बी.कॉम (प्रथम वर्ष)

पारिवारिक परिचय

दादा-दादी : श्री हनुमानचन्द जी-श्रीमती गुलाबीदेवी जी सालेचा, बालोतरा

पिता-माता : श्री महावीरचन्द जी-श्रीमती कान्ताबाई जी सालेचा, बालोतरा

भाई-बहन : राहुल, भव्य, रुचिका, सलोनी, प्राची,

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र 1 से 4 अध्ययन, वीर स्तुति, उत्तराध्ययन 1,3,4,9, 28वाँ अध्ययन, सुखविपाक सूत्र आदि।

आगम वाचनी : दशवैकालिकसूत्र, नन्दीसूत्र

स्तोक कण्ठस्थ : 25 बोल, 67 बोल, कर्मप्रकृति, गति-आगति, लघुदण्डक, जीवधड़ा, पाँच समिति-तीन गुप्ति, 33 बोल, पाँच देव, उपयोग, जयन्तीबाई के प्रश्नोत्तर, रूपी-अरूपी, संयम, सुख का थोकड़ा, विरह द्वार, योनिद्वार, छःकाय का थोकड़ा, असंयत भव्य-द्रव्य देव, छोटी गतागत, संज्ञापद, संचिट्ठण काल का थोकड़ा।

भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी, राजस्थानी।

अन्य : अ.भा.श्री जैन रत्न आ. शिक्षण बोर्ड की द्वितीया से पंचम कक्षा उत्तीर्ण

वैराग्यावधि : 8 माह

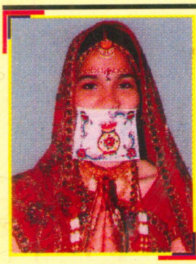

मुमुक्षु बहिन सुश्री वर्षा सालेचा : परिचय

जन्मतिथि- 12 मार्च 1993

जन्मस्थान- बालोतरा (जिला-बाड़मेर) राज.

व्यावहारिक शिक्षा- 8वीं

पारिवारिक परिचय : मुमुक्षु ट्विंकल सालेचा के अनुसार

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, नन्दीसूत्र, आचारांग सूत्र, अणुत्तरोववाई, सुखविपाक सूत्र, वीरत्थुई, निरयावलिया, कप्पवडंसिया, पुप्फिया, पुप्फचूलिया, वण्हिदशा, निशीथ सूत्र, तत्त्वार्थसूत्र 1 से 4 अध्ययन, वीर स्तुति।

आगम वाचनी : अंतगड़ सूत्र, कल्पसूत्र।

स्तोक कण्ठस्थ : थोक संग्रह भाग 1-2 के थोकड़े, पन्नवणा सूत्र भाग 1 के थोकड़े, कर्मग्रन्थ भाग 1 से 6 तक,50, 47, 800 बोल की बंधी, कायस्थिति, गमा, जीवपज्जवा, अजीव पज्जवा, ज्ञानलब्धि, संजय नियंठा आदि।

भाषा ज्ञान : हिन्दी,अंग्रेजी, राजस्थानी।

अन्य : अ.भा.श्री जैन रत्न आ. शिक्षण बोर्ड की प्रथम से पंचम कक्षा उत्तीर्ण

पर्युषण सेवा : दो वर्ष वैराग्यावधिः 3 वर्ष

मुमुक्षु बहिन सुश्री विजयश्री (एलिजा) : परिचय

जन्मतिथि- 20 अक्टूबर 1988

जन्मस्थान- भरतपुर (राज.)

व्यावहारिक शिक्षा- सीनियर सैकेण्डरी

पारिवारिक परिचय

दादा-दादी : श्री कपूरचन्द जी-श्रीमती चन्द्रकलादेवी जी जैन, भरतपुर

पिता-माता : श्री सुभाषचन्द जी-श्रीमती अनितादेवी जी जैन, भरतपुर

भाई : अनन्त, मयंक, हर्षित, प्रियांशु, लक्ष्य, हार्दिक, लाभांश

बहिन-बहिनोई : श्रीमती मनीषाजी-श्री दीपक जी जैन, खेरली
श्रीमती रिंकी जी-श्री नितिन जी जैन, अजमेर, सुश्री नेहा, सुश्री निशा

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र 1 से 28, नन्दीसूत्र, सुखविपाक सूत्र, आचारांग सूत्र, कप्पवडंसियासूत्र, पुप्फिया, तत्त्वार्थसूत्र।

आगम वाचनी : दशवैकालिक सूत्र, आचारांग सूत्र, निरियावलिया पंचक।

स्तोक कण्ठस्थ : 25 बोल, 67 बोल, संज्ञा, उपयोग, गति-आगति, समिति-गुप्ति, विरहद्वार, नवतत्त्व, पाँच देव, रूपी-अरूपी, लघुदण्डक, ज्ञानलब्धि, द्रव्येन्द्रिय, आत्मा का थोकड़ा, 98,102,32 बोल का बासठिया, 33 बोल, 47,50,800 बोल की बंधियाँ, जीवधड़ा, गुणस्थान स्वरूप, जीव पज्जवा, अजीव पज्जवा, कायस्थिति, अबाधाकाल, गमा खेताणुवाय, दिशाणुवाय, पन्नवणा 1,2,3 भाग, कर्मग्रन्थ भाग 1 से 6 आदि।

स्तोत्र : कल्याणमन्दिर, भक्तामर, पार्श्वनाथ स्तुति, उवसग्गहरं आदि।

भाषा ज्ञान : हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, राजस्थानी।

अन्य : अ.भा.श्री जैन रत्न आ. शिक्षणबोर्ड की प्रथम से चतुर्थ कक्षा उत्तीर्ण।

पर्युर्षण सेवा : 1 वर्ष वैराग्यावधि : 8 माह

मुमुक्षु बहिन श्रीमती मंजू डागा : परिचय

जन्मतिथि- 18 मार्च 1960

जन्मस्थान- जेठाणा

व्यावहारिक शिक्षा- हायर सैकेण्डरी

पारिवारिक परिचय

पिता-माता : श्री शांतिलाल जी-श्रीमती चंचलदेवी जी देसरला, जयपुर

पति : श्री सुभाष जी डागा-जयपुर

पुत्र-पुत्रवधू : श्री अमित जी-श्रीमती अनिमा जी डागा, जयपुर

पुत्री : महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. पौत्र : आश्री डागा

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र 5 अध्ययन, उत्तराध्ययनसूत्र 1 से 15 अध्ययन, तत्त्वार्थसूत्र।

आगम वाचनी : अन्तगड़ सूत्र, आचारांग सूत्र, नन्दीसूत्र।

स्तोक कण्ठस्थ : 25 बोल, 67 बोल, गति-आगति, समिति-गुप्ति, लघुदण्डक, कर्म-प्रकृति, गमा, 47,50,800 बोल की बंधियाँ, जीव-अजीव पर्याय, गुणस्थान स्वरूप, कायस्थिति, इन्द्रिय पद, 27 चौघड़ी, 84 लाख जीवयोनि, कर्मग्रन्थ भाग 1 से 5 आदि।

स्तोत्र : कल्याणमन्दिर, भक्तामर, महावीराष्टक, रत्नाकर पच्चीसी, मेरी भावना आदि।

भाषा ज्ञान : हिन्दी।

अन्य : अ.भा.श्री जैन रत्न आ. शिक्षणबोर्ड की प्रथम से तेरहवीं कक्षा (प्रथम स्थान से) उत्तीर्ण।

वैराग्यावधि : 1वर्ष

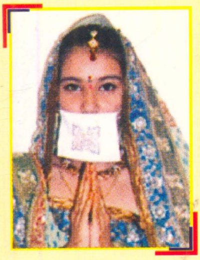

मुमुक्षु बहिन सुश्री प्रीति कानुंगा : परिचय

जन्मतिथि- 27 अक्टूबर 1987 (ज्ञान पंचमी)

जन्मस्थान- हुबली (कर्नाटक)

व्यावहारिक शिक्षा- सीनियर सैकेण्डरी

पारिवारिक परिचय

दादा-दादी : श्री कालूचन्द्र जी-स्व. श्रीमती सुखीबाई जी कानुंगा, हुबली

पिता-माता : श्री अशोक जी-श्रीमती मधुबाई जी कानुंगा, हुबली

भाई : जिनेश, अभिषेक, साहील, जैनम, मोक्ष

बहिन-बहिनोई : विनिता, पूजा, साक्षी, सोनु

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र 1 अध्ययन।

आगम वाचनी : सुखविपाकसूत्र, अनुत्तरोववाई सूत्र।

स्तोक कण्ठस्थ : 25 बोल, 67 बोल, नवतत्त्व, जीव पज्जवा, जीवधड़ा, गुणस्थान स्वरूप, 33 बोल, 98 बोल का बासठिया, समिति-गुप्ति, कर्म प्रकृति, उपयोग द्वार, संज्ञा, लघुदण्डक आदि।

स्तोत्र : भक्तामर, पुच्छिस्सुणं

भाषा ज्ञान : हिन्दी, कन्नड़।

अन्य : अ.भा.श्री जैन रत्न आ. शिक्षणबोर्ड की प्रथम से चतुर्थ कक्षा उत्तीर्ण।

वैराग्यावधि : 2 वर्ष।

मुमुक्षु मंगला बहिन : परिचय

जन्मतिथि- 20 जनवरी 1965

जन्मस्थान- शेगांव (महा.)

व्यावहारिक शिक्षा- 10वीं

पारिवारिक परिचय

दादा-दादी : स्व. श्री किसनलाल जी-स्व. श्रीमती दगडाबाई जी लुंकड़-शेगांव

पिता-माता : स्व. श्री परशराम जी-स्व. श्रीमती प्रेमाबाई जी लुंकड़-शेगांव

भाई-भाभी : श्री चन्दुलाल जी-स्व. श्रीमती लताबाई जी लुंकड़, जलगांव
श्री विजयकुमार जी-श्रीमती सपना जी लुंकड़, जलगांव
श्री अशोक कुमार, श्री अनिल कुमार, श्री सुनील कुमार, श्री दीपककुमार

बहिन-बहिनोई : सौ. मीना जी-श्री दिलीपकुमार जी चिण्डालिया, वणी
सौ. ज्योति जी-श्री संजयकुमार जी बोथरा, रालेगांव
सौ. लीना-श्री नितिनकुमार जी पीपाड़ा, पीपलगांव

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र 1 से 26 और 36वाँ अध्ययन, नन्दीसूत्र, सुखविपाक, अनुत्तरोववाई।

आगम वाचनी : अंतगड़सूत्र, कल्पसूत्र, रायप्पसेणी, ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र, निरयावलिया पंचक।

स्तोक कण्ठस्थ : 25 बोल, 67 बोल, 33 बोल, समिति-गुप्ति, लघुदण्डक, गुणस्थान स्वरूप, संज्ञा, उपयोग, विरहद्वार, पाँच देव, गति-आगति, कर्म-प्रकृति, रूपी-अरूपी, नवतत्त्व आदि।

स्तोत्र : भक्तामर, कल्याणमंदिर, पार्श्वनाथ स्तोत्र, परमेष्ठी स्तोत्र, महावीराष्टक।

भाषा ज्ञान : हिन्दी, मराठी।

अन्य : अ.भा.श्री जैन रत्न आ. शिक्षणबोर्ड की प्रथम से नवमीं कक्षा उत्तीर्ण।

पर्युषण सेवा : 4 वर्ष वैराग्यावधि : 6 वर्ष।

१२	भाद्रपद वदि	१४ मंगल	०७.६.२०१०	३३-४०	११	४	८ गुरू	१३ सोम
१३	भाद्रपद सुदि	१४ बुध	२२.६.२०१०	१५-०	३	-	-	-
१४	आश्विन वदि	३० गुरू	०७.१०.२०१०	४४-५	१४	-	६ बुध	१० रवि
१५	आश्विन सुदि	प्र.१५शुक्र	२२.१०.२०१०	६०-०	-	१५	-	-
१६	कार्तिक वदि	३० शनि	०६.११.२०१०	८-३८	८	-	३ मंगल	७ शनि
१७	कार्तिक सुदि	१५ रवि	२१.११.२०१०	३६-४३	२	६	-	-
१८	मार्गशीर्ष वदि	३० रवि	०५.१२.२०१०	३६-३५	११	-	२ मंगल	५ शुक्र
१९	मार्गशीर्ष सुदि	१४ सोम	२०.१२.२०१०	१८-२८	-	८	१४ सोम	-
२०	पौष वदि	३० मंगल	०४.१.२०११	१७-३५	४	-	-	३ शुक्र
२१	पौष सुदि	१५ बुध	१९.१.२०११	४८-२०	१३	६	११ रवि	-
२२	माघ वदि	प्र.३०बुध	०२.२.२०११	६०-०	७	३०	-	१ गुरू
२३	माघ सुदि	१४ गुरू	१७.२.२०११	२५-४५	-	-	१० रवि	१४ गुरू
२४	फाल्गुन वदि	३० शुक्र	०४.३.२०११	४८-०	२	-	-	-
२५	फाल्गुन सुदि	१५ शनि	१९.३.२०११	४२-१०	१४	२	७ शनि	११ बुध
२६	चैत्र वदि	३० रवि	०३.४.२०११	३३-४८	६	-	-	-

-चातुर्मास प्रारम्भ (चातुर्मासी पक्खी) आषाढ सुदि प्र.१५ रविवार २५.७.२०१० ।

-पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म. सा. की ८४वीं पुण्यतिथि श्रावण वदि ३० मंगलवार १०.८.२०१० ।

-पर्युषण महापर्व प्रारंभ भाद्रपद वदि १२ रविवार ५.९.२०१० ।

-संवत्सरी महापर्व भाद्रपद सुदि ५ रविवार १२.९.२०१० ।

-आयंबिल ओली प्रारम्भ, आसोज सुदि ७ गुरूवार १४.१०.२०१०।

-पूज्य आचार्य श्री भूधरजी म. सा. की पुण्य तिथि आसोज सुदि १० रविवार १७.१०.२०१० ।

-आयंबिल ओली पूर्ण आसोज सुदि प्र.१५ शुक्रवार २२.१०.२०१० ।

-स्वाति नक्षत्र प्रारम्भ कार्तिक वदि १ रविवार २४.१०.२०१०, इसके पश्चात् गाजबीज होने पर सूत्र की असज्झाय रहेगी।

-भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक कार्तिक वदि १४ शुक्रवार ५.११.२०१० ।

-वीर संवत् २५३७ प्रारम्भ एवं गौतम प्रतिपदा कार्तिक सुदि १ रविवार ७.११.२०१० ।

-ज्ञान पंचमी कार्तिक सुदि ५ बुधवार १०.११.२०१०

-आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का ४८वां दीक्षा दिवस कार्तिक सुदि प्र.६ गुरूवार ११.११.२०१० ।

-चातुर्मासिक पक्खी (चातुर्मास पूर्ण) एवं वीर लोंकाशाह जयन्ती कार्तिक सुदि १५ रविवार २१.११.२०१० ।

-मौन एकादशी एवं पूज्य श्री विनयचन्द्र जी म.सा. की ९५वीं पुण्य तिथि मार्गशीर्ष सुदि ११ शुक्रवार १७.१२.२०१० ।

-भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक पौष वदि १० गुरूवार ३०.१२.२०१० ।

-खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण पौष वदि ३० मंगलवार ४.१.२०११ ।

-फाल्गुनी चातुर्मासी पर्व (चातुर्मासिक पक्खी) फाल्गुन सुदि १५ शनिवार १९.३.२०११ ।

-भगवान आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का ७३वां जन्म दिवस चैत्र वदि ८ शनिवार २६.३.२०११ ।

पक्खी पत्र प्राप्ति स्थान : श्री रिखबचन्द जी सिंघवी, 507 ए, 5-बी रोड, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.), फोन-2431924

दीक्षा के उपलक्ष्य में

आत्मार्थी की भावना

श्री मनमोहनचन्द बाफना

(तर्जः- चेतन चिदानन्द चरणों में)

भाग्योदय पा भाव सुनहरे, समता रस को पाऊँ मैं,
तन, धन और परिजन सब की, ममता को विसराऊँ मैं।
आत्म सुरक्षा हेतु संयम, मन में राग या द्वेष नहीं,
इस संसार को छोड़ा मन से, किंचित् भी कोई मोह नहीं,
रोम-रोम पुलकित है मन से, समता मय बन जाऊँ मैं।।
किसी वेदना को पाऊँ तो, खन्दक मुनि का ध्यान करूँ,
कष्ट मुक्ति की जिनवर से मैं, कभी नहीं अरदास करूँ,
हंसते-हंसते कर्म काट के, देव गुरु को ध्याऊँ मैं।।
संयम पथ में घोर परीषह, श्रमण व्रतों में हो दाग नहीं,
ज्ञान क्रिया से ज्योति पाकर, खंडित हो व्रत कौर नहीं,
गुरुवर पा भगवान के जैसे, कभी नहीं घबराऊँ मैं।।
विषय कषायों को छोड़ूँ मैं, समभावों की सृष्टि हो,
गजसुकुमार जैसी पा समता, मन में ऐसी दृष्टि हो,
जीवन कला हस्ती सी पाकर, प्रभु सा ही बन पाऊँ मैं।।
कष्टों को मैं सहूँ शान्ति से, कर्म किये वो पाये हैं,
वीर के चरणों में खीर ग्वाल ने, कानों में खीले ठुकाये हैं,
उनका चिन्तन मन से कर लूँ, वीतरागता पाऊँ मैं।।
कलयुग में सतगुरु को पाया, पुनवानी अति भारी है,
रत्नवंश के रतन हस्ती के, हीरा मान उपकारी हैं,
इनकी शरण में बन आत्मार्थी, ज्ञान क्रिया दृढ पाऊँ मैं।।
जप, तप, ध्यान, मौन साधक बन, जिनशासन चमकाना है,
हीरा गणी, गुरु मान को पाकर वो रत्न वंश उजियारा है,
गुरु सेवा में सदा समर्पित, शान्ति सुधारस पाऊँ मैं।।

-प्रमोद दाल मिल, कानपुर (उत्तरप्रदेश)

युवा-स्तम्भ

अहिंसामय जीवन

श्री चतरसिंह मेहता

'अहिंसा' शब्द को जितना महत्त्व जैन धर्म में दिया गया है उतना किसी अन्य धर्म में नहीं मिलता। भगवान् महावीर की देशनाओं में पाँच महाव्रत केन्द्रीय स्थान रखते हैं। इन पाँच महाव्रतों में भी पहला स्थान अहिंसा को दिया गया है। इसीलिये कहा है- 'जैसे जगत् में मेरु पर्वत से ऊँचा और आकाश से विशाल कुछ भी नहीं है, वैसे ही अहिंसा के समान कोई धर्म नहीं है।' अहिंसा का अर्थ होता है- हिंसा का न होना। हिंसा का अर्थ होता है किसी को मारना तो अहिंसा का अर्थ हो जाता है- किसी को नहीं मारना। परन्तु महावीर ने 'अहिंसा' शब्द की विशद व्याख्या की है। उसे सूक्ष्मतम स्तर तक पहुँचाया है। उन्होंने कहा है-

हिंसादो अविरमणं, य परिणामो य होइ हिंसाहु।
तम्हा पमत्तजोगे, पाणवयरोपओ णिच्चं ।।

वे कहते हैं- दूसरों को मारने का, दूसरों को दुःख देने का भाव तो हिंसा है ही, लेकिन जब तक बोधपूर्वक दूसरे को दुःख देने की समस्त संभावना का त्याग नहीं किया है तब तक हिंसा जारी रहेगी। उन्होंने अहिंसा का अर्थ दिया-दूसरे को दुःख पहुँचाने की वृत्ति का त्याग, चाहे वह मन से हो, वचन से हो या काया से हो।

अहिंसा की ऐसी सूक्ष्मतम परिभाषा के साथ उन्होंने मानव कल्याण के लिये उन विभिन्न सूत्रों की चर्चा की जिनसे अहिंसा सध सकती है। उन्होंने विविध रूपों में देशना दी, जिसको जो भी रास आ जाए, भीतर उतर जाय। महावीर कहते हैं- भाव ही असली बात है, क्रिया तो उसकी छाया है। जो भाव में घट जाएगा तो क्रिया में आने से बच नहीं सकता। भाव के बिना क्रिया में आए तो वह पाखंड ही होगा, अतः भाव ही मुख्य है। गीता शुरु होती है तो कहती है, कुरुक्षेत्र धर्मक्षेत्र है। कुरुक्षेत्र बाहर नहीं है, धर्म का क्षेत्र है और धर्म का क्षेत्र भीतर होता है। इसी भीतर की दृष्टि से कुछ बातों पर विचार किया जा सकता है।

हिंसा की उत्पति मन में :-

अमृतचन्द्र कहते हैं-

अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति।
तेषामेवोत्पतिर्हिंसेति जिनागमस्य संक्षेपः ।।

आत्मा में रागादिभावों की उत्पति ही हिंसा है और आत्मा में रागादि भावों की उत्पत्ति नहीं होना ही अहिंसा है- यही जिनागम का सार है।

आत्मा में रागादि भावों की उत्पत्ति ही हिंसा है। यह कहकर जहाँ भाव हिंसा पर बड़ा बल दिया गया है, द्रव्य हिंसा की चर्चा तक नहीं की गई। अतः यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या अमृतचन्द्र द्रव्य हिंसा को हिंसा ही नहीं मानते? यदि मानते हैं तो सीधे शब्दों में क्यों नहीं कहते कि दुनिया में मारकाट का होना हिंसा है और मारकाट का नहीं होना ही अहिंसा है। यों हिंसा-अहिंसा की यह सीधी परिभाषा है जो सभी को समझ में आ सकती है, इसे दुरुह क्यों बनाया जाए। जैन शास्त्रों में हिंसा तीन प्रकार की कहीं गई है- मन से, वचन से और काया से।

काया की हिंसा तो सरकार रोकती है। यदि कोई किसी को मार दे या उसके शरीर को नुकसान पहुँचाए तो पुलिस कार्यवाही होगी और उस पर मुकदमा चलेगा। पर अन्य प्रकार की हिंसा भी है-वाणी की हिंसा, जो दिन में हम कई बार करते हैं। इस पर भी पुलिस कार्यवाही हो तो न पुलिस के पास इतना इन्तजाम है, न पीड़ित के लिये भी कार्यवाही कराना संभव है। वाणी की हिंसा को रोकने का कार्य समाज करता है। जो वाणी का सदुपयोग करते हैं, समाज उन्हें सम्मान से देखता है और जो दुरुपयोग करता है, समाज में उसका अपमान ही होता है, वह उपेक्षित ही रहता है।

भगवान् महावीर के अनुसार न जहाँ सरकार का प्रवेश है, न समाज की चलती है, वहाँ से धर्म का कार्य आरम्भ होता है। इसीलिये उन्होंने कहा कि आत्मा में रागादि की उत्पति ही हिंसा है और आत्मा में रागादि की उत्पति का न होना ही अहिंसा है। यहाँ समझाने के लिये, आत्मा व मन का अभेद मान कर बात की जा रही है। पहले हिंसा मन में उत्पन्न होती है। यदि क्रोधादि हिंसा मन में न समाये तो वाणी में प्रकट होती है। यदि वाणी में भी न समा पाए तो फिर काया में प्रस्फुटित होती है। हिंसा की उत्पत्ति का यही क्रम है।

विश्व संस्था यूनेस्को के घोषणा पत्र के प्रारम्भिक शब्द हैं- चूंकि युद्ध मानव के मस्तिष्क में शुरू होते हैं, अतः शान्ति की मोर्चा बन्दी का निर्माण भी मस्तिष्क में ही होना चाहिये। दिमाग सद्गुणों या भ्रष्ट आचरणों-दोनों का ही उद्गम है। जो व्यक्ति युद्ध में हजारों व्यक्तियों को जीतता है उसकी तुलना में वह व्यक्ति

कहीं बड़ा है जो स्वयं को जीतता है। वही सबसे बड़ा विजेता है। बुद्ध, ईसा, महावीर, कृष्ण, नानक, कबीर, मीरा, मुहम्मद अमर हैं जिन्होंने स्वयं को जीता। जो दूसरों को जीतने में रत रहे, वे कहीं खो गये। स्पष्ट है जो मन को जीते, आत्मा में रत हो जाए, वही सबसे बड़ा अहिंसक है।

महावीर ने राग को हिंसा की उत्पत्ति का बड़ा कारण बताया। राग का अर्थ गलती से प्रेम समझ लिया जाता है। असल में राग प्रेम के बिल्कुल विपरीत है। राग बांधता है, प्रेम बांधता नहीं। राग ममत्व है, कुछ पाने की चाह है, मोह है। प्रेम वह है जिसमें कोई अपेक्षा नहीं। वह तो केवल दिया जाता है। राग के कारण व्यक्ति अन्य व्यक्ति से बंधा रहता है और यही दूसरों को दुःख पहुँचाने का, हिंसा का कारण बन जाता है। जितना मन राग से मुक्त होता है, उतना ही वह अहिंसा की ओर प्रवृत्त होता है।

मेरा कुछ भी नहीं :-

ज्ञानी कहते हैं कि अहिंसा का आधार है आत्मज्ञान और हिंसा का आधार है आत्म-अज्ञान। आत्मज्ञान है कि यहां सब संसार का है, मेरा कुछ भी नहीं है। परन्तु अज्ञान के कारण दावे करते रहते हैं कि चीज मेरी है, मकान मेरा है, जमीन मेरी है, बेटे मेरे हैं, धन, प्रतिष्ठा मेरी है। जितना मेरा बढ़ता जाता है उतना ही मैं का विस्तार होता है और 'मैं' के विस्तार का नाम है- अहंकार। अहंकार पाप है। पुण्य का एक ही उपाय है निरहंकारी होना अर्थात् कर्ता का न रह जाना। जब व्यक्ति में अकर्ता का भाव आ जाए, यह भाव कि जगत में मेरा कुछ भी नहीं है, सब उसका है तो वह कोई ऐसा काम नहीं करेगा, जिससे मैं व मेरे का विस्तार हो और किसी को भी कोई कष्ट पहुँचे। अहिंसा सध गई।

इब्राहिम बल्ख का सम्राट् था। एक फकीर उसके द्वार पर आया और पहरेदार से जोर-जोर से कहने लगा कि इस सराय में मुझे ठहरना है। पहरेदार ने कहा कि तुम्हें कई बार कह दिया कि यह सराय नहीं है, यह राजा का महल है। यह ठहरने की कोई जगह नहीं है। तो उसने कहा कि राजा को देखना चाहता हूँ। इब्राहिम भी भीतर से सुन रहा था। उस फकीर की आवाज में कुछ जादू था, ऐसा नहीं लग रहा था कि कोई पागल है। राजा ने कहा, उसे भीतर आने दो। फकीर भीतर गया। उसने कहा, कौन राजा है? तुम ? जो सिहांसन पर बैठा था, कहा कि साफ है कि मैं राजा हूँ और यही मेरा निवास है। तुम व्यर्थ ही पहरेदार से झंझट कर रहे हो।

फकीर ने कहा कि बड़ी हैरानी की बात है। मैं पहले भी आया था। तब एक दूसरा आदमी इस सिंहासन पर बैठा था और वह भी यही कहता था। राजा ने कहा, वे मेरे पिता थे जो अब स्वर्गवासी हो गये। उसने कहा कि इससे पहले भी मैं आया था तब एक तीसरा व्यक्ति ही बैठा था। पहरेदार भी बदल जाते हैं, मकान वही है, जब भी मैं आता हूँ, यही झंझट। राजा ने कहा वे मेरे पिता के पिता थे, वे भी स्वर्गवासी हो गये। तो उस फकीर ने इब्राहिम से पूछा कि जब चौथी बार आऊँगा तब तुम मिलोगे या और कोई मिलेगा। जब इतने लोग बदल जाते हैं इसलिये तो मैं कहता हूँ कि यह सराय है। तुम भी टिके हो थोड़ी देर, मेरे टिक जाने से क्या बिगड़ रहा है। सुबह हुई तुम भी चल पड़ोगे, हम भी चल पड़ेंगे। कहते हैं, इब्राहिम को बोध हुआ। सिहांसन से नीचे उतर आया और कहा, तूने मुझे जगा दिया। अब तू रूक, मैं चला। जब सुबह जाना पड़ेगा तो अब देरी क्यों करनी? इब्राहिम ने राजमहल छोड़ दिया और सूफियों का बड़ा फकीर हो गया।

जो अपने लिये चाहे: –

समणसुत्तं में कहा गया है–

> जं इच्छसि अप्पणतो जं च ण इच्छसि अप्पणतो।
> तं इच्छ परस्स वि य एत्तियगं जिणसासणं।।

जो तुम अपने लिये चाहते हो, वही दूसरों के लिये चाहो। जो तुम अपने लिये नहीं चाहते, वह दूसरों के लिये भी मत चाहो। यही जिनशासन है, तीर्थंकर का उपदेश है। जीसस ने भी कहा है, जो तू चाहता हो कि लोग तेरे प्रति न करें तो वह भूल कर भी दूसरे के लिये मत करना। जो मेरे भीतर जीवन की छिपी चाह है, वह दूसरे के भीतर भी जीवन की छिपी चाह है।

परन्तु होता यह है कि यदि मकान बनाना चाहते हैं वैसा ही कोई दूसरा बना ले तो हम सुख का अनुभव नहीं करते, दुःख ही करते हैं, क्योंकि फिर हमारे मकान का कोई अर्थ नहीं रहा। जब कोई सुखी होता है तो सुख प्रकट करने नहीं जाते। महावीर का यह सूत्र बड़ा गहरा है। यदि अपने लिये जो चाहते हैं वह दूसरे के लिये भी चाहने लग जाएं, अपने लिए न चाहें वह दूसरों के लिये न चाहने लग जाएं तो जीवन की आपाधापी ही खो जाए। अचानक प्रतिस्पर्धा मिट जाएगी और महत्त्वाकांक्षा को जगह नहीं रहेगी। फिर काम, क्रोध, लोभ, हिंसा का भाव भी नहीं आ सकता। यही जिनशासन है। जिन्होंने स्वयं को जाना है, उनका यही

उपदेश है।

चाहते तो सभी हैं:-

ऐसा व्यक्ति खोजना कठिन है जिसने न चाहा हो कि क्रोध से छुटकारा हो, झूठ से बचूं, अनीति की जो कुरूपता है वह पीड़ा न दे। परन्तु चाहने से कुछ नहीं होता, क्योंकि चाह संकल्प नहीं बन पाती। वह प्राणी में आत्मसात् नहीं होती। कारण है। अज्ञान में जीने के लिये कोई श्रम नहीं करना पड़ता, ज्ञान में जीने के लिये श्रम करना पड़ता है। अध्यात्म सबसे बड़ा श्रम है। यह कोई बाह्य सम्पत्ति भी नहीं है जिसे संगृहीत किया जा सके। धर्म की बात को आगे चलाते रहते हैं। कहते हैं, कर लेंगे बुढ़ापे में, अभी क्या जल्दी है। पाप करने की तो जल्दी है, अभी कर लेंगे, वह जवानी में ही हो सकता है। धर्म बुढ़ापे में कर लेंगे।

अरब में एक कहावत है कि परमात्मा संसार में भेजने वाले हर एक को पास बुलाकर अंतिम विदा के क्षण में एक मजाक कर देता है। कान में कह देता है कि तुमसे महान् व्यक्ति मैंने कभी बनाया ही नहीं। हर व्यक्ति यही बात जीवन भर अपने मन में याद रखता है और सोचता है कि वही महाज्ञानी है। अहंकारी मानता ही नहीं कि वह कभी कोई गलत कर सकता है।

महावीर ने कहा है-'जीव जरा, जन्म और मरण से होने वाले दुःख को जानता है, उसका विचार भी करता है, किन्तु विषयों से विरक्त नहीं हो पाता। अहो! माया की गांठ कितनी सुदृढ़ है।' यहाँ बुद्धिहीन को खोजना तो बहुत कठिन है, सभी बुद्धिमान है। फिर भी जब माया पकड़ती है तो उसकी पकड़ में आ ही जाते हैं। इसलिये ईमानदारी से अन्तर्मन में प्रवेश करने की आवश्यकता है। तभी जीवन सरल, सीधा, निष्पाप और अहिंसामय हो सकता है।

-सेक्टर 2, कुड़ी भगतासनी, जोधपुर-342005 (राज.)

संवाद के लिए नया प्रश्न

निम्नाङ्कित प्रश्न का उत्तर जिनवाणी के सम्पादक को 30 अप्रेल तक प्रेषित करें।

प्रश्नः- क्या मनुष्य एक जन्म के बाद दूसरे जन्म में भी मनुष्य के रूप में ही जन्म लेता है या अपने बुरे कर्मों के कारण पशु, पक्षी अथवा कीट-पतंग जैसी योनियों में भी जन्म ले सकता है? *-श्री एम. सी. नवलखा, जयपुर (राज.)*

उपन्यास (14)

सुबह की धूप

श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

पूर्ववृत्तः- सेठ पूसाराम किरोड़ीमल जी से मिलने विश्वास और रमन उनके कार्यालय गये। सेठ जी ने उनकी आवभगत कर कहा कि मेरे अस्पताल में एक सेवाभावी डॉक्टर की आवश्यकता है। मैं आपको बीस हजार के वेतन के साथ फ्लेट एवं कार की सुविधा दूँगा। विश्वास ने प्रत्युत्तर में कहा कि मुझे सेवा करने में प्रसन्नता होगी। सेठ जी ने तत्काल विश्वास को डॉक्टर के पद पर नियुक्त कर मुनीम जी के साथ अस्पताल भेज दिया। वहाँ सबसे मिलने के बाद वे दोनों कार में बैठकर घर की ओर चल दिए। अब आगे.......

विश्वास की प्रसन्नता का कोई ठिकाना न रहा।

'रमन! गाड़ी रोको।'- अचानक विश्वास ने कहा।

'क्यों, क्या बात है?'

'अरे भाई! नौकरी लग गई है। भाभी के लिये मिठाई तो ले लूँ।'

'नहीं। अभी क्या जरूरत है विश्वास! पहला वेतन मिलने पर लेना।.....केवल मिठाई से ही हमें निपटाना चाहते हो? मैं तो पूरी पार्टी लूंगा।'

'आज तो मैं मिठाई खिलाऊँगा, तुम नहीं।'

'तुम भी बहुत जिद्दी हो रमन! जैसी तुम्हारी इच्छा।'

कार रमन के बंगले के सामने आकर रुक गई, तो दोनों मित्र मुस्कराते हुए उसमें से उतरे और बंगले में आ गये।

'क्या हुआ?' द्वार पर ही खड़ी विमला ने इन्हें देखकर पूछा।

'वही, जो हम चाहते थे।'

'सच कह रहे हो?'

'बिल्कुल सच! कल से ही विश्वास को अपना कार्यभार सम्हालना है। बीस हजार वेतन मिलेगा। निवास व कार की सुविधा मुफ्त।'

'वाह! तब तो मजा आ गया।'-प्रसन्नता में उछल कर विमला बोली, और दौड़ती हुई ऊपर आकर चिल्लाई-'मीनाक्षी! ओ मीनाक्षी!!'

'क्या है दीदी!'

'बस मिठाई तैयार करो। विश्वास को नौकरी मिल ही गई है।'

'नौकरी में ही मिठाई?'

'क्यों नहीं? भारत में, इतनी सहजता से नौकरी मिल जाना, भाग्य की बात है।'

'मुझे पता नहीं था दीदी! आप के सहयोग से अधिक परेशानी नहीं हुई।

'सबको अपने भाग्य से ही कुछ प्राप्त होता है, मीनाक्षी! विश्वास बाबू ने अच्छे कर्म किये थे। इसलिए, सहज ही काम सिद्ध हो गया।'

'अरे! तुम बातें ही करती रहोगी या कुछ मिठाई भी खिलाओगी?'-रमन ने विश्वास के साथ ऊपर पहुँच कर कहा।

'अभी लेकर आती हूँ। आप बैठिये तो।'- कहती हुई विमला, कमरे में गई, और एक प्लेट में मिठाई लाकर, उनके सामने रखती हुई बोली-'लीजिए, मुँह मीठा कीजिए।'

'लो भाई विश्वास! पहिले तुम्हीं अपना मुँह मीठा करो।'-रमन ने कहा।

'पहले भाभी तुम!' -विश्वास ने विमला से आग्रह किया।

'मैं तो लेकर आई ही हूँ। आप लोग लीजिए!'-विमला ने उत्तर दिया, फिर रसोईघर की ओर मुँह करके बोली- 'ओ मीनाक्षी! तुम भी आओ, अपना मुँह मीठा करो। मैं आकर चाय बना लूँगी।'

विमला, रसोईघर में गई। उसने देखा-'मीनाक्षी तो अब तक चाय बना भी चुकी है।' अब उसने स्वयं ट्रे सम्हाली, और मीनाक्षी को साथ में लिवाकर सबके साथ आ बैठी।

सबने एक-एक कप उठा लिया।

'रमन! मैं सोचता हूँ, कल ही हम वहाँ चले जायें' -विश्वास ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा- 'भाभी को साथ में ले जाऊँगा, ये वहाँ की सब व्यवस्था बना देंगी।'

'तुम्हें वहाँ जमाने के लिए मैं अवश्य चलूँगी, विश्वास बाबू!'

'और रमन! कल आफिस के बाद तुम भी वहीं आ जाना। भोजन भी वहीं होगा।

'भोजन और वहाँ?...कमाल है, अभी तुम तो वहाँ पहुँचे नहीं। सामान भी वहाँ कुछ नहीं है। फिर भोजन क्या करेंगे वहाँ?'- रमन ने हँसते हुए पूछा।

'भाभी सब खरीद लेंगी और, व्यवस्थित भी कर देंगी। तुम्हें वहीं आना है।'-

विश्वास ने दृढ़ता के साथ कहा।

'अच्छा भाई! आ जाऊँगा। विमला! तुम कल विश्वास के साथ चली जाना और इसका घर ठीक व्यवस्थित कर आना।'

'ठीक है। आप वहीं आ जाइएगा।'– विमला ने अपनी स्वीकृति दी, फिर पूछा– 'समय क्या हुआ है?'

रमन ने घड़ी देखकर बतलाया–'सात बज गये हैं। मालूम ही नहीं पड़ा। अरे भाई विश्वास! अब तुम्हारा क्या कार्यक्रम है?'

'बस, कल नौ बजे चला जाऊँगा। फिर बारह बजे आकर भाभी और मीनाक्षी को लिवा ले जाऊँगा।'

'यही ठीक रहेगा। क्यों विमला?'

'जी!'

'खाना तैयार है क्या?'

'हाँ तैयार है। कहो तो लगा दूँ।'

'इसमें भी पूछने की जरूरत है। आज, इधर–उधर घूमने से कुछ थकान भी आ गई है। जल्दी करो भाई! अगर इधर सोने में देर हो गई, तो सुबह भी देर तक सोये रह जायेंगे। फिर, आफिस जाने में देर हुई तो समझलो कल की छुट्टी।'

'खाना लग चुका है, आ जाइये।'–विमला ने आवाज दी।

विश्वास और रमन, दोनों उठकर डाइनिंग टेबल पर आ गये। विमला और मीनाक्षी भी वहीं आकर बैठ गई। अब चारों ने एक साथ भोजन शुरु किया।

'पान मँगवाऊँ' – भोजन के बाद विमला ने पूछा।

'क्यों विश्वास! या नीचे चलकर खाने का विचार है?'–रमन ने पूछा।

'मैं तो पान खाता नहीं। तुम अपने लिए मँगवा लो।'

'मुझे भी शौक खास नहीं है। अच्छा हम दोनों के लिये इलायची ला दो विमला।'–रमन ने वैकल्पिक सुझाव दिया।

इलाचयी खाने के बाद रमन ने कहा– 'चलो विश्वास! अब आराम करें।' 'अरे भाई! पत्रिका भी तो ला दो। ताकि पढ़ते–पढ़ते आराम से नींद आ जाये।'

विमला ने रमन को पत्रिका लाकर दी, तो वह विश्वास के साथ अपने शयन कक्ष में चला आया। और, विमला व मीनाक्षी, बाकी का काम निपटाने में लग गई। (क्रमशः)

नारी-स्तम्भ

धर्म की धुरी है नारी*

डॉ. दिलीप धींग

जैन धर्म में आरम्भ से ही नारी को गौरवपूर्ण स्थान दिया गया है। समस्त ज्ञान का आधार है- अक्षर और अंक। प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान् ऋषभदेव ने अपनी सुपुत्री और प्रथम सती ब्राह्मी के माध्यम से अक्षर-ज्ञान और द्वितीय सती सुन्दरी के माध्यम से अंकविद्या (गणित) की शिक्षा दी। इस प्रकार जैन परम्परा में नारी को शिक्षा देना तथा नारी के माध्यम से शिक्षा के प्रसार का कार्य प्रागैतिहासिक काल में ही प्रारम्भ हो गया था। उस शिक्षा में संस्कार, धर्म, अध्यात्म, ज्ञान-विज्ञान सब कुछ था। श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार तो इस अवसर्पिणी काल में प्रथम सिद्धि भी माता मरुदेवी ने ही पाई।

भले ही इसे आश्चर्य कहा जाए, श्वेताम्बर परम्परा ने उन्नीसवें तीर्थंकर मल्लीनाथ को स्त्री रूप में स्वीकार करके नारी को तीर्थंकर का गौरव भी प्रदान कर दिया। वस्तुतः बात स्त्री और पुरुष की नहीं, अपितु साधना और पुरुषार्थ की है। मल्लीनाथ ने अपनी कुल 55 हजार वर्ष की आयु में से सिर्फ सौ वर्ष आगार धर्म में व्यतीत किये तथा जिस दिन दीक्षा ली, उसी दिन दीक्षा के महज डेढ़ प्रहर में ही केवल-ज्ञान को भी प्राप्त कर लिया। उम्र के अनुपात में सबसे लंबा तीर्थंकर जीवन, स्वल्प छद्मस्थकाल तथा एक ही दिन में दो कल्याणक जैसे तथ्य मल्लीनाथ की विशिष्टताएँ हैं।

ऐतिहासिक काल की दृष्टि से देखा जाए तो चन्दबाला के हाथों भगवान् महावीर का पारणा एक क्रांतिकारी घटना थी। सारे धनपति और सत्ताधीश प्रतीक्षा करते रह गये, स्वर्ण-रजत थाल में सजे सारे श्रेष्ठ व्यंजन पड़े रह गये। तीर्थंकर महावीर के कदम एक दुखियारी और बिकी हुई दासी के द्वार पर थम जाते हैं। मानो उस समय, समय की गति भी थम जाती है। भगवान् महावीर पुनः लौटने लगते हैं तो चन्दनबाला के आँसू उन्हें रोक लेते हैं, एक इतिहास बन जाता है। चन्दनबाला का जीवन हर नारी के लिए आदर्श है। सचमुच, छब्बीस

* जैनाचार्य हस्ती जन्म शताब्दी समिति (आंध्रप्रदेश) द्वारा 21 फरवरी 2010 को हैदराबाद में आयोजित "आचार्य हस्ती का कथन - नारी धर्म की धुरी" विषयक संगोष्ठी में प्रदत्त व्याख्यान पर आधारित।

शताब्दियों से आज तक चन्दनबाला धर्म की धुरी, धर्म की प्रबलतम प्रेरणा बनी हुई है। चन्दनबाला एक वीरांगना माँ धारिणी की वीर बेटी थीं। जिन्होंने सतीत्व की रक्षार्थ अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया। चन्दनबाला धर्म और शील की रक्षार्थ अपने धर्मपिता धनवाह की शरण में रह रही थीं। धनवाह बार-बार पूछता - "बेटी! कोई तकलीफ तो नहीं है?" चन्दनबाला कहती "कोई तकलीफ नहीं है।" धनवाह की पत्नी मूला चन्दनबाला को तरह-तरह के कष्ट दे रही थी। लेकिन चन्दनबाला बिना उफ् किये सबकुछ असीम समभावों से सह रही थीं। उसे शारीरिक कष्टों और मान-अपमान की परवाह नहीं थी। उसे चिन्ता थी अपने धर्म की, जो धनवाह के घर में सुरक्षित था।

चन्दनबाला के जीवन से थोड़ी-सी प्रेरणा भी हमारी माताएँ और बहिनें ले सकें तो अनेक पारिवारिक और सामाजिक समस्याएँ नौ दो ग्यारह हो सकती हैं। जो सहता है, वह रहता है- व्यक्ति भी और परिवार भी। आर्जव और मार्दव के आंगन में कलह पैदा होने का अवसर ही नहीं बचता है। 'जैन तत्त्व प्रकाश' में लिखा है कि कोई व्यक्ति किसी के कटु वचन को यदि परम क्षमाभाव से गटागट पी जाता है तो उसे 66 करोड़ उपवास का फल मिलता है। वस्तुतः सारे जप-तप का सार क्षमा और समता है, त्याग और तितिक्षा है। इन गुणों को जीवन और परिवार में स्थान देने की बहुत जरूरत है।

नारी ममता, समता और क्षमता की त्रिवेणी होती है। नारी सुलभ सारे सद्‌गुणों और विशेषताओं को इस त्रिवेणी में समाविष्ट किया जा सकता है। ममता से वह नई पीढ़ी का सृजन करती है। परिवारजनों के प्रति प्रेम, वात्सल्य, अतिथि-सत्कार आदि के माध्यम से वह पूरे परिवार को एकसूत्र में बांधे रखती है। समता की उसकी यह भावना धर्म का स्पर्श पाकर उत्कर्ष पाती है और वह अखूट क्षमता अर्जित करती है। अपनी इस क्षमता से वह जीवन के अगणित कष्ट और संघर्ष हँसते-हँसते झेल जाती है। सुबह सबसे पहले उठने वाली और सबके सो जाने के पश्चात् देर रात सोने वाली यह नारी सब जगह धुरी और केन्द्र के रूप में कर्तव्य पालन करती रहती है।

नारी देहरी का दीपक होती है। वह घर के भीतर भी उजाला करती है और बाहर भी। वह अपने श्रेष्ठ कार्यों और सद्‌गुणों से दो कुलों का गौरव बढ़ाती है। लेकिन महिलाओं को एक बात स्मरण रखनी चाहिये कि विवाह के उपरान्त उनका ससुराल ही उनका प्रथम घर होता है। जबकि पुरुष के लिए ससुराल दूसरा

घर होता है। यह हमारी सामाजिक व्यवस्था है और इस व्यवस्था के अन्तर्गत नारी को सारे अधिकार भी प्राप्त हैं। फिर भी यदि उसकी निष्ठा में अन्तर रहता है तो वैसी स्थिति स्वयं नारी के अपने और अपने पारिवारिक जीवन के लिए अहितकर सिद्ध होती है। विवाहित महिला का पीहर के प्रति अति-मोह तथा पीहर पक्ष के अनावश्यक हस्तक्षेप से अनेक परिवारों की शान्ति और समरसता खत्म हुई है।

बड़े अरमान से व्यक्ति अपने रिश्ते तय करता है, बनाता है। ऐसे रिश्तों की मधुरता और गरिमा को कायम रखने में महिलाओं की अहम् भूमिका होती है। नारी अपनी इस महत्त्वपूर्ण भूमिका को यदि विवेक और मैत्री से निभाती है तो हमारे पारिवारिक और सामाजिक जीवन में अपार खुशियाँ और सफलताएँ अठखेलियाँ करने लगती हैं। धार्मिक जीवन भी इससे धन्य हो जाता है। मैं जब भी किसी ननद-भोजाई, सास-बहू अथवा देवरानी-जेठानी को प्यार और सौहार्द से वार्तालाप करते हुए देखता हूँ तो मेरा हृदय आनन्द-विभोर हो जाता है। इसके विपरीत महिलाओं की आपसी कटाकटी में सभी प्रकार की धर्म-साधनाएँ लज्जित हो जाती हैं और मेरा कवि-मन बेहद व्यथित।

वर्तमान में नारी के लिए घर-बाहर सर्वत्र कार्य करने के लिए बहुत सारी अनुकूल स्थितियाँ उपलब्ध हैं। इन अनुकूलताओं में बहने की बजाय धर्म और संस्कृति के विकास में इनका पूरा लाभ उठाया जाना चाहिये। हमें हमारी युवा बहिनों को धर्म के निकट लाने का प्रयास करना चाहिये। लेकिन वैसा नहीं हो पा रहा है। कुछ युवा बहिनें आधुनिकता में खो गई हैं। उनका वस्त्र-विन्यास ही देखें, वह किसी भी भद्र पुरुष को संकोच में डाल देता है। दूरदृष्टि से देखा जाए तो लड़कियों का अशालीन पहनावा उनके लिए ही अहितकर सिद्ध होता है। हम एक उदाहरण लें। कोई व्यक्ति किसी जौहरी की दुकान से रत्न, आभूषण आदि खरीदता है तो उन कीमती आभूषणों को बाजार में प्रदर्शित करते हुए खुली टोकरी में अपने घर नहीं ले जाता है। और यदि उन कीमती आभूषणों को खुली टोकरी में इधर-उधर लाया ले जाया जाता है, तो खतरे की संभावना बनी रहती है। जीवन की तरुणावस्था आभूषणों से भी कई गुना अधिक मूल्यवान होती है; उसके प्रदर्शन से उसका सच्चा मूल्य और असली सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। शालीनता में गहरा और स्थायी सौन्दर्य निवास करता है।

आज कुछ लोग नारीवाद और स्त्री-विमर्श के नाम पर कुछ अतिवादी और

अव्यावहारिक बातें करने लगे हैं। इससे हमारी पुनीत प्राचीन परिवार-संस्था कई तरह की समस्याओं से घिर गई हैं। जीवन में स्त्री और पुरुष की अपनी-अपनी भूमिकाएँ होती हैं। जिस प्रकार नारी माता, पत्नी, बहिन, बेटी आदि भूमिकाएँ निभाती हैं, उसी प्रकार पुरुष भी पिता, भाई, पुत्र आदि सभी भूमिकाएँ निभाता है। जैसे पुरुष की सफलता के पीछे नारी की प्रेरणा होती है, वैसे ही नारी की सफलता में भी पुरुष का योगदान होता है। स्त्री और पुरुष, एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धी नहीं, अपितु पूरक और सहयोगी हैं। जीवन के समीकरण में कभी किसी की भूमिका में थोड़ा-बहुत परिवर्तन होता है तो यह अहंकार का नहीं, सहकार का विषय होना चाहिये।

आचार्य हस्ती की माँ रूपा का जीवन ही देखें। तरुणाई में ही उन्होंने अपार दुःख, असीम धैर्य से सहकर समता और क्षमता का परिचय दिया। रूपादेवी का वैराग्य प्रगाढ था, किन्तु कर्तव्यपालन के लिए वह दीक्षा के निर्णय को स्थगित रखती है। जब संयम की राह पर चलने की बात आती है तो विलक्षण सुपुत्र हस्तीमल भी उनका अनुकरण करने के लिए तुरन्त उद्यत हो जाता है। पुत्र के लिए माँ के संस्कार और माँ के लिए पुत्र का सम्बल उनकी कठिन राहों को आसान बना देते हैं। ममता, समता और क्षमता की त्रिवेणी माँ और जन्मजात वैरागी पुत्र दोनों एक-दूसरे के सहयोगी बन जाते हैं। जैन इतिहास में माता-पुत्र की ऐसी अनेक जोड़ियों की बेजोड़ भूमिकाओं के रोचक और प्रेरक प्रसंग मिलते हैं।

नारी यदि धर्म की धुरी है, केन्द्र है, तो पुरुष परिधि में रहकर अपनी भूमिका से उसके धुरी होने को अर्थ देता है। दोनों के सहयोग से धर्म का रथ बिना रुके आगे बढ़ता है। जैसे नारी के बगैर घर-परिवार और सांसारिक जीवन सूना-सूना लगता है, वैसे ही चतुर्विध संघ की स्थापना भी नारी के बगैर संभव नहीं है। नारी धर्म, परिवार, समाज सबकी धुरी है। लेकिन आचार्य हस्ती ने धर्म की धुरी होने को रेखांकित इसलिए किया कि आज धर्म-जगत् और धार्मिक जीवन में नारी के सहयोग एवं समर्पण की विशेष जरूरत है। नारी यदि समग्र अर्थों में धर्म की धुरी के रूप में अपने कर्तव्यों का निष्ठा से अनुपालन करती है तो वह अपने परिवार, समाज, देश और मानवता, सबको आलोकित कर सकती है।

(क्रमशः)

-53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

प्रासङ्गिक

विहार में सुरक्षा

श्री अभय जैन

यह जानकर खेद होता है कि हमारे अनेक चलतीर्थ गत दो वर्षों में सड़क दुर्घटना में काल कलवित हो गए हैं। विहार में निम्नांकित सावधानियाँ आवश्यक हैं-

1. सड़क दुर्घटना होते ही अन्य साधु-साध्वी जी अथवा उनके साथ चलने वाले श्रावक-श्राविका ट्रक, कार आदि जिससे टक्कर हुई है उस गाड़ी का नम्बर याद रखें।
2. विहार सूर्योदय के बाद हो, लंबे विहार टालें।
3. रोड़ के दायीं (Right) ओर से चलें। विदेश में नागरिक पैदल इसी तरह चलते हैं, ताकि सामने से आने वाला वाहन दिखाई दे जाए और हम सावधान हो सकें।
4. पेढ़ी संतों के कारण ही करोड़ों का धन जमा करती है। कम से कम 3 सुरक्षा गार्ड प्रत्येक ग्रुप के साथ हो।
5. प्रत्येक श्रावक निश्चय करे कि संप्रदाय शून्य होकर वर्ष में कम से कम सात बार विहार में भाग लूंगा।
6. मंदिरमार्गी, स्थानकवासी, तेरापंथ यह भेद केवल तत्त्वज्ञान के लिए सीमित हो। प्रत्येक संत जैन संत है यह अमृत बीज बोया जाये।
7. प्रत्येक उपाश्रय सभी संप्रदायों के लिए खुले हों। हिन्दू मंदिर या स्कूल में जैन साधु अनेक जगह विश्राम के लिए रुकते हैं, लेकिन जैनों के उपाश्रय सभी जैन संप्रदायों के लिए खुले नहीं हैं, यह वास्तविक कटु सत्य है। प्रत्येक पेढ़ीवाला 'शेरखान' होता है। कहीं-कहीं जल-दूध-भोजन व्होराना भी बंद हैं। यह विष कैसे समाप्त हो, यह सोचें।
8. सड़क पर दायीं ओर एक के पीछे एक 5 फीट दूरी छोड़कर विहार करें।
9. मुमुक्षु दीक्षा लेता है या संत का अंतिम महाप्रयाण होता है तो पेढ़ी के धन में बोलियों द्वारा करोड़ों की धनवृद्धि होती है, तो क्या उनके जीवन काल में पेढ़ी से सुरक्षा गार्ड नहीं दे सकते?

-श्री वर्धमान महावीर जैन सेना, गांधी चौक, जलगाँव (महा.)

बाल-स्तम्भ

मयूरी के अण्डे

श्री दीपचन्द संचेती

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 मई 2010 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये; तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

चम्पा नगरी में अनेक विद्वान् और श्रीमन्त लोग बसते थे। वहाँ सभी तरह की समृद्धि और विपुलता थी। नगरी के ईशानकोण में 'सुभूमि' नाम का मनोहर उद्यान था। उद्यान से आगे घना जंगल था। इतने घने वृक्ष थे कि सूरज की किरणें भी जमीन को छू नहीं पाती थीं।

चम्पा नगरी में जिनदत्त और सागरदत्त नाम के दो श्रेष्ठिपुत्र भी रहते थे। वे दोनों साथ जन्मे, साथ खेले, साथ पढ़े और साथ ही बड़े हुए। उनकी अटूट मैत्री थी। सारी चम्पा नगरी जानती थी कि दोनों मित्रों के शरीर दो हैं, पर मन एक ही है। उनकी दोस्ती में किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं था। जहाँ भी जाते साथ जाते। जो भी काम करते एक दूसरे की सहायता से करते।

एक दिन दोनों मित्र घूमते हुए उद्यान में गये। वृक्ष की छाया में बैठे। प्रकृति का आनन्द ले रहे थे। निसर्ग का सौन्दर्य आँखों में सँजोये जा रहे थे। उन्होंने देखा, धरती ने हरी शाल ओढ़ रखी है। लता और बेलें वृक्षों से लिपटकर आलिङ्गन कर रही हैं। नाना वर्ण के पुष्प खिले हुए हैं और महक रहे हैं। भ्रमर मकरन्द पीते हुए गुँजारव कर रहे हैं। प्रेम का कितना सजीव चित्रण है इस जंगल में! दोनों मित्रों ने भी जिन्दगी भर यही प्रेम निभाने की कसमें लीं। वहीं उन्होंने तय किया कि एक सप्ताह बाद घने जंगल में

जायेंगे। वहीं वन में भोजन करेंगे, घूमेंगे, प्रकृति की गोद में सारा दिन व्यतीत करेंगे।

दोनों अपने घर आये, नौकरों को बुलाया और आदेश दिया कि एक सप्ताह बाद वे जंगल में तम्बू लगायें। भोजन की सामग्री ले जायें और वहाँ पर रसोई का प्रबन्ध करें। खेलने और मनोरंजन के भी साधन वहाँ रहे। नियत दिवस पर दोनों मित्र वनखण्ड में गये। अर्दली में उनके नौकर तो थे ही। आमोद-प्रमोद हुआ, भोजन हुआ, थोड़ी देर विश्राम हुआ और दोनों मित्र वन-शोभा देखने हेतु घूमते हुए निकले। वे एक वृक्ष के पास से जा रहे थे कि सहसा पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई दी, बाद में एक मयूरी की चीत्कार सुनाई दी। वह मयूरी नीचे की डाल से उड़कर वृक्ष की ऊँची चोटी पर जा बैठी। हुआ यह कि उस मयूरी ने नीचे की डाल पर दो अण्डे दिये हुए थे। जब उसने इन दो मित्रों को आते देखा तो सोचा ये अण्डे लेने ही आ रहे हैं, अतः उसने चीत्कार किया और प्राण रक्षा के लिये वह ऊपर जा बैठी। दोनों मित्रों के मन में कुतूहल जागा 'मयूरी ने चीत्कार क्यों किया? देखें तो सही।' वे उस वृक्ष की डाली के पास गये, उन्होंने देखा मयूरी ने अभी-अभी दो सुन्दर अण्डे दिये हैं। उन्हें खुशी हुई। सोचने लगे-"आज के दिवस की यादगार में ये अण्डे घर ले जायें, उनकी देखभाल करें। यथा समय इनमें जो मोर पैदा होंगे वे अपने नृत्य से, घर की, मौहल्ले की और शहर की शान (रौनक) बढ़ायेंगे।" दोनों ने एक-एक अण्डा लिया, अपने नौकरों के सुपुर्द किया और उन्हें हिदायत दी कि उनकी देखभाल करें। दोनों मित्र अपने घर आये।

सुबह हुई। सागरदत्त उठा। जहाँ पर नौकरों ने अण्डा रखा था, वहाँ गया। अण्डा हाथ में उठाया, हिलाया, बजाया। कान के पास ले गया कि कहीं आवाज तो नहीं आ रही? बार-बार उसे शंका होती। 'इस अण्डे से मोर पैदा होगा भी या नहीं?' प्रतिदिन उसका यही क्रम बना रहा। अण्डा उठाना, हिलाना, बजाना, शंका करना। परिणाम यह हुआ कि बार-बार हिलाने से और शंका करने से अण्डा निर्जीव बन गया। उसमें कुछ भी पैदा नहीं हो सका।

इधर जिनदत्त के घर, जहाँ नौकरों ने अण्डा सुरक्षित रखा था,

जिनदत्त वहाँ सिर्फ जाता, देखता, प्रसन्न होता, इसमें से मोर जन्म लेगा और वह मनोहर नृत्य करेगा, ऐसी कल्पना करता। उसने कभी अण्डे को छुआ नहीं, हिलाया नहीं, न मन में कोई शंका की। भृत्यों ने भी अण्डों को अनुकूल वातावरण प्रदान किया।

यथासमय जिनदत्त के घर मोर पैदा हुआ। बड़ा होकर नृत्य करने लगा, घर की और मौहल्ले की शान बन गया।

एक दिन जिनदत्त ने सागरदत्त को उसकी शंकाशील वृत्ति के बारे में बताया एवं उसे समझाया। सागरदत्त अपने उतावले और शंकाशील स्वभाव से दुःखी एवं लज्जित हुआ।

उपसंहार–

जो साधक जिनेश्वर प्ररूपित सिद्धान्त, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और संयम में विश्वास नहीं रखते, शंकाएँ करते हैं वे सागरदत्त की तरह दुःखी होते हैं। जो साधक जिनाज्ञा में श्रद्धा रखते हैं, पूरी श्रद्धा के साथ पालन करते हैं, अपनी साधना के फल में शंकित नहीं होते वे जिनदत्त के समान सुख पाते हैं। गीता में भी कहा है– 'श्रद्धावांल्लभते ज्ञानम्'

भगवान् महावीर ने भी कहा है– णाणेण जाणइ भावे, दंसणेण य सद्दहे। सम्यग्ज्ञान के द्वारा जीव तात्त्विक पदार्थों को जान लेता है। दर्शन के द्वारा उस पर श्रद्धा हो जाती है।

–'ज्ञाता सूत्र की कथाएँ' से साभार

प्रश्नः–

1. 'सुभूमि' उद्यान की विशेषताएँ बताइये।
2. जिनदत्त और सागरदत्त की मित्रता क्यों प्रसिद्ध थी?
3. उतावला और शंकाशील व्यक्ति सफलता प्राप्त नहीं करता है। क्यों?
4. मयूरी क्यों भयभीत हुई?
5. अर्थ बताइये– निसर्ग, मकरन्द, यथासमय, अर्दली, कासार, भृत्य।
6. संधि–विग्रह कीजिये– मनोहर, जिनाज्ञा, सम्यग्ज्ञान, श्रद्धावांल्लभते।
7. सजगता एवं शंकाशीलता में क्या अन्तर है?

(बाल–स्तम्भ, फरवरी 2010 का परिणाम पृष्ठ सं. 101 पर देखें)

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (25)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के माध्यम से 'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा (25) का आयोजन 'जिनवाणी' के जनवरी-फरवरी-मार्च-2010 के अंकों के आधार पर किया जा रहा है। इसमें कुल 50 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर **श्री गौतम जैन (पचाला वाले), उपाध्यक्ष-अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, 5, पंचवटी, कटर मशीन की गली में, न्यू मंडी रोड, आलनपुर-322021, सवाईमाधोपुर (राज.) फोनं. 9460441351** के पते पर **5 मई, 2010** तक मिल जाने चाहिए। युवा श्रेणि एवं सामान्य श्रेणि में श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को अलग-अलग क्रमशः 1001 रुपये, 501 रुपये एवं 251 रुपये के पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाएगा। 100 रुपये के दस-दस प्रोत्साहन पुरस्कार भी दोनों श्रेणियों में दिए जायेंगे। युवा श्रेणि के पुरस्कार 15 से 45 वर्ष के उत्तरदाताओं को दिए जायेंगे। युवाश्रेणि हेतु प्रत्येक प्रतियोगी अपने नाम एवं पते के साथ उम्र का भी उल्लेख करे। जो प्रतियोगी अपने प्राप्तांक शीघ्र जानना चाहते हों, वे प्रविष्टि के साथ जवाबी पोस्टकार्ड भेजकर परिणाम जान सकते हैं। सभी उत्तरदाताओं से निवेदन है कि वे उत्तर भेजते समय केवल प्रश्न क्रमांक व उत्तर ही भेजें। प्रश्न/पृष्ठ संख्या लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। -सम्पादक

(क) मुझे पहचानो-

01. मेरा अंत नहीं कर पाने के कारण जीव की गति होते हुए भी प्रगति नहीं हो रही है।
02. साधना का मर्म जानकर संत मेरे कल्याण की ठानते हैं।
03. उनकी साधना का मेरी दृष्टि में कोई सानी नहीं है।
04. मैं सावद्य भी हो सकती हूँ और निरवद्य भी।
05. हस्ती पट्टधारी हीरा गुरुवर में मेरा आभास मिलता है।
06. इस भव समुद्र से निकालने के लिए मैं रस्सी का काम करती हूँ।
07. चूड़ियों की झणकार को सुनकर मेरी ज्ञान चेतना जागृत हो गई।
08. मुझमें तीन लोक की सम्पदा रही हुई है।
09. मैं देवताओं को प्रसन्न कर देती हूँ।
10. मैं आप-हम सबके कल्याण के लिए हूँ।

(ख) एक शब्द में उत्तर दीजिए-

11. विश्वास इंग्लैण्ड से डिग्री के रूप में किसे साथ लाया?
12. दुर्घटना के कारणों का पता लगाकर उसका विश्लेषण करने की पद्धति।
13. वह क्या जो मिटाए नहीं मिटती, बुझाए नहीं बुझती?
14. हेय को हेय समझकर उपादान का गुण किससे प्रकट होता है?
15. ममता, समता और क्षमता की त्रिवेणी।
16. श्रमण के सुदर्शन चक्र की उपमा किसे दी गई है?
17. शादी पराधीनता है तो स्वाधीनता क्या है?
18. त्रस एवं स्थावर सब प्राणियों के प्रति अन्तःकरण में हित कामना कौन रखता है?
19. एक छोड़ी, आठ धारी। क्या?
20. आँख को आँख से देखने के लिए क्या चाहिये?

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(प्रश्न 21 से 25 में उत्तर अ या आ से प्रारम्भ होंगे)

21. धर्म ....से ही रुकता है, अशुभ कर्म का द्वार है।
22. जब प्रेम.......होता है, तब रोम-रोम में संत होता है।
23. मानव......संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है।
24. मन के विकल्प.........के कारण हैं।
25. मन को नियंत्रित करना समस्त........का साधक है।
26. भगवान्.......महावीर को लोक में उत्तम श्रमण कहा गया है।
27. संवेदना का विकास ही...........है।
28. ....एक ऐसा मार्ग है जिस पर चलकर सन्मार्ग को प्राप्त किया जा सकता है।
29. कपिल के पिता का नाम.......था।
30. ....संवर का संविधान और निर्जरा का निधान है।

(ङ) अंकों में उत्तर दीजिये।

31. अज्ञानी लाखों करोड़ों वर्षों तक जो कर्म नहीं खपा सकता, ज्ञानी उसे कितने उच्छवास में खपा सकता है?
32. मीनाक्षी कितने वर्षों बाद भारत आई थी?

33. जैन धर्म में पाप के कितने भेद बताए गये हैं?
34. उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन पाँच में प्राणि हिंसा के कितने प्रकार बताए हैं?
35. तत्त्व के ज्ञाता पुरुषों ने सन्मित्र के कितने लक्षण कहे हैं?
36. सेठ पूसाराम किरोड़ीमल की आयु कितनी थी?
37. भोजन और शयन के बीच में कम से कम कितने घंटे का अंतर आवश्यक है?
38. समण का मार्ग कितने प्रकार का बताया गया है?
39. धरोहर में कितने रत्न थे?
40. कल्याणार्थी साधक के लिए शुद्धि के कितने स्थान हैं?

(च) हाँ/ना में उत्तर दीजिए।

41. जल्दी सोने तथा जल्दी उठने से व्यक्ति स्वस्थ, सम्पन्न और बुद्धिमान होता है।
42. पाप घटाने के लिए सत्संग आवश्यक है।
43. कर्म पुद्गल है, शरीर पुद्गल है, वस्त्र पुद्गल हे, वाहन पुद्गल है, चेतन पुद्गल है।
44. मनःपर्यायज्ञानी मारणान्तिक समुद्घात नहीं कर सकते।
45. ज्योतिषी तो भविष्य बना सकते हैं, पर गुरु भविष्य बता सकते हैं।
46. आधुनिक समाज में राजमार्ग के नियम शहरी मार्गों के नियमों से अभिन्न हैं।
47. जीवन में विवेक पूर्वक की जाने वाली प्रत्येक क्रिया में धर्म है।
48. संसार के जितने भी सहयोग हैं, वे सब पाप बढ़ाने वाले हैं।
49. मृगापुत्र की कथा विषयासक्ति के दुष्परिणाम का निरूपण करती है।
50. भारत के सभी राज्यों में महावीर जयन्ती पर कानूनन मद्य-मांस निषेध रहता है।

अभिमत

श्री ऋषभ कोठारी

"जिनवाणी को मैं पढ़ता हूँ आप श्रीमान् बहुत अच्छे अंक निकाल रहे हैं। मैं पूरी सामग्री को पढ़ता हूँ। धर्म-दर्शन के साथ रोचक एवं ज्ञानवर्धक सामग्री पठनीय है। श्री गणेश मुनि जी शास्त्री का उपन्यास 'सुबह की धूप' बहुत ही अच्छा लगता है। वर्तमान समाज की पीड़ा को गुरुजी ने बहुत अच्छी तरह उकेरा है।"

-द्वारका (उत्तरप्रदेश)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (4)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी (अध्यात्म-चेतना वर्ष) के उपलक्ष्य में अ.भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग एक-तीर्थंकर खण्ड)** के आधार पर मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह चतुर्थ किश्त है। प्रतियोगी को अपने उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 मई 2010 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त शताब्दी वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1

(पृष्ठ 171 से 230 तक से प्रश्न)

(अ) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. अयोध्या नगरी में महाबल का जीव.........के यहाँ उत्पन्न हुआ।
2. मैं अपने.........को अलग रखना पसन्द नहीं करूँगी।
3. ....वास्तव में महादान है।
4. महेन्द्र सिंह आदि सब पीछे रह गये और........अदृश्य हो गये।
5. प्रभु की वाणी सुनकर स्वयंभू ने.........और भद्र बलदेव ने श्रावक धर्म ग्रहण किया।

(आ) अंकों में उत्तर दीजिए-

6. संभव नाथजी ने.........पूर्व वर्षों का आयुष्य पाया।
7. अभिनन्दन के वैक्रिय लब्धिधारी.........मुनिराज थे।

8. धर्मनाथजी ने..........वर्ष तक राज्य का पालन किया।

9. अनन्तनाथजी के............श्राविका थी।

10. अढ़ाई द्वीप में.............कर्म भूमियाँ हैं।

(इ) किसने किससे कहा?

11. यह महिला कौन है, इसके साथ आठ सुन्दरियाँ कौन हैं?

12. शीघ्र ही तुम्हें पुत्र की प्राप्ति होगी।

13. 790 से 900 योजन तक हमारा लोक है।

14. तुम धन्य हो तुम्हारे अन्तर्मन में धर्म के प्रति रुचि जागृत हुई।

15. अब तुम्हें विवाह करना चाहिए।

(ई) जोड़ी मिलाइए-

16. महाबल	-	शुभंकर
17. सिंहसेन	-	धनवात
18. गृहचर्या	-	अयोध्या नगरी
19. प्रभंकर	-	सुयशा
20. घनोदधि	-	भोग्य कर्म

(उ) सही या गलत बताइए-

21. प्रभु ने महाराज जय के यहाँ परमान्न से पारणा किया।

22. त्रिपृष्ट अवसर्पिणी काल के प्रथम वासुदेव थे।

23. महाराजा कृतवर्मा ने भी पुत्री के जन्म की खुशियाँ मनाई।

24. कृष्णराजिया बहु-प्रदेश की श्रेणी वाली तमस्काय नहीं थी।

25. राजसी ठाठ-बाट से पुरुषसिंह युवावस्था को प्राप्त हुआ।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (1) का परिणाम

प्रथम पुरस्कार- श्रीमती आरती प्रदीप कुमार जी जैन-होशियारपुर (पंजाब)

द्वितीय पुरस्कार- सुश्री उर्मिला भंवरलाल जी कांकरिया-जोधपुर (राज.)

तृतीय पुरस्कार-सुश्री सीमा नेमीचन्द जी लुंकड़-जोधपुर (राज.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. सुश्री वन्दना खींचा-भटार, सूरत (गुजरात)
2. श्री प्रदीप चौपड़ा-गोटन, नागौर (राज.)

3. श्रीमती आर.चन्द्रा बोथरा-चुलई (चेन्नई)
4. सुश्री सोनिया कोठारी-छिंदवाड़ा (मध्यप्रदेश)
5. डॉ. पदमचन्द मोहनोत-जयपुर (राज.)

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (2) का परिणाम

प्रथम पुरस्कार- श्रीमती अरुणा संजीवकुमार जी जैन-होशियारपुर (पंजाब)

द्वितीय पुरस्कार- श्रीमती सुनीता दुलेराज जी जैन-जयपुर (राज.)

तृतीय पुरस्कार-सुश्री शिल्पा इंदरचन्द गांधी-जोधपुर (राज.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. सुश्री सुमन जी डागा-भोपाल (मध्यप्रदेश)
2. श्रीमती सुनीता जी नवलखा-कोटा (राज.)
3. सुश्री साक्षी सुमेर वैद-धनारीकलां, जोधपुर (राज.)
4. श्रीमती मंजु संदीप जी मुथा-इंचलकरंजी (महा.)
5. श्रीमती सीमा अजीन्द्र जी जैन-लुधियाना (पंजाब)

सत्य

श्रीमती माया कुम्भट

सत्य को कोई हरा नहीं सकता,
सत्य को कोई झुका नहीं सकता।
सत्य के सामने आए अंधेरा कितना,
उसकी उजास को कोई मिटा नहीं सकता।
वह चीरकर अंधेरों को प्रगट हो जाएगा।
अपना परचम व अस्तित्व बतायेगा।
सत्य से बढ़कर कोई असत्य हो नहीं सकता।
जिस किसी ने पहचाना, हो गया इसका कायल।
इस आनन्द से बढ़कर कोई आनन्द हो नहीं सकता।

-'राजमाया' 6 ए/1, अम्बामाता, उदयपुर-313001 (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

अनुभव का आलोक- श्री चांदमल बाबेल, ***प्रकाशक***- श्री महावीर स्वाध्याय केन्द्र, कुंवारिया, जिला राजसमन्द (राजस्थान) फोनः 0294-2412992 ***पृष्ठ***- 12+188, ***मूल्य*** 30 रुपये, ***संस्करण*** - 2009

श्री जैन ज्ञानप्रकाश परीक्षा बोर्ड, कुम्हारवाडा, उदयपुर के निदेशक श्री चाँदमल जी बाबेल चिन्तनशील वरिष्ठ स्वाध्यायी हैं। अनुभव का आलोक पुस्तक में उन्होंने 40 निबन्ध लिखे हैं, जिनमें प्रमुख हैं (1) सन्तदर्शन क्यों? (2) विवेक क्यों? (3) क्रोध क्यों? (4) चातुर्मास मंगलमय कैसे हो? (5) क्या चातुर्मास सुलभ और सस्ते बनाये जा सकते हैं? (6) चिन्ता को चिन्तन में बदलें (7) धर्मश्रेत्र में प्रतिभा प्रधान या पैसा? (8) धर्माराधना भवन में विवाह क्यों? (9) सम्प्रदायवाद विष है तो सम्प्रदाय अमृत है (10) पुद्गलानन्दी नहीं, आत्मानन्दी बनें (11) क्या हम समाज के प्रति जिम्मेदार हैं? (12) सुसंस्कार शिविर क्यों? इन आलेखों में श्री बाबेल की चिन्तनशीलता की झलक मिलती है तथा आध्यात्मिक दृष्टि की पुष्टि होती है।

स्याद्वाद : एक अनुशीलन- पण्डित चैनसुखदास, पण्डित अजित कुमार, पण्डित कैलाशचन्द्र शास्त्री द्वारा सम्पादित, ***प्रकाशक***- जैन विद्या संस्थान, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, श्री महावीर जी-322220 (राजस्थान) ***पृष्ठ***- 8+152, ***मूल्य***-60 रुपये, ***संस्करण***- 2009 (पुनर्मुद्रण)

पण्डित चैनसुखदास न्यायतीर्थ दिगम्बर परम्परा के प्रसिद्ध विद्वान् हुए हैं, जिन्होंने दिगम्बर जैन महाविद्यालय, जयपुर में अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान की तथा 'जैनदर्शनसार' सदृश पुस्तकों की रचना की। प्रस्तुत पुस्तक दिगम्बर जैन समाज की पत्रिका 'जैन दर्शन' के स्याद्वाद विशेषाङ्क (वर्ष-2, अंक 4-5) जो सन् 1934 में प्रकाशित हुआ था, का पुनर्मुद्रण है। इस पुस्तक में तत्कालीन विद्वानों के स्याद्वाद विषयक लेख उपलब्ध हैं, जिनमें पं. कैलाश चन्द्र शास्त्री, बाबू कामता प्रसाद जैन, पं. माणिकचन्द न्यायाचार्य, पं. भंवरलाल जैन न्यायतीर्थ, पं. बंशीधर व्याकरणाचार्य, पं. चैनसुखदास न्यायतीर्थ, पं. अजित कुमार जैन शास्त्री, पं. हीरालाल जैन न्यायतीर्थ आदि के लेख विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं।

कार्यक्रम

आओ, अध्यात्म-चेतना जागृति सप्ताह मनायें

अध्यात्मयोगी युगमनीषी युगप्रवर्तक युगप्रभावक परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में पौष शुक्ला चतुर्दशी दिनांक 30 दिसम्बर 2009 को देश-विदेश के विभिन्न ग्राम-नगरों में अध्यात्म-चेतना के विभिन्न आयामों के साथ अतीव श्रद्धाभक्ति से अध्यात्म-चेतना वर्ष का शुभारम्भ हुआ। देशभर में सहस्रों भक्तों ने सामायिक-स्वाध्याय, रात्रि-भोजन त्याग, ब्रह्मचर्य-पालन एवं संघ-सेवा तथा तपाराधन के विविध संकल्पों से अपनी श्रद्धा-भक्ति अभिव्यक्त की।

उन पूज्यपाद का आचार्यपद ग्रहण दिवस आगामी वैशाख शुक्ला तृतीया 16 मई 2010 को समुपस्थित हो रहा है। आचार्यपद ग्रहण दिवस के एक दिन पूर्व 15 मई 2010 को कतिपय मुमुक्षु बहिनें मुक्ति के अक्षय साम्राज्य का वरण करने हेतु संयम पथ पर अग्रसर होने जा रही हैं।

अध्यात्मसाधक पूज्य गुरुदेव की पुण्यतिथि भी द्वि. वैशाख शुक्ला अष्टमी 21 मई को समुपस्थित हो रही है। अतः 15 मई से 21 मई 2010 तक का यह सप्ताह **अध्यात्म-चेतना जागृति सप्ताह** बन हमारा अध्यात्म बोध जगाये, हम नश्वर की ममता का परिहार कर अपने अविनाशी परमात्म-तत्त्व को जागृत करने की ओर आगे बढ़ें, यही अभिनव प्रयास हम सबको करना है।

यह सप्ताह ज्ञान-दर्शन-चारित्र एवं तप-साधना से समन्वित हो, यह विनम्र अनुरोध है। हम में से कोई भी रीता न रहे, इस अपेक्षा से सभी श्रद्धालु भक्तों से सविनय निवेदन है-

1. सप्ताहभर प्रत्येक दिन नवकारसी/पौरसी का प्रत्याख्यान करें।
2. सप्ताहभर प्रत्येक दिन कम से कम तीन/पाँच सामायिक करें।
3. सप्ताहभर प्रतिदिन कम से कम 1 घंटा आगम/आध्यात्मिक ग्रन्थ का स्वाध्याय करें।

4. सप्ताहभर प्रतिदिन प्रत्येक घर में कम से कम एक घंटे नवकार मंत्र/लोगस्स का जाप करें।
5. सप्ताहभर प्रतिदिन कम से कम एक घंटे मौन रखकर आत्म-चिन्तन करें।
6. सप्ताहभर प्रतिदिन एकासन/उपवास/आयम्बिल/संवर (सतरंगी) करें।
7. सप्ताहभर प्रतिदिन प्रत्येक घर में सामूहिक प्रार्थना की जाए।

इसी संदर्भ में निवेदन है कि परमपूज्य आचार्य भगवन्त के पट्टधर वर्तमान संघनायक परमपूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का आचार्य पद ग्रहण दिवस 2 जून को है। परमपूज्य आचार्यप्रवर की प्रेरणा के अनुसार हमें ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि में आगे बढ़ना है। दिनांक 15 मई से 2 जून की अवधि में आपकी अपनी सुविधानुसार बच्चों, युवाओं एवं भाई-बहिनों के लिए ग्राम-ग्राम, नगर-नगर में धार्मिक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाए। शिविरों के आयोजन में किसी भी अभिष्ट सहयोग के लिए आप संघ, युवक परिषद् एवं श्राविका मण्डल के कार्यकर्ताओं से सम्पर्क करें।

-ज्ञानेन्द्र बाफना

संयोजक, आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी समिति

बाल-स्तम्भ [फरवरी-2010] का परिणाम

जिनवाणी के फरवरी-2010 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'प्रतिक्रिया के पार' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 24 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 25 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	रूबी जैन-बड़ौदाकान	23
द्वितीय पुरस्कार-200/-	मनीष जैन-आचीणा	22.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	सेजल भंसाली-जलगांव	22
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	गरिमा जैन-लाडपुरा,कोटा	21
	मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी	21
	नमन मेहता-पीपाड़	21
	नेहा तातेड़-जोधपुर	21
	अर्पित जैन-जोधपुर	21

समाचार-विविधा

वि.सं. 2067 के अब तक स्वीकृत चातुर्मास

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने चैत्र शुक्ला दशमी, गुरुवार, दिनांक 25 मार्च 2010 को साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ वि.सं. 2067 के लिए निम्नाङ्कित चातुर्मास घोषित किए हैं-

1.	परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा	पाली-मारवाड़ (राज.)
2.	परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा	गोटन (राज.)
3.	सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	गुलाबपुरा (राज.)
4.	व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	चांगोटोला (म.प्र.)
5.	विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा	सवाईमाधोपुर (राज.)
6.	व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	सोजत रोड (राज.)
7.	व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा	नागौर (राज.)
8.	सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा	मेड़ता सिटी (राज.)
9.	व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा	मैसूर (कर्नाटक)
10.	महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा	के.जी.एफ. (कर्ना.)
11.	व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी	नीमच (म.प्र.)

म.सा. आदि ठाणा

12. व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा — पीपाड़ सिटी (राज.)

13. व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा — भोपालगढ़ (राज.)

14. सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा — पांढरकवाड़ा (महा.)

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 अप्रेल, 2010)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9 : बाड़मेर से विहार कर कवास, बायतु आदि क्षेत्र पावन करते हुए 24 मार्च को गढ़ सिवाना पधारे हैं। अभी कुछ दिन यहाँ विराजने की संभावना है।

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6 : पाली से विहार कर माण्डावर, डिंडस, करमावास होते हुए 23 मार्च को गढ़ सिवाना पधारे। अभी कुछ दिन यहाँ विराजने की संभावना है।

साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 10 : सामायिक-स्वाध्याय भवन घोड़ों का चौक, जोधपुर में विराजमान हैं।

सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 : वैशाली नगर, अजमेर विराज रहे हैं।

व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 8 : कटंगी से विहार कर उमरी पधारे हैं। अग्र विहार बालाघाट होते हुए चांगोटोला की ओर चल रहा है।

विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 8 : औद्योगिक नगरी सूरत के विभिन्न उपनगरों में धर्मप्रभावना कर रहे हैं।

विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4 : पल्लीवाल क्षेत्रों को पावन करते हुए नदबई पधारे हैं। अग्र विहार भरतपुर की ओर संभावित है।

व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 6	:	सिवाना की ओर विहार सुखशांति पूर्वक चल रहा है।
महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	गढ़ सिवाना विराज रहे हैं।
सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 3	:	कल्याणपुरा, समदड़ी, देवड़ा होते हुए विहार गढ़ सिवाना की ओर चल रहा है।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	दौड्डबालापुर में धर्मध्यान की महती प्रभावना कर रहे है। बैंगलोर की ओर विहार सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	गढ़ सिवाना विराज रहे हैं।
महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3	:	बावड़ी पधारे हैं। जोधपुर पधारना सम्भावित है।
महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	बडनेरा (अमरावती) में सुख शांतिपूर्वक विराजमान है।

जैन भागवती दीक्षा महोत्सव एवं अक्षय तृतीया महोत्सव बालोतरा में

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से, **परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.** प्रभृति मुनिपुंगवों की मंगल मनीषा से एवं साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की नेश्रायवर्तिनी तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में वि.सं. 2067, द्वि.वैशाख शुक्ला द्वितीया, शनिवार, दि. 15 मई 2010 को सवाईमाधोपुर की मुमुक्षु बहिनें सुश्री दीपिका जैन एवं सुश्री समता जैन, जलगाँव की मुमुक्षु बहन सुश्री कोमल कोठारी, बालोतरा की मुमुक्षु बहिनें सुश्री ट्विंकल

सालेचा एवं सुश्री वर्षा सालेचा की जैन भागवती दीक्षा चतुर्विध संघ की साक्षी से धर्मधरा बालोतरा में सम्पन्न होगी। कार्यक्रम निम्नानुसार रहेगा-

दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम

वि.सं. 2067 द्वि. वैशाख शुक्ला प्रतिपदा, शुक्रवार, 14 मई 2010

अभिनन्दन समारोहः प्रातः 8.30 बजे, वर्द्धमान स्कूल में।

शोभायात्राः अपराह्न 4 बजे जागीरदार स्ट्रीट , श्रीमालियों का चौक से प्रस्थान। मेन मार्केट होते हुए नए स्थानक भवन पहुँच कर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन कर मांगलिक श्रवण का लाभ।

वि.सं. 2067 द्वि.वैशाख शुक्ला द्वितीया, शनिवार 15 मई 2010

अभिनिष्क्रमण यात्रा : प्रातः8.15 बजे वीर परिवार के निवास स्थान से प्रस्थान कर दीक्षा स्थल पर पहुँचेगी। जहाँ परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के पावन सान्निध्य में दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम प्रारम्भ होगा।

दीक्षा पाठ : प्रातः 10.30 बजे से, श्री वर्द्धमान स्कूल में।

अक्षय तृतीया महोत्सव (16 मई 2010)

तप एवं दान के इस विशिष्ट पर्व पर गुरु चरणों में नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर तपस्वी साधकों के तप-साधना की अनुमोदना कर कर्म-निर्जरा का लाभ लें।

तपस्वी साधक एवं दीक्षा पर पधारने वाले आगन्तुक अपने पहुँचने की सूचना निम्न सम्पर्क सूत्र पर देवें :-

1. श्री डूंगरचन्द श्रीश्रीमाल, अध्यक्ष, 9251311717
2. श्री नेमीचन्द जी अन्याव, मंत्री, 9413525132
3. श्री खीमराज जी भण्डारी, 9414108811
4. श्री मीठालाल जी मधुर, 9414108849
4. श्री ओमप्रकाश जी बांठिया, 9461522309
5. श्री छगनलाल जी वैदमुथा, 9460541805
6. श्री धर्मेश कुमार चौपड़ा, 9414108191

आचार्यप्रवर के सान्निध्य में बाड़मेर एवं गढ़ सिवाना में धर्म-जागरण का अपूर्व उत्साह

आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर का 8 वर्ष पश्चात् पुनर्मिलन

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 के पावन सान्निध्य में बाड़मेर धर्मनगरी बन गया। संतप्रवरों के यहाँ विराजने से धर्म-ध्यान में विशेष जागृति रही। निरन्तर तपाराधना एवं नवकारमंत्र के जाप की आराधना हुई। आजीवन शीलव्रत के 16 खंध हुए। श्रीमती सुशीला देवी धर्मपत्नी श्री हुकमचन्द जी मांडोत-सूरत ने पूज्यश्री के श्रीचरणों में चौथी अठाई की तपस्या सम्पन्न की। प्रार्थना, प्रवचन के पश्चात् प्रतिदिन दिवसभर धर्म-ध्यान का वातावरण रहा। मूर्तिपूजक, तेरापंथी एवं अन्य आम्नायों के साधर्मिकों ने उत्साह से धर्माराधन का लाभ लिया। 5 मार्च को यहाँ मुमुक्षु बहिनों का स्थानीय संघ की ओर से अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें प्रमोदजन्य उपस्थिति रही। अभिनन्दन समारोह में बाड़मेर विधायक श्री मेवाराम जी जैन एवं पालिकाध्यक्ष श्रीमती उषा जी जैन की विशेष उपस्थिति रही। व्रत-प्रत्याख्यान एवं दर्शनार्थियों की उपस्थिति से बाड़मेर का प्रवास अत्यन्त प्रभावी एवं सार्थक रहा। राजस्थान के सीमावर्ती जिले में सवाईमाधोपुर, कोटा, जोधपुर, जयपुर, पीपाड़, भोपालगढ़ मेड़ता, अजमेर आदि सभी स्थानों से आवागमन बना रहा। बैंगलोर, चेन्नई, मुम्बई जैसे दूरस्थ स्थानों से भी भक्तजन धर्माराधन हेतु उपस्थित हुए। आचार्यप्रवर एवं तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी द्वारा 4 मार्च को सीमा-सुरक्षा बल की 81वीं बटालियन के जवानों, अधिकारियों को तथा 7 मार्च को 171 क्षेत्रीय मुख्यालय सीमा सुरक्षा बल के जवानों, अधिकारियों और अन्य उत्सुकों को व्यसन से दूर रहकर सादा आहार-व्यवहार से चलने की प्रेरणा की गई। इसके साथ ही तनाव से मुक्ति पाने के लिए भगवान् महावीर द्वारा प्रतिपादित पाँच व्रतों का पालन करने का अमोघ कवच प्राप्त करने की प्रेरणा की गई। बाड़मेर में जिला कलेक्टर श्री रवि जी जैन, डी.आई.जी. श्री नरेन्द्र जी गुर्जर ने भी आचार्यप्रवर के प्रवचनों एवं सत्संग का लाभ लिया। श्री मांगीलाल जी चौपड़ा, श्री नेमीचन्द जी श्रीमाल, श्री केवलचन्द जी गोलेछा, श्री मोतीलाल जी बांठिया, श्री भीकमचन्द जी गोलेछा, श्री मीठालाल जी माण्डोत, श्री भंवरलाल जी चौपड़ा, श्री

ओमप्रकाश जी बांठिया आदि अनेक सदस्यों ने विशेष समय देकर सेवा का लाभ लिया। तेरापंथ सभा, श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, अचलगच्छ संग, चौरासी गाँव संघ आदि संघों का भी सक्रिय सहकार रहा। बाड़मेर में सकल संघ के प्रमुख पदाधिकारियों ने सेवा-भक्ति का सक्रिय रूप प्रदर्शित कर जैन संघ की एकता का स्वरूप एवं आदर्श उपस्थित किया। आचार्यप्रवर का थार नगरी बाड़मेर में 5 फरवरी को स्थानक भवन में मंगलमयी पदार्पण हुआ था, वहाँ से 24 फरवरी को तेरापंथ सभा भवन के श्रावक-श्राविकाओं की भावना को मान देकर तेरापंथ सभा भवन पधारे एवं यहाँ 1 मार्च तक विराजे। वहाँ से आचार्यप्रवर पुनः स्थानक भवन पधारे।

पूज्य आचार्यप्रवर बाड़मेर से 8 मार्च को सायंकाल विहार कर महावीर कॉलोनी में श्रावकरत्न श्री राजेन्द्र जी कुम्भट, एडिशनल कमिश्नर कस्टम के यहाँ पधारे। श्री कुम्भट साहब ने आचार्यप्रवर के बाड़मेर विराजने पर नियमित रूप से संवर-साधना की। आचार्यप्रवर 9 मार्च को यहाँ से उत्तरलाई एवं 10 मार्च को कवास पधारे। सुश्रावक श्री रूपकुमार जी चौपड़ा एवं उनका परिवार 4 कि.मी. पूर्व से विहार में जयनिनाद करता हुआ साथ चला। कवास जैसे छोटे-से ग्राम में भक्तों की रेलमपेल बनी रही। सालेचा परिवार की मुमुक्षु बहिनों का कवास संघ की ओर से अभिनन्दन किया गया। पाली से श्रमणसंघीय सलाहकार श्री नेमीचन्द जी चौपड़ा, कोप्पल से घमंडीलाल जी बागरेचा का यहाँ आगमन हुआ। कवास से निमाणियों की ढाणी, दुर्गाणी होते हुए 13 मार्च को आचार्यप्रवर बायतु पधारे। यहाँ से बिमरलाई फांटा, मल्लिनाथ दूधवा स्कूल, बाकुंडी, तिलवाड़ा, बामसीन स्कूल होते हुए 19 मार्च को जसोल पधारे। यहाँ आचार्यप्रवर नया समाज भवन में विराजे। यहाँ से बानीवाड़ा, आसोतरा, थापन एवं कुसीप होते हुए 24 मार्च को पूज्य आचार्यप्रवर का गढ़ सिवाना पदार्पण हुआ।

सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 3 बायतु होते हुए 21 मार्च को ही सिवाना पधार गये थे।

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 6 के पाली नगरी विराजने से धर्माराधना एवं भक्ति-भाव का अद्भुत रूप दृष्टिगोचर हुआ। 10 मार्च को हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी होकर 11 मार्च को श्रावकरत्न श्री केवलचन्द जी गुलेच्छा की निरन्तर विनती को ध्यान में रखकर उपाध्यायप्रवर एवं सत-मण्डल

गुलेच्छा फार्म पधारे। गुलेच्छा जी के जन-सम्पर्क के कारण विशाल संख्या में सभी वर्गों के लोग उपस्थित हुए एवं पूरे दिन वातावरण धर्ममय बना रहा। संतों का उद्‌बोधन मार्मिक रहा। संतों ने ज्ञान और क्रिया दोनों के समन्वय को आवश्यक बताया। उपाध्यायप्रवर यहाँ से केरला, घटवाल, जेतपुर, माण्डावास, लामड़ावास, ढीढस, मजल, लाखेती, करमावास, देवड़ा, मेली होते हुए 23 मार्च को गढ़ सिवाना पधारे। उपाध्यायप्रवर की अगवानी में सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनि जी आदि ठाणा 3 पहले से उपस्थित थे। आचार्यप्रवर की यह दृष्टि रही की उपाध्यायप्रवर की अगवानी में संत पहले से मौजूद रहें।

24 मार्च को जब आचार्यप्रवर गढ़ सिवाना पधारे तो उपाध्यायप्रवर एवं सभी संतों का मिलन अद्‌भुत था। परस्पर प्रेम एवं मैत्री का दृश्य देखकर दर्शनार्थी श्रावक-श्राविका भी प्रमोद का अनुभव कर रहे थे। दोनों संत-प्रवरों का 8 वर्ष पश्चात् पुनर्मिलन हुआ है। जलगाँव में आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर का संयुक्त चातुर्मास था। उसके अनन्तर उपाध्यायप्रवर का होलनांथा चातुर्मास हुआ एवं तत्पश्चात् राजस्थान की ओर विहार हो गया।

सिवांची पट्‌टी का हृदयस्थल गढ़ सिवाना वर्तमान में धर्मधरा बना हुआ है। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी 28 मार्च को भगवान् महावीर का जन्म-कल्याणक गढ़ सिवाना के स्थानक भवन में उत्साह-उमंग, तप-त्याग, व्रत-प्रत्याख्यान एवं सामूहिक सामायिक-साधना के साथ मनाया गया।

महावीर जयन्ती के अवसर पर उद्‌बोधन

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी 28 मार्च को महावीर जयन्ती के अवसर पर सन्तप्रवरों एवं महासती-मण्डल के प्रवचन हुए। **श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.** ने मारवाड़ी भजन की कड़ी में "गुण बखाणा मैं तो त्रिशला रे लाल रा" के सुमधुर शब्दों से स्वर-लहरियों को गुंजित किया। उन्होंने प्रवचन में फरमाया कि भगवान् महावीर ने भटके हुए प्राणियों को सन्मार्ग दिखाकर अप्रमत्तता का संदेश दिया था।

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने अपने प्रवचन में फरमाया कि भगवान् महावीर के उपकारों को शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता, उनकी महिमा का संगान करके भी हम ऋण नहीं चुका सकते। उपकारों से उपकृत होने का एक ही मार्ग है कि हम भगवान् की वाणी को आत्मसात् करें। प्रभु महावीर के जन्म-कल्याणक के अवसर पर हमारे भीतर के महावीरत्व को जागृत

करें। महावीर साधना करते एकान्त में, किन्तु सिद्धान्त अनेकान्त का दिया। महावीर ने उपदेश समता का दिया और स्वयं ने आगे होकर कर्मों की निर्जरा हेतु विषम क्षेत्र में कदम बढ़ाए। मुनिश्री ने महावीर शब्द से चार शिक्षा ग्रहण करने का आह्वान किया, यथा **म**-मधुरता झलके व्यवहार में, **हा**-हाथ बढ़े परोपकार में, **वी**- वीतरागता हो विचार में, **र**-रमणता हो आचार में।

महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. ने 'पूज्य हीराचन्द्र के चरणों में नमन' काव्य का भावपूर्ण उच्चारण करने के अनन्तर फरमाया कि गुरु भगवन्त के समक्ष मेरा बोलना महत्ता नहीं रखता। गुरु भगवन्त के सामने बोलने के दो ही विषय हो सकते हैं पहला गुरु के गुणगान जो गुरुदेव को इष्ट नहीं और दूसरा विषय है मेरा अहोभाग कि मुझे गुरुदेव जैसे गुरु मिले, उनके बारे में स्वयं के गौरव की बात करना भी इष्ट नहीं। इसलिये बन्धुओं! गुरु भगवन्त के समक्ष बोलना वस्तुतः दुःस्साहस है। अतः अर्चा की भावना से एवं गुरु भगवन्त के निर्देश से मैं उपस्थित हुई हूँ। हम गुरुदेव के श्रीमुख से महावीर की साधना के रहस्यों को सुनेंगे।

व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. ने भी गुरु चरणों में दर्शन की भावना साकार होने पर प्रसन्नता प्रकट की एवं कहा कि हे चेतन! दुःखों से मुक्ति मिलने का सच्चा मार्ग मिला है, इसलिए उसमें मैं पुरुषार्थरत रहूँ।

विरक्ता बहन मंगला जी-शेगांव ने जीवनतारक, जीवनसर्जक, जीवनरक्षक आचार्यप्रवर को सम्बोधित कर कहा कि हे आराध्य! आपकी वाणी से संवत् 2001 के धुलिया चातुर्मास में मेरे हताश और निराशामय जीवन में एक आशा की किरण मिली, संयम की राह दिखी तथा निन्दनीय जिन्दगी को आपने अभिनन्दनीय और वन्दनीय बना दिया है। उन्होंने सिवाना संघ को दीक्षा में पधारने तथा आत्मभावों में स्थिरता प्रदान करने के लिए आग्रह किया। **विरक्ता बहिन सुश्री प्रीति जी कानुंगा, सुश्री वर्षा जी सालेचा** ने भी गुरु के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए समर्पण भाव की प्रस्तुति की।

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने विरक्ता बहिनों को मंगल-संदेश फरमाते कहा कि दीक्षा लेने के बाद यदि कष्ट आए तो भी एवं प्रशंसा हो तो भी, हर परिस्थिति में सम रहना। लोग कहेंगे 'खम्मा घणी' पर आप यही सोचना कि अभी खामिया घणी हैं।

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने प्रवचन प्रारम्भ करते हुए कहा कि खामिया निकालकर खम्मा घणी बनने वाले वीतराग भगवन्त,

गुरु भगवन्तों को वन्दन करने के पश्चात् आपको माल तो बहुत अच्छा मिल रहा है, पर भीतर के परिणाम क्यूँ नहीं जग रहे। जब तक भीतर की वृत्ति नहीं बदलेगी तब तक प्रवृत्ति में परिवर्तन होने वाला नहीं। जैन दर्शन ही एक ऐसा दर्शन है जो अनन्त भगवान् मानता है। मैं भी भगवान् बन सकता हूँ, यह एक आशा की किरण इसी जैन दर्शन में मिलती है। महावीर भी नयसार के भव में हमारी तरह ही गली-कूंचे में भटक रहे थे, किन्तु अपनी दशा बदली तो महावीर बन गये। हम महावीर की जय तो बोलते हैं, मगर हम अपने घर को नहीं संभालते, स्वधर्मी को नहीं देखते।

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अमृतमयी वाणी में फरमाया कि महावीर का कल्याणक क्लेश का नाश करने वाला है। भगवान् महावीर के जीवन की कुछ चर्या मैं आपके समक्ष चर्चा के रूप में प्रस्तुत करूँ। सबसे पहले **मातृभक्त महावीर**- जागृति आने के साथ ही माता-पिता के प्रति कितनी आदर भावना थी। प्रभु महावीर ने जन्म से पूर्व उदर में ही मातृभक्ति हेतु हलन-चलन बंद कर दिया था। दूसरी चर्या **अनुशासित बालक महावीर**- अतिशय ज्ञानी होते हुए भी शिक्षण का आदेश होने पर पढ़ने के लिए उद्यत हुए, ऐसा नहीं कहा कि मैं तीन ज्ञान का धारी हूँ, मुझे वह पंडित क्या पढ़ाएगा। तीसरी चर्या **निर्भयस्वभावी महावीर**- खेलते-खेलते सर्प निकट आ गया, फिर भी कोई भय नहीं निर्भय बनकर बोले, मैंने इसका कुछ बिगाड़ा नहीं तो यह मेरा कुछ करने वाला नहीं है। अहिंसा के पक्षधर, सत्य का शंखनाद करने वाले महावीर ने अपने ज्येष्ठ, श्रेष्ठ एवं परम विनीत शिष्य गौतम स्वामी को बेले का पारणा किए बगैर आनन्द श्रावक के पास क्षमायाचना करने हेतु भेजा। महावीर को अनेक रूपों में देख सकते हैं। अनेक उपसर्ग उपस्थित होने पर भी क्षमाशूर महावीर में सुमेरू सी अविचलता और सागर-सी गम्भीरता थी। ग्वाला, शूलपाणि यक्ष, संगम, गोशालक आदि के उपसर्ग इसके साक्षी हैं। **अपकारी पर उपकार**- उपकारी के प्रति कोई उपकार करे तो अतिशयोक्ति नहीं, किन्तु भगवान् ने तो अपने प्रति अपकार करने वाले पर भी उपकार किया। भगवान् ने जो प्रवचन फरमाये वे विद्वत्ता प्रदर्शन के लिए नहीं थे। जीवों के आत्म-गुणों का रक्षण करने के लिए उन्होंने प्रवचन फरमाये। यदि वीतरागता के प्रति आपके चरण बढ़े तो इस चर्या का अवलम्बन नयसार की तरह महावीर बनाने वाला हो सकता है।

इस पावन प्रसंग पर बालोतरा, बाड़मेर, जोधपुर, जयपुर, गोटन,

पीपाड़, पाली, सूरत, अहमदाबाद, मुम्बई आदि अनेक स्थानों से श्रद्धालु भक्तों का पदार्पण हुआ।

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 72 वें जन्म-दिवस पर तप-त्याग एवं गुणानुवाद

चैत्र कृष्णा अष्टमी दिनाङ्क 8 मार्च, 2010 को भगवान् आदिनाथ का जन्म कल्याणक एवं परमाराध्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 72वां जन्म-दिवस भक्तों की भावनाओं की झड़ी और एकाशन, उपवास आदि तपस्याओं की लड़ी के साथ मनाया गया। इस अवसर पर देश के विभिन्न स्थानों पर धर्माराधन, तपाराधन एवं सामायिक-स्वाध्याय के कार्यक्रम हुए तथा पूज्य गुरुदेव के गुणानुवाद से प्रेरणा प्राप्त हुई।

बाड़मेर- चैत्र कृष्णा अष्टमी को प्रातः सूर्य के उदित होने के साथ ही भक्तों के मन में उमड़ती हुई श्रद्धा चेहरों पर झलकने लगी थी। सभी भावुक भक्तों का मन आतुर हो रहा था कि कब सूर्योदय हो और आराध्य आचार्य देव के चरणों में पहुँचकर अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति करते हुए उत्तम स्वास्थ्य की मंगल कामना देते हुए, दीर्घायु होने की मंगल भावना अर्पित करें तथा भगवन्त के मुखारविन्द से व्रत-नियम स्वीकार कर अपने जीवन को धन्य बनाएँ। आचार्य भगवन्त को उनके जन्म-दिवस पर व्रत-नियम के प्रत्याख्यान रूपी भेंट समर्पित करें। इस प्रकार की मनोभावना लिये श्रद्धालु श्रावक बाड़मेर विराजित आचार्य भगवन्त के श्री चरणों में पहुँचे। उनमें पीपाड़ श्री संघ, अहमदाबाद श्री संघ, ब्यावर श्री संघ, बालोतरा श्री संघ, जोधपुर श्री संघ के अतिरिक्त चेन्नई, बैंगलोर के सुश्रावक एवं सुश्राविकाओं ने दर्शन लाभ एवं प्रवचन-श्रवण करने के साथ अन्तर मन की भेंट गुरुचरणों में चढ़ाकर आह्लाद का अनुभव किया।

प्रातः 7.15 बजे **श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा.** ने सुमधुर शब्दों में प्रार्थना करवाई। प्रवचन प्रातः 9.15 से प्रारम्भ हुआ जो 12.15 तक लगभग 3 घण्टे तक गतिमान रहा। भव्य प्राणियों पर वीतराग वाणी का झरना झरता रहा। सर्वप्रथम नवकार मंत्र, जिह्वा पर हो नाम तुम्हारा...भजन के द्वारा प्रस्तुति की गई.... उसके पश्चात् **श्रद्धेय श्री मोहनमुनि जी म.सा.** ने अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए फरमाया कि आचार्य श्री हीरा के सान्निध्य में प्रत्येक प्राणी शांति एवं आनन्द का अनुभव करता है, क्योंकि आचार्यप्रवर शान्ति के स्रोत हैं। आचार्य श्री

के उपकारों का वर्णन करते हुए उन्होंने बताया कि मैं संसार में भटक रहा था, मुझे अपनी शरण में लेकर शान्ति का साम्राज्य प्रदान किया है। आप श्री का- "तन स्वस्थ रहे, चिंतन प्रशस्त रहे" ऐसी मंगल भावना से गुरुदेव के चरणों में प्रभावना दी।

श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्यप्रवर के जीवन में विवेकशीलता, समर्पणशीलता, विनयशीलता आदि प्रमुख गुण विद्यमान हैं। इन गुणों की आधार शिला बचपन में निर्मित हो चुकी थी। आप शुद्ध पंचाचार के पालक एवं सिद्धान्तों से समझौता नहीं करने वाले साधक शिरोमणि हैं। मुनिश्री द्वारा स्वरचित भजन की कड़ियाँ प्रस्तुत की गई, जिनके बोल थे-

जिन शासन का गौरव है, आत्मज्ञान की सौरभ है।
चमके संयम वैभव रे, हीरा गणि न्यारा रे......।।टेर।।
प्रज्ञा जिनकी निर्मल है, जिन आज्ञा का सम्बल है।
करते धर्म प्रचारा रे, हीरा गणि न्यारा रे......।।1।।
सौम्य शान्त मुखमुद्रा है, तोड़ी मोह तन्द्रा है।
लगते सबको प्यारा रे, हीरा गणि न्यारा रे......।।2।।

श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. ने भगवान् ऋषभदेव के जन्म कल्याणक पर एवं पूज्य गुरु भगवन्त के जन्मदिवस पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मानवता पर भगवान् ऋषभदेव के असीम महान् उपकार हैं। आचार्य श्री हीरा का व्यक्तित्व तनावों की भीड़ में शान्ति का संदेश है, चंचल चित्त के लिए एकाग्रता का आह्वान है, अशान्त मन के लिये समाधि का नाद है। प्रतिकूलता में संतुलन का संदेश है। आपश्री का जन्म दिन हमारा पुनर्जन्म बन सके, इस प्रकार कहकर श्रद्धा की अभिव्यक्ति की। **श्रद्धेय श्री योगेश मुनि जी म.सा.** ने भावभिव्यक्ति करते हुए कहा कि जन्म से महापुरुष आदिनाथ भगवान् हैं और कर्म से महापुरुष आचार्य श्री हीरा हैं। गुरु हमें अपने आपमें अवस्थित होने का संदेश देते हैं। बुराई रहित व्यक्ति ही सुन्दर समाज का निर्माण करता है। सुन्दर समाज की संरचना के सूत्र बताने वाले गुणपुंज आचार्य श्री हमारे समक्ष विराजमान हैं। आपके जन्म दिन पर गुणग्रहण की भावना का परम लक्ष्य रख सभी को पावन श्री चरणों में अनमोल भेंट चढ़ाना है। भजन के माध्यम से मनोभावना व्यक्त करते हुआ कहा- *"हे नाथ दया करके चरणों में बिठा लेना.....।"*

तत्त्व चिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने फरमाया- शिष्य जो

बनता सही, गुरु आप ही बन जायेगा। गुरुओं की शरण सफलता की कुंजी है। साधक का जीवन पतित की पुकार, दुःखियों की दवा एवं प्रेमी का अन्तिम प्रयोग है। मुनि श्री ने चार शरणों में जाने की भावना पर विशेष बल देते हुए आचार्य श्री हीरा के अनेक गुणों का वर्णन किया तथा कहा कि आपने दक्षिण में इचलकरंजी, बैंगलोर, मद्रास, बीजापुर, अहमदाबाद आदि स्थानों पर सकल संघ के झण्डे के नीचे चातुर्मास किया। आप सदैव निन्दा-विकथा से परे रहे हैं। हम भी इस मीठे जहर निन्दा-विकथा से बचने का हर सम्भव प्रयास करें। बालोतरा और किशनगढ़ शहर में आपकी विचक्षणता एवं विलक्षणता से समरसता का वातावरण बना रहा। जलगांव में संवत्सरी पर स्वयं आचार्य श्री व सन्तों ने टंकी की छत के नीचे प्रतिक्रमण कर दो प्रतिक्रमण वालों के लिये अपना व सन्तों का स्थान खाली कर दिया, कैसी अनूठी सहिष्णुता की भावना आपमें है। 'गुणिषु प्रमोदम्' का भाव अन्तर में है, अतः दूसरे संतों की प्रशंसा कर थकते नहीं।

संघ की धायमाता के पद से सुशोभित **महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा.** ने फरमाया कि-सुमेरु सी अडोलता, सागर सी गंभीरता, पृथ्वी सी सहनशीलता आदि गुणों से वर्ष 72 में प्रवेश (72=7+2=9) करने वाले आचार्यप्रवर को चतुर्विध संघ की ओर से स्वास्थ्य की शुभ कामना देते हुए कहा कि आँख में काजल है, पर देखने के लिए दर्पण चाहिए, दही में मक्खन समाया हुआ है पर मथनी चाहिये, लकड़ी में आग है, पर घर्षण चाहिए, बीज में वृक्ष है पर सिंचन चाहिए, ठीक उसी प्रकार आत्मा में परमात्मा बनने का सामर्थ्य है, पर गुरु कृपा का प्रसाद चाहिये। गुण आत्मा में रहे हुए हैं, संसर्ग से प्रकटीकरण किया जा सकता है। गुरु कृपा का वर्षण होने पर ही हम मोक्ष महल में रिजर्वेशन करवा सकते हैं।

श्री ओमप्रकाश जी बांठिया ने बाड़मेर प्रवास में पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन सान्निध्य में धर्मध्यान, शीलव्रत प्रत्याख्यान, तपाराधना का जो अभूतपूर्व ठाट रहा उसका उल्लेख कर कहा कि इस क्षेत्र में जो धर्मोन्नति हुई है वह सब आप श्री की कृपादृष्टि का सुफल है।

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री की गुणगान श्रवण की भावना किंचित् भी नहीं थी, अतः वे सभा समाप्ति से कुछ पूर्व प्रवचन सभा में पधारे। सभी की आँखों में हर्ष की लहर दौड़ गई। भक्तगण पलक पावड़े बिछाये इसी क्षण की प्रतीक्षा में थे।

नाकोड़ा संघ के ट्रस्टी श्री जेठमल जी जैन ने नाकोड़ा पधारने एवं

फरसने की विनति श्री चरणों में की और विहार के समय में हो रही दुर्घटना से राहत पाने के लिये समाधान चाहा।

मुमुक्षु बहिन ट्विंकल सालेचा एवं **वर्षा सालेचा** तथा **विरक्ता बहिन शिल्पा बागरेचा, प्रीति कानूगा** ने अपनी जीवन नैया की खिवैया गुरुवर के हाथों में थमाते हुए प्रणति भाव प्रकट किए-

सुबह की कलियों ने पैगाम भेजा है,
महकते फूलों ने आपको सलाम भेजा है।
मुबारक हो आपको जन्मदिन,
हमने आपको खुशियों का पैगाम भेजा है।।
हमें गुरुदेव तेरा सहारा ना मिलता,
ये जीवन दुबारा ना खिलता।।

मुमुक्षु आत्माओं ने अपने आराध्य गुरु के चरणों में समवेत स्वर से उक्त प्रकार की भावनाएँ प्रकट की। निस्पृह योगी पूज्य आचार्य भगवन ने अप्रमत्त भाव से सुना। जिनकी वाणी सुनने के लिये सैकड़ों भाई-बहिन लालायित थे, वह क्षण आ ही गया।

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपना प्रवचन "ऋषभदेव भगवान, तुमको लाखों प्रणाम" भजन की कड़ी से प्रारम्भ किया। प्रत्येक बीज में वृक्ष समाया हुआ है यदि उसे मिट्टी पानी का संयोग मिले। हर कंकर शंकर बन सकता है, यदि घड़ने वाला कारीगर बराबर मिल जाय। भारत का हर नागरिक राष्ट्रपति बन सकता है यदि जनता के वोट के साथ सपोर्ट मिल जाये। ठीक इसी प्रकार हर आत्मा परमात्मा बन सकती है यदि सरलता और सत्यता का गुण मिल जाये। युगलिक मानव सरल थे, इसलिये जल्दी जग जाते थे। एक नायक की दीक्षा के साथ 4000 व्यक्ति दीक्षित हो गये। संसार में नित्य कुछ भी नहीं है, हर पल आयु क्षीण हो रही है, अचम्भा मोह का ऐसा है कि जिसके कारण व्यक्ति मानता है कि मैं एक साल बड़ा हो गया, जबकि शास्त्र कहता है कि जितनी उम्र लाया उसमें से एक साल कम हो गया। सरलता के कारण भरत को शीश महल में केवलज्ञान हो गया। आप भी सरलता को अपनायेंगे तो आगे बढ़ने में समर्थ हो जायेंगे।

भगवान् आदिनाथ जन्म-कल्याणक एवं आचार्य-प्रवर के जन्म-दिन के पावन प्रसंग पर 250 से अधिक सामूहिक एकासना की आराधना के साथ उपवास

भी अच्छी संख्या में हुए।

पाली-मारवाड़ में उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में संत-प्रवरों द्वारा आचार्यप्रवर के जीवन एवं उपलब्धियों को रेखांकित किया गया। इसी प्रकार जो महासती मण्डल जहाँ विराजित था, वहाँ पर भी पूज्य गुरुदेव के गुणगान किए गए एवं सामायिक-साधना के साथ व्रत-प्रत्याख्यान हुए।

जलगाँव- आचार्यप्रवर का 72वां जन्मदिवस यहाँ स्वाध्याय भवन में श्रद्धेय श्री चैतन्य मुनि जी एवं मधुर व्याख्यानी महासती श्री रश्मि जी आदि ठाणा के सान्निध्य में तप-त्याग पूर्वक मनाया गया। मुनि श्री ने अपने प्रवचन में आचार्यप्रवर द्वारा सामायिक को घर-घर तक पहुँचाने की सराहना की तथा विगत 10 वर्षों से निरन्तर गतिमान 'स्वाध्याय भाऊ मण्डल' को अनूठी उपलब्धि बताते हुए कहा कि यह सभी संघों के लिए अनुकरणीय है। श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में लगभग 50 एकासन एवं अन्य प्रत्याख्यान किए गए तथा सभी आगन्तुकों ने सामूहिक रूप से तीन-तीन सामायिक की आराधना की। कार्यक्रम में श्री रतनलाल जी बाफना, श्री कस्तूरचन्द जी बाफना, प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द जी जैन, वीरपिता श्री प्रकाश जी हुण्डीवाल, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री महावीर जी बोथरा ने आचार्यप्रवर का गुणानुवाद किया।

भरतपुर- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् शाखा भरतपुर द्वारा 8 मार्च को संयम दिवस के रूप में मनाया गया। 7 मार्च को श्री महावीर भवन, वासन गेट में विशाल रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 59 यूनिट रक्तदान हुआ। आठ मार्च को श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् के तत्त्वावधान में सामायिक आराधना की गई। श्री प्रेमचन्द जी जैन ने आचार्य श्री के जीवन पर प्रकाश डाला। सचिव श्री विवेक कुमार जी जैन ने रत्नसंघ की गौरवशाली पाट परम्परा का उल्लेख करते हुए अध्यात्म चेतना वर्ष में व्रत-प्रत्याख्यान करने की प्रेरणा की। मौहल्ला गोपालगढ़ में 72 से अधिक सामायिक, दयाव्रत एवं अन्य साधनाएँ उत्साहपूर्वक सम्पन्न की गई।

जबलपुर- यहाँ आचार्यप्रवर का 72वां जन्म-दिवस सामायिक एवं स्वाध्याय के कार्यक्रमों के साथ जैन स्थानक भवन गोरखपुर में मनाया गया। सुश्रावक श्री मदनलाल जी बाघमार ने आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। श्रीमती कमला देवी जी बाघमार, श्रीमती शकुन देवी

जी बाघमार ने स्तवनों के माध्यम से आचार्य श्री के गुणगान किए। भाई तपस्वीलाल जी बाघमार ने भी अपने विचार प्रकट किये। कई श्रावक-श्राविकाओं ने पाँच-पाँच सामायिक की आराधना की।

आवासन मण्डल, सवाईमाधोपुर- आचार्यप्रवर के 72वें जन्म-दिवस के अवसर पर यहाँ 72 घंटे के नवकार मंत्र के जाप का आयोजन किया गया। साथ ही पूरे दिवस को त्याग-तपस्या के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अच्छी संख्या में एंकासन, संवर तथा सैकड़ों सामायिक हुईं।

अ. शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 1 अगस्त को

1. अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा कक्षा 1 से 14 तक के लिये 1 अगस्त 2010, रविवार को 12.30 से 03.30 बजे तक आयोजित की जायेगी। अधिकाधिक भाई-बहिनों को परीक्षा हेतु प्रेरित करावें।
2. तत्त्वज्ञान में रुचि रखने वाले महानुभावों के लिये 'कर्म-सिद्धान्त वारिधि' पाठ्यक्रम युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में प्रारम्भ किया गया है। इस पाठ्यक्रम में शिक्षण बोर्ड की चौदह कक्षाएँ उत्तीर्ण किये हुए अथवा मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से एम.ए. जैन दर्शन/संस्कृत से उत्तीर्ण किये हुए भाई-बहिन भाग ले सकते हैं।
3. अध्यात्म-चेतना वर्ष के अन्तर्गत 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ पर 500 प्रश्नों की खुली किताब प्रतियोगिता भी इस संस्थान द्वारा आयोजित की जा रही है। यदि कोई प्रतियोगिता में भाग लेना चाहे तथा प्रश्नपुस्तिका आदि की आवश्यकता हो तो कार्यालय में सम्पर्क करावें।
4. शिक्षण बोर्ड की पाठ्यपुस्तकें अनेक केन्द्रों पर भेजी जा चुकी हैं। यदि किसी भी कक्षा की पुस्तकों की आवश्यकता हो तो बोर्ड कार्यालय को सूचित करावें। मांग आने पर ही पुस्तकें भेजी जायेंगी। अतः यथाशीघ्र सूचित करावें।
5. परीक्षार्थी/केन्द्राधीक्षक चाहें तो आगामी परीक्षा हेतु आवेदन ऑनलाइन www.jainratnaboard.com पर भी कर सकते हैं। ई-मेल info@jainratnaboard.com पर भी परीक्षा सम्बन्धी जानकारी भिजवा सकते हैं।
6. परीक्षार्थी अपना ई-मेल प्रता व मोबाइल नम्बर इस कार्यालय को शीघ्र

भिजवाएँ ताकि परीक्षा सम्बन्धी जानकारी शीघ्रता से उन्हें उपलब्ध करा सकें।

7. सभी परीक्षार्थियों से निवेदन है कि आवेदन-पत्र भरते समय पूर्व परीक्षा की जानकारी में रोल नम्बर, कक्षा, परीक्षा दिनांक अवश्य भरें। गत परीक्षा के रोल नम्बर ही स्थायी रोल नम्बर रहेंगे।
8. दस परीक्षार्थी होने पर नया केन्द्र भी प्रारम्भ किया जा सकता है। पुराने केन्द्रों पर दस से कम संख्या होने पर भी केन्द्र चालू रहेगा।
9. परीक्षा सम्बन्धी यदि कोई समस्या आती हो तो उसकी जानकारी बोर्ड कार्यालय को प्रेषित करावें ताकि समाधान किया जा सके।

-सुशीला बोहरा, संयोजक

अ.भा. श्राविका मण्डल की कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न

जोधपुर- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्यकारिणी की बैठक रविवार, 21 फरवरी, 2010 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ो का चौक, जोधपुर में आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती मधुजी सुराणा ने की। बैठक में विभिन्न क्षेत्रों से पधारीं श्राविकाओं ने अपने-अपने क्षेत्र की धार्मिक गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। अध्यक्ष महोदया ने बैठक में सभी सदस्यों को भ्रूणहत्या पर प्रकाशित पुस्तिका के बारे में जानकारी प्रदान की और बताया कि इस पर श्राविका मण्डल द्वारा प्रतियोगिता का आयोजन किया जा चुका है। भ्रूणहत्या की रोकथाम हेतु आप सभी बहिनें एक दूसरे को प्रेरणा करें, प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम रखें और समिति को भेंजे। उन्होंने आचार्य श्री जन्मशताब्दी वर्ष में सभी क्षेत्र में संत-सतीवृन्द की विहारचर्या में भाग लेना, अधिक से अधिक सामायिक एवं स्वाध्याय करना, सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल अर्थ सहित सीखना, घर-घर में नवकार महामंत्र का जाप शुरु करने, आयंबिल, उपवास, एकासन की लड़ी, वर्षी तप करने की व करवाने की प्रेरणा की। उन्होंने कहा कि 12 व्रत स्वयं ग्रहण करें और अन्य श्राविकाओं को प्रेरणा करें। वर्ष में कम से कम 2 शिविर का आयोजन करने, दो दिन संवर करने तथा क्षेत्रानुसार 5 नये स्वाध्यायी तैयार करने आदि की भी प्रेरणा की गई। श्राविका मण्डल की निदेशक डॉ. मंजुला जी बम्ब-जयपुर ने सुझाव दिया कि हमें बालिका मण्डल भी तैयार कर नवयुवतियों को भी जोड़ना चाहिये। नये-नये क्षेत्र में आज के वातावरण को देखते हुए बालिका मण्डल आवश्यक है। बालिका मण्डल की ड्रेस

कोड सफेद ड्रेस और चून्दड़ी दुपट्टा निश्चित किया गया।

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान में प्रवेश हेतु स्वर्णिम अवसर

जयपुर- सम्पूर्ण भारत के विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिभावान छात्रों का जीवन सुसंस्कारित, सुखद, समुज्ज्वल एवं यशस्वी बनाने के लिए संस्थान विगत 36 वर्षों से कार्यरत है। इस वर्ष भी 10वीं अथवा 12वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को सत्र 2010-2011 में प्रवेश दिया जायेगा। यह संस्थान संस्कृत, प्राकृत एवं जैन धर्म-दर्शन का विशेष अध्ययन कराने के साथ विद्यालयीय, महाविद्यालयीय एवं विश्वविद्यालयीय अध्ययन में नियमित प्रवेश के साथ छात्रों के व्यावहारिक अध्ययन पर भी पूरा ध्यान देता है। यहाँ से निकले अनेक प्रतिभासम्पन्न छात्र अच्छे स्थानों एवं पदों पर कार्य कर रहे हैं। प्रवेशार्थी छात्र अपना नाम, पिता का नाम, जन्मतिथि, फोन नं., धार्मिक योग्यता एवं पूर्व के दो वर्षों की अंकतालिकाओं की प्रमाणित प्रतियाँ संलग्न कर आवेदन-पत्र प्रेषित करें। *-विजय मेहता, अधिष्ठाता, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, आचार्य हस्ती भवन, दैनिक भास्कर कार्यालय के पास, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302020, मो. 9462322197*

हैदराबाद में अध्यात्म चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में विभिन्न आयोजन

आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में गठित समिति (आन्ध्र प्रदेश) के माध्यम से अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हो रहे हैं। समिति के सभी सदस्य एवं प्रधान सचिव श्री श्रीपाल देशलहरा उत्साहपूर्वक आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी वर्ष को आध्यात्मिक रूप देने में जुटे हुए हैं। यह अध्यात्म चेतना वर्ष जैन-जैनेत्तर जनों के लिए प्रेरणा स्रोत बना हुआ है। जिसने आचार्य गुरुदेव हस्ती का नाम नहीं सुना था वह भी उनके प्रवचन-ग्रन्थों, इतिहास-ग्रन्थों का स्वाध्याय कर अभिभूत है। आन्ध्र प्रदेश की राजधानी में चेतना का नया अनुभव हो रहा है। जिला स्तर पर संयोजकों की नियुक्ति एवं कार्यों को विस्तार दिया जा रहा है। 'मानवीय आहारः शाकाहार' निबन्ध प्रतियोगिता के लिए 200 निबन्ध, इसी प्रकार भ्रूण हत्या विषय पर 78 निबन्ध प्राप्त हुए हैं। अजैन लोगों ने भी बड़ी संख्या में भाग लेकर शताब्दी वर्ष को नमन किया है।

24-25 अप्रेल,2010 को जैनाचार्य हस्ती शताब्दी साहित्यकार सम्मेलन को मूर्त रूप देने की योजना है, जिसमें साहित्यकार, लेखक, कवि एवं शोधकर्ता भाग लेंगे। रत्न संघ के साहित्यकार श्री तेजराज जी जैन (लोढ़ा) द्वारा आचार्य हस्ती जीवन दर्शन पर 'जीवन सूत्र' पुस्तक का लेखन किया जा रहा है।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल (आ.प्र.) एवं जैनाचार्य हस्ती जन्म शताब्दी द्वारा महावीर जयन्ती के उपलक्ष्य में हैदराबाद के नारायण सेवा संस्थान में विकलागों को ट्राइ साइकिल एवं आपरेशन हेतु राशि भेंट की गई।

महावीर जन्म-कल्याणक के अवसर पर ही श्री जैन सेवा संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि केन्द्रीय ग्रामीण मंत्री श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' को जैनाचार्य हस्ती जन्म शताब्दी आन्ध्रप्रदेश की ओर से 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ भेंट किया गया। मासिक पत्रिका जिनवाणी के 52 आजीवन सदस्य बनाए गए। जिनवाणी एवं आचार्य हस्ती जीवन दर्शन खुली किताब प्रतियोगिता का स्टॉल लगाया गया।

संक्षिप्त समाचार

अजमेर- सेवाभावी महासती श्री संतोष कंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 अजमेर के उपनगरों को पावन करते हुए फाल्गुनी पूर्णिमा पर वैशाली नगर विराजे, जहॉं सामायिक, स्वाध्याय, उपवास एवं आयम्बिल की अच्छी तपस्याएँ हुईं। यहाँ तीन दिनों तक धर्माराधना का ठाट रहा। जिससे सबको महत्ती प्रसन्नता का अनुभव हुआ। *-नथराज कोठारी*

हिण्डौन सिटी- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में मुमुक्षु बहिन सुश्री एलिजा, सुश्री समता, सुश्री दीपिका, सुश्री कोमल का बहुमान स्थानीय संघ द्वारा आयोजित किया गया। डॉ. मंजुला जी बम्ब-जयपुर, श्री मनोज जी कांकरिया-जोधपुर, श्री राधेश्याम जी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर आदि ने पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस बहुमान कार्यक्रम में भरतपुर, खेरलीगंज, मण्डावर, गंगापुर, धारेड़ा, बरगमा, फाजिलाबाद, शेरपुर आदि अनेक कस्बों एवं ग्रामों के श्रावकों ने भाग लिया। कार्यक्रम में विरक्ता बहनों के माता-पिता का भी सम्मान किया गया।

आगोलाई- आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में महावीर जयन्ती पर विशेष

धर्माराधन हुआ। प्रातःकालीन प्रवचन सभा के साथ दया, उपवास, एकाशन, वर्ष भर के लिए आयंबिल की लड़ी एवं एकान्तर उपवास (श्रीमती तारादेवी गोग्गड़) प्रारम्भ हुए। गुटखा, बीड़ी एवं सिगरेट का युवाओं ने त्याग किया। प्रतिदिन 40-45 गुटखों के पाउच खाने वाले श्री प्रेमजी चौपड़ा ने तथा 50-60 बीड़ी पीने वाले श्री पारसमल जी चौपड़ा ने जीवन भर के लिए इनका त्याग कर दिया। इसी प्रकार अनेक सदस्यों ने गुटखा एवं बीड़ी के त्याग किए।

कोलकाता- आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी अध्यात्म चेतना वर्ष एवं महावीर जयन्ती के उपलक्ष्य में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं महावीर सेवा सदन, कोलकाता के संयुक्त तत्त्वावधान में कृत्रिम पैर लगाने का शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 40 व्यक्तियों के पैर लगाए गए। श्री अरूण मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में तथा संघ अध्यक्ष श्री सुमेरचन्द जी मेहता की अध्यक्षता में धार्मिक कार्य सम्पन्न हुए।

मेड़ता सिटी-श्री जयमल जैन छात्रावास, मेड़ता शहर के पचास वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। छात्रावास में कम्प्यूटर शिक्षण, शारीरिक विकास हेतु नियमित व्यायाम, क्रिकेट आदि खेलकूद के अनेक साधन एवं शैक्षणिक ज्ञान हेतु वाचनालय की सुविधा है। नियमित सामायिक-स्वाध्याय एवं जैन धर्म-दर्शन की शिक्षा पर भी ध्यान दिया जाता है। निर्धन छात्रों हेतु निःशुल्क सुविधा भी है। प्रवेशार्थी छात्र सम्पर्क करें- ***मंत्री, श्री जयमल जैन छात्रावास, मीरा मन्दिर के पास, मेड़ता शहर-341510, जिला-नागौर(राज.), मो. 9414119283***

उदयपुर- गुरु पुष्कर जन्म शताब्दी वर्ष में यहाँ 'गुरु पुष्कर नवकार तीर्थ भवन' का उद्घाटन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्री शान्तिलाल जी चपलोत ने कहा कि नवकार महामंत्र सिद्ध मंत्र है।

विजयनगर- श्री प्राज्ञ जैन बालिका मण्डल द्वारा "जैन की निशानी : धोवन पानी" अभियान का आयोजन किया गया। सुश्री प्रिया जी भण्डारी के नेतृत्व में घर-घर जाकर धोवन-पानी का संदेश दिया गया। विजयनगर में लगभग 400 घरों ने इसे अपनाया है।

पीपाड़ शहर- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन स्वाध्याय पाठशाला में बच्चों को धार्मिक शिक्षण के लिए अध्यापक की आवश्यकता है। उम्र 40 वर्ष से अधिक, धार्मिक जानकारी एवं पढ़ाने के अनुभव सहित आवेदन करें **-रमेशचन्द्र जैन,**

द्वारा रमेश बुक डिपो, सुभाष घाट, पीपाड़ शहर, जिला-जोधपुर (राज.), फोन: 02930-233101

हैदराबाद- श्री आदित्यमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 3 की सन्निधि में मुमुक्षु बहिनें कु. वर्षा एवं कु. ट्विंकल, बालोतरा का अभिनन्दन समारोह गणमान्य श्रावकों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

बधाई/चुनाव

चेन्नई- संघसेवी, श्रावकरत्न एवं प्रसिद्ध उद्यमी श्री गौतमराज जी सुराणा को समाज-सेवा एवं कल्याणकारी कार्यों के लिए 28 फरवरी, 2010 को राजस्थानी कला केन्द्र, चेन्नई द्वारा राजस्थान शिरोमणि सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें पुदुचेरी के उपराज्यपाल इकबाल सिंह के कर-कमलों से प्राप्त हुआ। जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई के अध्यक्ष रहे सुश्रावक श्री सुराणा जी अपनी उपलब्धियों को आचार्य श्री हस्ती एवं आचार्य श्री हीरा का आशीर्वाद बताते हैं। आप कई समाज सेवी संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं तथा संघ एवं समाज की सेवा सदैव करने के लिए तत्पर रहते हैं।

जोधपुर- श्री वैभव लोढ़ा पुत्र श्रीमती शोभा महावीर जी लोढ़ा एवं सुपौत्र स्व. श्री

करोड़ीमल जी लोढ़ा (पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ) ने **I.I.M.** से एम.बी.ए. कर यस बैंक, मुम्बई में नियुक्ति प्राप्त की है। सी.ए. में भी उनका भारतभर में 28वां

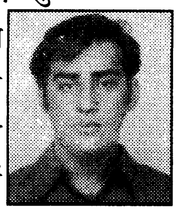

स्थान रहा। उनके भ्राता श्री विजय लोढ़ा ने दुबई से **M.B.A. Finance** में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। एतदर्थ बधाई

पुणे- देश की सामरिक शक्ति को चार चाँद लगाने वाले 'अग्नि' तीन प्रक्षेपास्त्र के

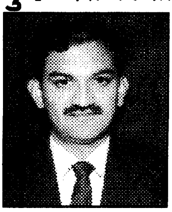

निर्माण में जोधपुर निवासी वैज्ञानिक प्रवीण कुमार मेहता ने अहम् भूमिका निभाई है। सांइटिस्ट प्रवीणकुमार मेहता को डी.आर.डी.ओ. की ओर से प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के द्वारा नई दिल्ली में सांइटिस्ट ऑफ द ईयर 2007 अवार्ड से सम्मानित किया गया। इससे पूर्व भी श्री मेहता को सन् 1999 में अग्नि अवार्ड फॉर एक्सीलेंस इन सेल्फ रिलांयस अवार्ड पूर्व प्रधानमंत्री भी अटलबिहारी वाजपेयी ने

प्रदान कर सम्मानित किया था। मेहता पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ भी कार्य कर चुके हैं। वर्तमान में पुणे में स्थित रिसर्च एण्ड डवलपमेन्ट एस्टेब्लिशमेंट में प्रोजेक्ट डायरेक्टर के पद पर नियुक्त हैं।

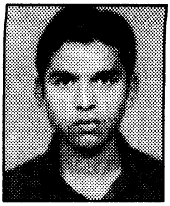

गोटन- निर्मल जैन पुत्र श्री शांतिलाल जी जैन ने सी.एस.इन्टर जून-2009 की परीक्षा में देशभर में 25वां स्थान प्राप्त किया। आपने बारहवीं कक्षा में मेरिट में द्वितीय स्थान प्राप्त किया था। वे पूर्व में तत्कालीन राज्यपाल प्रतिभा पाटिल से भी सम्मानित हो चुके हैं।

चितौड़गढ़- सुश्री कोमल जैन सुपुत्री श्री हेमन्त कुमार जैन (अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश) ने फलोरिडा, अमेरिका में हुए अन्तरराष्ट्रीय मूट कोर्ट कॉम्पीटिशन में भाग लिया और उनकी टीम चतुर्थ स्थान पर रही। अमेरिका के शैक्षणिक भ्रमण के लिए उनका चयन किया गया है।

गोटन- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-गोटन द्वारा श्रावक संघ और युवक मण्डल के चुनाव सम्पन्न हुए। श्रावक संघ के पदाधिकारी निम्नानुसार हैं- श्री भेरूलालजी ओस्तवाल-अध्यक्ष, श्री चेनरूपचन्दजी बाफना-मंत्री, श्री अभयकुमारजी लोढ़ा-उपाध्यक्ष, श्री हंसराजजी चौपड़ा-कोषाध्यक्ष। युवक परिषद् के पदाधिकारी हैं- श्री महावीरचन्दजी बाफना-अध्यक्ष, श्री सुरेशजी ओस्तवाल-मंत्री, श्री जम्बुकूमारजी लोढ़ा-कोषाध्यक्ष।

हैदराबाद- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् की नव निर्वाचित कार्यकारिणी में श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी देशलहरा एवं मंत्री श्री हस्तीमल जी गुन्देचा हैं। श्राविका मण्डल में अध्यक्ष श्रीमती वैजयन्तीजी डोसी एवं मंत्री श्रीमती इन्द्राजी बाघमार तथा युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री पारस जी डोसी एवं मंत्री श्री बसंत जी बाघमार हैं। *-श्रीपाल देशलहरा, क्षेत्रीय प्रधान*

हिण्डौन सिटी- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, हिण्डौन सिटी शाखा के चुनाव सम्पन्न हुए, जिसमें निम्नानुसार कार्यकारिणी गठित की गई है- श्री निरंजनलाल जी जैन-अध्यक्ष, श्री अशोक कुमारजी जैन-मंत्री, श्री प्रेमचन्दजी जैन-कोषाध्यक्ष।

श्रद्धाञ्जलि

मैसूर- अनन्य गुरुभक्त, संघसेवी, संत-सेवी उदारमना सुश्रावक श्री विमलचन्द

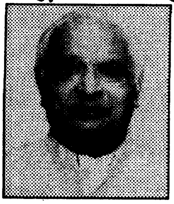

जी धोका (सुपुत्र स्व. सुश्रावक श्री अनराज जी धोका), मूल निवासी निमाज (राज.) का 22 मार्च, 2010 को 68 वर्ष की वय में स्वर्गगमन हो गया। कर्नाटक के मैसूर शहर में व्यापार-व्यवसाय, संघ-समाज और परोपकारी कार्यों में गुरुकृपा से उन्होंने यश-कीर्ति तो अर्जित की ही, सबके साथ सामंजस्य बनाकर न केवल मैसूर में अपितु दक्षिण भारत में रत्नसंघ की दीप्ति में तन-मन-धन से योगदान किया। पारिवारिक संस्कारों के कारण उनमें गुरुभक्ति, संघ-सेवा और परोपकार के कार्यों में सदा रुचि रही। उन्होंने संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के कार्यों को पूरे उत्साह से संभाला। मैसूर संघ के अध्यक्ष का दायित्व भी उनके सबल कंधों पर रहा। संघ की प्रवृत्तियों के पोषण में एवं कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में उनकी सक्रियता-जागरूकता का ही सुपरिणाम है कि इस वर्ष मैसूर श्री संघ को महासती मण्डल के चातुर्मास का लाभ मिल रहा है। आप कर्नाटक सम्भाग के क्षेत्रीय प्रधान एवं गजेन्द्र निधि के ट्रस्टी थे। दृढ़धर्मी श्रावकरत्न की गुरुभक्ति और संघ-सेवा अनूठी थी। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता के कारण संघ-समाज में अपने-परायों में और घर-परिवार में उनका वर्चस्व था। जीवन की क्षणभंगुरता को जानने वाले श्रावकरत्न ने मृत्यु के पूर्व एक लाख रुपये शुभ कार्य हेतु निकालने की भावना व्यक्त कर अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है। गुरुभक्ति के कारण बैंगलोर-बंगारपेट चातुर्मास में उन्होंने धर्म-साधना के लिए चौका लगाकर अपनी और अपने परिवार की भक्ति दर्शायी, वह अनुमोदनीय है। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री सुभाषचन्द जी, श्री अशोककुमार जी तथा सुपुत्री श्रीमती प्रकाशबाईजी एवं सविताबाईजी का भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती अकलकंवर जी कांकरिया का

2 अप्रेल 2010 को 72 वर्ष की वय में हैदराबाद में देहावसान हो गया। आपकी परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। सामायिक-स्वाध्याय में आपकी विशेष रुचि थी। आपका

अधिकांश समय धर्म-साधना में व्यतीत होता था। छोटे-बड़े व्रत-प्रत्याख्यानों से आपका जीवन धर्माराधना से युक्त था। आप अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक स्व. श्री सायरचन्द जी कांकरिया की भ्रातृवधू थी। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई है।

बाड़मेर- परम गुरुभक्त श्री मीठालाल जी मण्डोत का 7 मार्च 2010 को

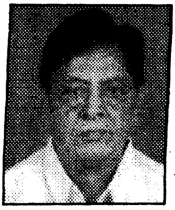

आकस्मिक निधन हो गया है। आपका जीवन सरल एवं सादगीपूर्ण था। जीवन के अंतिम समय में आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के बाड़मेर प्रवास के दौरान आपने सामायिक, व्रत-प्रत्याख्यान एवं शील व्रत का खंद लेकर अपूर्व सेवा भक्ति का लाभ लिया एवं आवास-प्रवास तथा भोजन व्यवस्था में पूरा सहयोग किया, जो अनुकरणीय है। आप हमेशा सामाजिक, धार्मिक कार्यक्रमों में सहयोग के लिये अग्रणी रहते थे। सम्पूर्ण मण्डोत परिवार देव-गुरु-धर्म के प्रति हमेशा समर्पित रहा है। आप अपने पीछे पुत्र अशोकजी, राजेशजी एवं अमितजी का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

भरतपुर- कर्मठ श्राविका श्रीमती पुष्पादेवीजी जैन धर्मपत्नी श्री भरतसिंहजी जैन, का आकस्मिक निधन 24 फरवरी, 2010 को 65 वर्ष की अवस्था में हो गया। आप सरल स्वभावी, मिलनसार एवं धर्मनिष्ठ साधिका थीं। महासती श्री सौभाग्यवती म.सा. के भरतपुर चातुर्मास में आपने आजीवन शीलव्रत लिये थे तथा काफी वर्षों से नियमित सामायिक, नवकारसी, पौरसी व अनेक प्रत्याख्यान करती रहती थीं। रात्रि भोजन का भी त्याग था। आप संत सतियों के दर्शन वंदन व सेवा का सदैव लाभ लेती रहती थीं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं तथा पूरा परिवार धार्मिक क्रिया से जुड़ा हुआ है।

सिकन्दराबाद- धर्मनिष्ठ, तपस्विनी, वरिष्ठ सुश्राविका श्रीमती बगदी बाई मुणोत धर्मपत्नी श्री संपतराज जी मुणोत 'काकू' का 58 वर्ष की उम्र में 15 फरवरी, 2010 को आकस्मिक निधन हो गया। वे सरल, शांत स्वभावी एवं सहनशीलता की मूर्ति थीं। वे हँसमुख, मधुरभाषी, व्यवहार कुशल एवं मिलनसार थीं। आतिथ्य सत्कार की भावना आप में कूट-कूट कर भरी थी।

कोटा- दृढ़धर्मी सुश्राविका श्रीमती सौभाग्यदेवी जी सुपुत्री स्वर्गीय श्री नाथूसिंह जी मेहता (जरी किनारी वाले) का 69 वर्ष की उम्र में 28 फरवरी, 2010 को पूर्ण प्रत्याख्यान पूर्वक देवलोक गमन हो गया। आपने अल्पायु में वैधव्य के पश्चात्

अपना सम्पूर्ण जीवन धर्म में एवं आत्मोत्थान में लगा दिया था। आप प्रतिदिन सामायिक, चारों खन्दों का पालन, 11 द्रव्य की मर्यादा एवं 14 नियम लगभग 45 वर्षों से कर रही थीं। दोनों समय प्रतिक्रमण करना उनके जीवन का अभिन्न अंग था।

जयपुर- धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती हेमलता जी ढढ्ढा धर्मपत्नी लब्ध प्रतिष्ठ व्यवसायी स्व. श्री ज्ञानचन्द जी ढ्ढढा का स्वर्गगमन 11 मार्च 2010 को संथारे सहित हो गया। आपका बाल्यकाल से ही जीवन धर्ममय रहा। आप बहुत ही सरल स्वभावी, धर्मनिष्ठ, कर्तव्य परायण, मृदुभाषी, अत्यन्त व्यवहार कुशल एवं सेवाभावी श्राविकारत्न थीं। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. तथा पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा।

जयपुर- संघ-सेवी, संघ समर्पित सुश्रावक श्री जंवरीलाल रांका का 3 मार्च 2010

को देहावसान हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ सुश्रावक थे। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता आदि गुणों से युक्त आपका जीवन था। आप सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में सदैव समर्पित रहे। आप एवं आपका पूरा परिवार धार्मिक संस्कारों के साथ जीवन निर्माण रूप सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ा हुआ है।

श्योपुरकलां- धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती घेवरबाई धर्मपत्नी स्व. श्री

सूरजमल जी मेहर का 90 वर्ष की उम्र में प्रत्याख्यान सहित स्वर्गवास हो गया। गुरु के प्रति भक्ति, संघ के प्रति निष्ठा और धर्म-साधना के प्रति उनकी सक्रियता प्रेरणादायक थी। सामायिक, स्वाध्याय और साधना-आराधना में जागरूक श्राविकारत्न का जीवन अनुकरणीय था। आप तबसे वर्षीतप की साधना कर रही थी और 40 वर्षों से शय्या पर शयन का त्याग था। आप अपने पीछे दो पुत्र तथा तीन पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ कर गयी हैं।

बालोतरा- अनन्य गुरुभक्त, संघहितैषी युवारत्न श्री अजयकुमार जी सालेचा का 21 मार्च 2010 को आकस्मिक निधन हो गया। आपकी सभी संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के

बालोतरा चातुर्मास के दौरान आपकी अहर्निश सेवाएँ अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय रहीं। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक आपका जीवन धार्मिक क्रिया-कलापों से युक्त था। सामाजिक कार्यों में भी आपका योगदान सराहनीय था।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ, स्वाध्यायी सुश्राविका श्रीमती रेखा जी सिंघवी धर्मपत्नी

सुश्रावक श्री सुमेरचन्द जी सिंघवी (पुत्रवधू स्व. श्री उम्मेदचन्द जी सिंघवी) का 59 वर्ष की वय में 28 मार्च 2010 को सड़क दुर्घटना के बाद असामयिक निधन हो गया। आपने अपने जीवन काल में पन्द्रह, ग्यारह, अठाई, तेले, बेले, उपवास आदि अनेक तपस्याएँ कीं। प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण, पर्व तिथियो पर हरी सब्जियों का त्याग, रात्रि-चौविहार त्याग व संत-सतियों की सेवा करना आपकी प्रमुख विशेषता थी। वर्तमान में आप श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल,जोधपुर की कोषाध्यक्ष थीं। आप अपने पीछे एक पुत्र तथा एक पुत्री सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

मोरतलाई- सुश्रावक श्री बालचन्द जी लखीचन्द जी संचेती का 8 मार्च 2010 को 83 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। आपके अनेक त्याग-प्रत्याख्यान थे। आपका स्वभाव मिलनसार व धार्मिक था। आप संत-सतियों की सेवा में अग्रणी थे। आप अपने पीछे 3 पुत्र एवं 6 पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

नागौर- वयोवृद्ध सुश्रावक श्री भैरूलाल जी ललवाणी का 21 मार्च 2010 को 83 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ सुश्रावक गुरु हस्ती, हीरा, मान के अनन्य भक्त थे तथा संत-सती की सेवा में अग्रणी रहते थे। आपकी स्वाध्याय में अत्यन्त रुचि थी। आपके पुत्र श्री महेश जी एवं प्रदीप जी ललवाणी संघ एवं समाज में अपनी सेवाएँ देते हैं। श्री प्रदीप जी ललवाणी स्वाध्यायी के रूप में प्रतिवर्ष अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

हैदराबाद- अनन्य गुरुभक्त संघनिष्ठ, सुश्रावक श्री प्यारेलाल जी मुथा गिरासनी

निवासी हाल मुकाम हैदराबाद का देहावसान 9 मार्च 2010 को हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय, व्रत-नियमों के प्रति सजग रहते थे। आपका पूरा परिवार संघ-सेवा, श्रुत-सेवा से जुड़ा हुआ धर्मनिष्ठ परिवार है। आपके सुपुत्र श्री गौतमचन्द जी, अमरचन्द जी एवं सुमेरचन्द जी सदैव समाज-सेवा में अग्रणी रहते हैं।

जयपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री सुमेरचन्द जी मेहता सुपुत्र स्व. श्री मेहताबचन्द जी

मेहता का 16 मार्च 2010 को देहावसान हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आपके पूज्य दादाजी स्व. डॉ. शिवनाथचन्द जी एवं पिताश्री स्व. श्री मेहताबचन्द जी मेहता आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के परम भक्त थे तथा उन्होंने कई संस्थाओं के पदों को सुशोभित कर समाज की सेवा की थी। श्रीमान् सुमेरचन्द जी के जीवन पर गुरु हस्ती, हीरा, मान का विशेष प्रभाव रहा।

जलगांव- श्रीमती मांगीबाई धर्मपत्नी श्री मिलापचन्द जी भण्डारी मूल निवासी

कुचेरा (राज.) का 68 दिवसीय संथारा 17 मार्च, 2010 की रात्रि को सम्पन्न हुआ। 9 जनवरी, 2010 को श्री राजेन्द्रमुनि जी के मुखारविंद से संथारा उन्होंने पूरी सचेतन अवस्था में स्वीकार किया था। संथारा काल में पूरी शांति समाधि रही। दिनभर भजन-स्वाध्याय एवं दोनों समय प्रतिक्रमण का कार्यक्रम चलता था। अंत समय तक कान, आँख एवं मस्तिष्क सक्रिय रहे। घर तीर्थ स्थान बन गया था। यह संथारा जलगांव श्री संघ के लिए गौरव का विषय रहा। श्राविकारत्न ने दृढ़ मनोबल का परिचय दिया। अपने पीछे वे एक पुत्र, तीन पुत्रियां और पौत्रों का भरापूरा परिवार छोड़कर गयी हैं।

बालोतरा- श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री हस्तीमल जी भण्डारी का 31 मार्च 2010 को 82 वर्ष की अवस्था में में देहावसान हो गया। साम्प्रदायिक भावना से परे आप धर्माराधना-तपाराधना एवं संघ-सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के बालोतरा चातुर्मास में आपकी अर्हनिश सेवाएँ अनुकरणीय रहीं। सामाजिक कार्यों में भी आपका योगदान सराहनीय था। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

बड़ी सादड़ी- श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री कन्हैयालाल जी मेहता का 86 वर्ष की उम्र में 17 मार्च 2010 को देहावसान हो गया। आप साहित्यकार डॉ. दिलीप जी धींग के मामा थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

3000/- साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

706 Shri SantoshKumar ji Shingi,Newasa,Ahmednagar (M.H.)
707 Smt. Sohani Devi ji Samdaria, Vellachery, Chennai(Tamilnadu)
708 Shri N. Kishore ji Bafna, Cuff Paraid, Mumbai(M.H.)
709 Shri Rajendra Prasad ji Kothari, Bangalore (Karnataka)
710 Shri Madhup Kumar ji Nawalakha, Tonk Road, Jaipur(Raj.)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12487 Shri Aditya ji Kankaria, Banglore (Karnataka)
12488 Shri Champa Lal ji Lodha, Chennai (Tamilnadu)
12489 श्री प्रवीण कुमार जी बाफणा, गुरु हस्ती कृपा, अम्बिका नगर, पालनपुर (गुजरात)
12490 श्री पवनकुमार जी संचेती,महेश नगर,डॉ. जयवन्त मेहता के सामने,इन्दौर (मध्यप्रदेश)
12491 श्री कैलाश चन्द जी जैन, बरकत नगर, टोंक फाटक, जयपुर (राजस्थान)
12492 श्री विमल जी जैन, विमल मेडिकल स्टोर, महवा रोड़, दौसा (राजस्थान)
12493 श्री दीपलालजी जैन,सेक्टर नम्बर 2, गाँधी नगर, रामकुई के सामने, चित्तौड़गढ़ (राज.)
12494 श्री नारायणलाल जी श्री श्रीमाल, 85, ऋषभ कॉम्प्लेक्स, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
12495 Shri Punam Chand Khivansara, Dindori, Nashik (M.H.)
12496 श्री रोहिल जी सिंघवी, 46, न्यू पॉवर हाउस रोड, जोधपुर (राजस्थान)
12497 श्रीमती भावना जी लोढ़ा, जी-145, शास्त्री नगर, जोधपुर (राजस्थान)
12498 श्री मयंकजी बालड़, पी-77, मधुविहार,लक्ष्मीनगर,मेन पावटा सी रोड, जोधपुर (राज.)
12499 Shri Vimal Kumar ji Bhandari, Chennai (Tamilnadu)
12500 श्री राधेश्याम जी जैन, बगीचा कॉलोनी, आदर्श नगर (ए), सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
12501 श्री रोहित जी बलाई, न्यू टी.टी. मार्केट, बी.ए.टी.टी. मार्केट, रिंग रोड, सूरत (गुजरात)
12502 श्री विमल कुमार बरड़िया, एन.जे. कॉम्पलेक्स, सी.एन.जी. के सामने, सूरत (गुजरात)
12503 श्री उमरावचन्द जी बोहरा, हीरा पन्ना मार्केट, रिंग रोड, सूरत (गुजरात)
12504 श्री मूलचन्द जी ढेलडिया बोहरा, नियर लुथरा अपार्टमेन्ट, बेगमपुरा, सूरत (गुजरात)
12505 श्री उकचंदजी मण्डोत, श्री नाकोडा एक्सपोर्ट,बोम्बे मार्केट,सूरत (गुजरात)
12506 डॉ. सुनील जी चौधरी, वरदान अपार्टमेन्टस्, 64 इन्द्रप्रस्थ एक्सटेंशन, दिल्ली
12507 डॉ. नवरत्नजी सुराणा,रामप्रस्थ कॉलोनी,डी.ए.वी.स्कूल के सामने,गाजियाबाद (उ.प्र.)
12508 श्री विमलजी चौधरी,सोहना रोड, ओमैक्स गुडगाँव मॉल के सामने, गुड़गाँव (हरियाणा)
12509 Smt. Nita ji Kankaria, Doddbalapur, Bangalore (Karnataka)
12510 श्री रत्नेश कुमार जी जैन, काला कुँआ हाउसिंग बोर्ड, अलवर (राजस्थान)
12511 श्री कमलेश कुमार जी नाहर, चौहान सा का नौहरा, उम्मेद चौक, जोधपुर (राजस्थान)
12512 श्री लोकेश जी डोसी, रिको हाऊसिंग कॉलोनी, अजमेर रोड़, ब्यावर, अजमेर (राज.)

12513 श्रीमती कल्पना जी मण्डलेचा, जवला, जामखेड़, अहमदनगर (महाराष्ट्र)
12514 श्री गिरीशकुमार जी जैन,पुष्प सदन, एस.एफ.एस.कॉलोनी, मानसरोवर, जयपुर(राज.)
12515 श्री अशोक कुमार जी जैन, शान्ति नगर, गोपालपुरा बाईपास, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)
12516 श्री मुकेश कुमार जी जैन, 91/5, पटेल मार्ग, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
12517 श्री विमलचन्दजी चोरड़िया,जैन कॉलोनी,ओसवाली मौहल्ला मदनगंज,अजमेर (राज.)
12518 श्री सुधीर कुमार जी जैन, 65/187, प्रतापनगर, सांगानेर, जयपुर (राजस्थान)
12519 श्री विशाल जी डूंगरवाल, माडल टाउन के पास, परवत पाटिया, सूरत (गुजरात)
12520 श्री राकेश जी बी. गुलेच्छा, 18 हैप्पी बंगलो, लम्बे हनुमान रोड़, सूरत (गुजरात)
12521 श्री हितैषीजी कवाड़,महावीर क्लॉथ एजेन्सी,गुडलक टैक्सटाइल मार्केट,सूरत (गुजरात)
12523 श्री लालचन्द जी जैन, बस स्टैण्ड के पास, अलीगढ़-रामपुरा, टोंक (राजस्थान)
12524 श्री योगेन्द्रराज जी सिंघवी, 59, आदर्श नगर, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)
12525 श्री महावीर पुस्तकालय, पुराना बस स्टैण्ड के पास, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)
12526 श्री भगवानराज जी सिंघवी, महावीर नगर, मण्डिया रोड़, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)
12527 श्री शा. अरविन्द कुमार जी जिनाणी, गिरधर नगर शाही बाग, अहमदाबाद (गुजरात)
12528 श्री घेवरचन्द जी दुग्गड, 24, तिलक नगर, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)
12529 Jai Ambe Electricals, Somnath, Daman (Gujrat)
12530 Shri Sha. Goutam Chand ji Jinnani, Ahmedabad (Gujrat)
12531 श्री चन्द्रभूषणमणि जी त्रिपाठी, आनन्द, भवानी नगर, अहमद नगर (महाराष्ट्र)
12532 श्री सतीशकुमारजी जैन,आनन्दविहार(ओल्ड),नेहरू नगर तृतीय,गाजियाबाद (उ.प्र.)
12533 श्री रमणिक कँवर जी म.सा., राधा स्थानक, 153, आड़ा बाजार, इन्दौर (मध्यप्रदेश)

500/- श्री डी. बोहरा परिवार, चेन्नई के सौजन्य से

12522 Smt. Vanita ji Chordia, Mint Street, Chennai (T.N.)

जिनवाणी हेतु साभार प्राप्ति-स्वीकार

50000/- श्रीमान् कैलाशचन्द जी हीरावत एवं हीरावत परिवार, जयपुर, अपनी सुपौत्री सौ.कां. चाँदनी जी सुपुत्री श्रीमान् धर्मेन्द्र जी हीरावत का शुभविवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

5000/- श्रीमती मंजुला जी लुणावत, जयपुर, श्री देवेन्द्र कुमार जी लुणावत की पुण्य स्मृति में भेंट।

2101/- श्री सुखेन्द्र जी लोढ़ा, मुम्बई, सौ. अनीषा जी सुपौत्री स्व. श्री करोड़ीमल जी एवं श्रीमती पुष्पा जी लोढ़ा, सुपुत्री मीनू जी सुखेन्द्र जी लोढ़ा का शुभविवाह चि. ओपिल जी लुणावत सुपुत्र श्री श्रेणिक जी लुणावत के संग दिनांक 10 फरवरी 2010 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्रीमती मनोहरदेवी जी धर्मपत्नी श्री केवलचन्द जी जैन (पारख), जोधपुर, सप्रेम भेंट।

2100/- श्रीमती रतनदेवी जी पन्नालाल जी बोकाड़िया एवं श्री सुगनचन्द जी, संजय जी, शैलेष जी बोकाड़िया पारिवारिजक जन, इन्दौर, श्री पन्नालाल जी बोकाड़िया की पुण्य स्मृति में

भेंट।

2100/- श्रीमती मंजुला जी लुणावत, जयपुर, चि. राहुल जी छाजेड़ के विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री किशोरचन्द जी, राजेन्द्रकुमार जी, सुरेन्द्रकुमार जी, प्रमोदकुमार जी बाफना, जोधपुर, श्रीमती बिदाम देवी (धर्मपत्नी श्री किशोरचन्द जी बाफना) की पावन स्मृति में भेंट।

1500/- श्री सुनीलकुमार जी प्रकाशचन्द जी बाफना, मुम्बई, अपने पूज्य पिताजी श्री शंकरलाल जी बाफना के देहावसान पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

1100/- श्री जवाहरलाल जी लालचन्द जी मुथा, अहमदनगर, पूज्य आचार्य भगवन्त के सपरिवार बाड़मेर में दर्शन वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती सरोज जी श्री अमरचन्द जी बाफना, मुम्बई, श्री सुकनराज जी छाजेड़ के देहावसान पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

1100/- श्री राजेन्द्र कुमार जी सर्राफ, जोधपुर, मातुश्री श्रीमती उच्छब जी सर्राफ धर्मसहायिका स्व. श्री चन्दनराज जी सर्राफ की प्रथम पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्रीमती रतन जी करनावट एवं समस्त करनावट परिवार, जयपुर, स्व. श्री मोतीचन्द जी करनावट की पुण्य स्मृति में भेंट।

1000/- श्री प्यारेलाल जी, महेन्द्र कुमार जी मुणोत, नागपुर पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की 100वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री तेजमल जी,सुनील कुमार जी पालड़ेचा, पो. धनोप, जिला-भीलवाड़ा (राज.), सुश्री गुंजन की भागवती दीक्षा दिनांक 17 फरवरी, 2010 को पारसोली में महासती श्री यशकंवर जी के मुखारविन्द से सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1000/- श्रीमती मंजुला जी लुणावत, जयपुर, पूज्य उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दर्शन वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री अरूणकुमार जी, कुणाल जी लोढ़ा, अहमदाबाद, श्रीमती मोना जी तलेसरा की पावन स्मृति में भेंट।

701/- श्री प्रकाशचन्द जी, मनोहरमल जी, धर्मचन्द जी, दिलीपकुमार जी रांका, पालासनी वाले जोधपुर, अपने पूज्य पिताश्री श्री जवरीलाल जी रांका के दिनाँक 3 मार्च, 2010 को देहावसान हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

700/- श्री सुमतिचन्द जी, सुनील जी, सुरेन्द्र जी, सुधीर जी, संदीप जी डागा, जयपुर, पूज्य पिताश्री स्व. श्री कैलाशचन्द जी डागा की द्वितीय पुण्यस्मृति दिनांक 26.4.2010 के उपलक्ष्य में भेंट।

600/- श्री अरविन्द जी कोठारी, भीलवाड़ा, सुश्राविका श्रीमती सौभाग्यदेवी जी सुपुत्री स्व. श्री नाथूसिंह जी मेहता (जरी किनारी वाले) का देवलोकगमन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

501/- श्री हरीशचन्द जी जैन (चौधरी), मौजपुर-अलवर, अपने सुपुत्र चि. प्रवीण जी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री प्रकाश जी बुबकिया, मुम्बई, सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया में मैनेजर पद से दिनांक 31 मार्च, 2010 को सेवानिवृत्त होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्रीमती दुर्गादेवी-नारायणलाल जी चौपड़ा, जोधपुर, अपने सुपुत्र चि. गजेन्द्र (सुपौत्र

स्व. श्री रावतमल जी चौपड़ा)संग सौ.का. सुनीता का शुभ विवाह दिनाँक 18 जनवरी, 2010 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

501/- श्री भंवरलाल जी भण्डारी, दिल्ली, चि. हेमन्त भण्डारी, मुम्बई (सुपुत्री सुशीला-भंवरलाल जी भण्डारी) का शुभविवाह डॉ. शशि (सुपुत्री श्रीमती मीना-डॉ. सुरेश अग्रवाल-मुम्बई) के साथ 16 फरवरी को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

500/- श्री प्रभुचन्द सा अबानी सुपुत्र स्व. श्रीचंचलचन्द सा अबानी, जोधपुर, आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 72 वें जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री कपूरचन्द जी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर, चि. प्रशान्त कुमार सुपुत्र डॉ. राजेन्द्र कुमार जी जैन के जन्म दिवस दिनांक 02 मार्च, 2010 के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री बुधमल जी, पदमचन्द जी, चैनराज जी, भृगेश जी खींवसरा, अहमदाबाद आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के होली चातुर्मास पर बाड़मेर में दर्शन, वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती सुशीला जी धर्मपत्नी श्री मदनमल जी खिंवसरा, जोधपुर, आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 72 वें जन्म-दिवस के अवसर पर 8 मार्च को साध्वीप्रमुखा के मुखारविन्द से स्वयं द्वारा तथा अपनी सुपुत्री सोनू जी मेहता द्वारा आजीवन शीलव्रत के नियम ग्रहण करने की खुशी में।

500/- श्री हुकमीचन्द जी, प्रकाशचन्द जी मेहता, अहमदाबाद, आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के होली चातुर्मास पर बाड़मेर में दर्शन, वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री गुलाबचन्द जी चौरड़िया, मदनगंज-किशनगढ़, अपनी सुपौत्री सौ.कां. खुशबू जी सुपुत्री श्रीमती सरोज जी विमलचन्द जी का शुभविवाह चि. भरत जी के संग दिनांक 07 फरवरी, 2010 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री राजूलाल जी जैन (श्यामपुरा वाले), सवाईमाधोपुर, अपनी मुमुक्षु सुपौत्री सुश्री समता जी जैन की भागवती दीक्षा दिनांक 15 मई 2010 को बालोतरा में खुलने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री ललित कुमार जी, अर्पित जी, नरेन्द्र जी, अंकुश जी भण्डारी, जलगाँव, पूज्य माता जी व दादी जी श्रीमती माँगीबाई जी धर्मपत्नी श्री मिलापचन्द जी भण्डारी (कुचेरा) के 68 दिवसीय दीर्घ संथारे की स्मृति में भेंट।

500/- श्री दिलीप जी जैन, दिल्ली, श्री हर्ष एवं सेजल के विवाहोपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री महेशकुमार, प्रदीपकुमार, रौनक, प्रफुल्ल, रवि ललवाणी, नागौर, पूज्य पिताजी श्री भैरूमल जी ललवाणी के दिनांक 21 मार्च, 2010 को देहावसान हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री नरेशकुमार, ज्ञानचन्द जी मेहर, श्योपुर (मध्यप्रदेश), अपनी माताजी स्व. श्रीमती घेवरबाई धर्मपत्नी स्व. श्री सुरजमल जी की पावन स्मृति में भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल हेतु साभार प्राप्ति-स्वीकार

2000/- श्रीमती सोहनी देवी जी धर्मसहायिका श्री अजयराज जी समदडिया, चेन्नई, की ओर से सप्रेम भेंट।

मंडल से प्रकाशित सत्साहित्य हेतु साभार प्राप्ति-स्वीकार

50000/- मैसर्स छत्रछाया फाउण्डेशन, जोधपुर, मंडल से नूतन साहित्य दशवैकालिकसूत्र हिन्दी संस्करण के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ हेतु साभार प्राप्ति-स्वीकार

2100/- श्रीमती रतनदेवी जी पन्नालाल जी बोकाड़िया एवं श्री सुमनचन्दजी, संजय जी, शैलेष जी बोकाड़िया पारिवारिजक जन, इन्दौर, श्री पन्नालाल जी बोकाड़िया की पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, जोधपुर, साहित्य अनुदान हेतु भेंट।

2000/- श्री जौहरीमल जी छाजेड़, जोधपुर, की तरफ से भेंट।

1000/- श्री सुनीलकुमार जी प्रकाशचन्द जी बाफना, मुम्बई, अपने पूज्य पिताजी श्री शंकरलाल जी बाफना के देहावसान पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री ज्ञानराज अबानी सेवा ट्रस्ट, जोधपुर।

स्वाध्याय संघ शाखा बजरिया को प्राप्त साभार

501/- श्री लडडूलाल जी हरकचन्द जी जैन 'चौरू वाले', आवासन मंडल-सवाईमाधोपुर, अपने सुपुत्र चि. मुकेश कुमार के शुभ विवाह में सप्रेम भेंट।

501/- श्री लडडूलाल जी, रतनलाल जी जैन, कुशतला, अपने सुपुत्र चि. राजेश के शुभ विवाहोपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री हरकचन्द जी कैलाशचन्द जी जैन, पचाला-जिला टोंक, अपने सुपुत्र श्री धर्मेन्द्र का शुभविवाह दिनाँक-06 फरवरी, 2010 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

500/- श्री सूरजमल जी, लडडूलाल जी 'बगावदा वाले', आवासन मंडल-सवाईमाधोपुर, अपने सुपुत्र चि. अभिनव का शुभविवाह सौ. का. टीना सुपुत्री श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन के संग होने के उपलक्ष्य में भेंट।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर को साभार प्राप्ति-स्वीकार

21000/- श्रीमान केवलमल जी लोढ़ा, जयपुर, अपनी सुपौत्री मनाली (सुपुत्री श्रीमती चन्द्रकान्ता जी-प्रमोद जी लोढ़ा) के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

2,00,000/- श्री राजीव जी, नीता जी डागा, जयपुर, की तरफ से भेंट।

1,20,000/- श्री सुनील जी ललवानी, चिंतादरीपेट-चेन्नई, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का शताब्दी वर्ष अध्यात्म चेतना वर्ष के रूप में मनाये जाने के उपलक्ष्य में।

1,20,000/- श्री चंचलराजजी, विकासजी विनायकिया मेहता, 'जोधपुर वाले' अहमदाबाद, अपने दादा स्व. श्री गणेशमलजी एवं दादीसा स्व. श्रीमती गुमानकंवरजी की स्मृति में।

24,000/- श्री राधेश्याम जी, पदमचन्द जी जैन 'गोटेवाले', सवाईमाधोपुर, की ओर से भेंट।

24,000/- श्री राजेश जी बोहरा, चेन्नई, की ओर से भेंट।

12,000/- श्री महावीर जी भण्डारी, चेन्नई, की ओर से भेंट।

12,000/-	श्री महावीरचन्द जी जैन, गुडियातम, की ओर से भेंट।
12,000/-	श्री ऋषभकुमार जी जैन, गुडीयातम, की ओर से भेंट।
12,000/-	श्री शीतलप्रसाद जी, राहुल जी जैन, हिण्डौन सिटी, की ओर से भेंट।
12,000/-	श्री अमरचन्द जी सांड, विजयनगर-राजस्थान, की ओर से भेंट।
12,000/-	श्री कल्याणमल कनकमल चोरडिया ट्रस्ट, साहूकारपेट-चेन्नई, की ओर से भेंट।
12,000/-	श्री चेनकंवर कनकमल चोरडिया ट्रस्ट, साहूकारपेट-चेन्नई, की ओर से भेंट।
12,000/-	श्री उमरावमल जी श्रीपालमल जी सुराना, साहूकारपेट-चेन्नई, की ओर से भेंट।
12,000/-	श्री राजू जी, श्री मांगीलाल जी गांधी, बांद्रा (महा.), की ओर से भेंट।
12,000/-	श्री रिखबचन्द जी सिंघवी, जोधपुर, की ओर से भेंट।
12,000/-	श्रीमती उमराव कंवर जी, श्री महेन्द्र जी, नरेन्द्र जी, देवेन्द्र जी, शैलेन्द्र जी भण्डारी, जोधपुर, स्व. श्री गणपतमल सा भण्डारी की स्मृति में भेंट।
12,000/-	श्रीमती पुष्पा जी धर्मपत्नी श्री मदनचन्द जी कांकरिया, 'भोपालगढ़ वाले' कांकरिया बिल्डिंग, जोधपुर, आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 90 वीं दीक्षा जयन्ती एवं शासन प्रभाविका श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के सम्मुख शीलव्रत अंगीकार करने की खुशी में भेंट।
12,000/-	श्री नरेन्द्र कुमार जी मेहता सुपुत्र श्री कंवलराज जी मेहता, जोधपुर, अपने दादा स्व. श्री पारसमल जी एवं स्व. श्री गणेशमल जी की स्मृति में भेंट।
12,000/-	श्रीमती ज्योति जी विजयाकुमारी जी गादिया, भुसावल (महा.), पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म-शताब्दी के उपलक्ष्य में भेंट।
12,000/-	श्री रतनराज जी चौधरी, चेन्नई, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म-शताब्दी के उपलक्ष्य में भेंट।
12,000/-	श्री जवाहरलाल जी लपचन्द जी मेहता, (गुलेजगढ़वाले) महाराष्ट्र, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म-शताब्दी के उपलक्ष्य में भेंट।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***श्री अशोक जी कवाड़,*** 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

प्र. वैशाख शुक्ला 8 गुरुवार	22.04.2010	अष्टमी
प्र. वैशाख शुक्ला 14 मंगलवार	27.04.2010	चतुर्दशी
प्र. वैशाख शुक्ला 15 बुधवार	28.04.2010	पक्खी
द्वि. वैशाख कृष्ण 8 गुरुवार	06.05.2010	अष्टमी
द्वि. वैशाख कृष्ण 14 गुरुवार	13.05.2010	चतुर्दशी, पक्खी
द्वि. वैशाख शुक्ला 3 रविवार	16.05.2010	अक्षय तृतीया, आचार्य पद दिवस (81वां)
द्वि. वैशाख शुक्ला 8 शुक्रवार	21.05.2010	आ. हस्ती की 19वीं पुण्य तिथि
द्वि. वैशाख शुक्ला 9 शनिवार	22.05.2010	उपाध्याय पद (20वां)

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

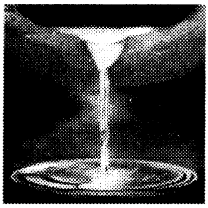

Electric Arc Furnace

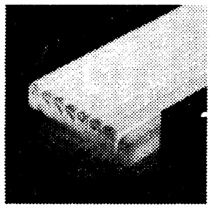

Billets

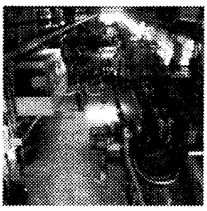

Rolling Mil

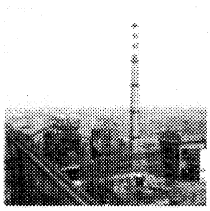

Captive Power Plant

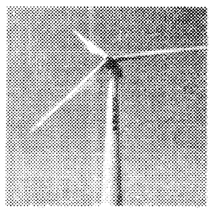

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/

Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL | POWER | MINING

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

NO. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेघावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

ज्ञान का एक दीया ज़लाईये,
सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बन्धुवर,

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रु. 12000/- के गुणक में दान राशि ''Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund'' योजना के नाम चैक/ड्राफ्ट (Donation to Gajendra Nidhi are exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें -

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (09381041097)
2. बुधमल बोहरा, चैन्नई (09444235065)
3. राजकुमार गोलेच्छा, पाली (09829020742)
4. मनोज कांकरिया, जोधपुर (09414563597)
5. कुशलचन्द गोटेवाला, सवाई माधोपुर (09460441570)
6. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (09821055932)
7. जितेन्द्र डागा, जयपुर (09829011589)
8. महेन्द्र बाफना, जलगांव (09422773411)
9. हरीश कवाड़, चैन्नई (09500114455)

सहयोग राशि भेजने, योजना सम्बन्धी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें -

B. Budhmal Bohra
No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) • Tel. 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 4 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अप्रेल, 2010 ★ चैत्र, 2067

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU
GARDENS

Offering 2 BHK and E3 Homes apartment with state-of-the-art amenities include a clubhouse with a well equipped gymnasium, swimming pool, squash and badminton court, landscaped gardens, a children's play area and multi-level car parking.

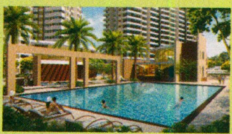

Other Projects:
• Kalpataru Aura - Ghatkopar (W) • Kalpataru Towers, Kandivali (E)
• Kalpataru Riverside, Panvel • Kalpataru Hills, Thane (E) • Srishti, Mira Road

KALPA-TARU®

Site: Kalpataru Gardens, Off Ashok Chakravarty Road, Near Jain Temple, Kandivali (East), Mumbai - 400 101. **Tel.: 022-2887 2914**
H.O.: Kalpataru Limited, 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055. **Tel.: 022-3064 3065 / 3064 5000** or Fax: 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com or visit www.kalpataru.com

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।